ए.बी. वाज़ेखो के स्पानी नाटक 'दीआलोगो सेक्रेतो' का हिंदी अनुवाद और संबंधित समस्याएँ

(TRANSLATION OF VALLEJO'S SPANISH DRAMA' DIÁLOGO SECRETO' AND IT'S PROBLEM RELATED STUDY)

(एम.फ़िल उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध)

शोध निर्देशक
डॉ. रणजीत कुमार साहा

शोध अध्येता
सोनिया

भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली- 11067

2011

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
Centre of Indian Languages
School of Language, Literature & Culture Studies
NEW DELHI-110067, INDIA

Dated: 21/7/11

DECLARATION

I declared that the work done in this Thesis/Dissertation entitled "A.B.VALLEJO KE SPANI NATAK 'DIÁLOGO SECRETO' KA HINDI MEIN ANUVAD AUR SAMBANDHIT SAMASYAYEN", TRANSLATION OF VALLEJO'S SPANISH DRAMA 'DIÁLOGO SECRETO' AND IT'S PROBLEM-RELATED STUDY" by me is an original work and has not been previously submitted for any other degree or any other University/Institution.

Sonia
(Research Scholar)

Dr.Ranjit Kumar Saha
(Supervisor)
Centre of Indian Language
School of Language, Literature &
Cultural Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-11067

Prof. K. Nachimuthu
(Chairperson)
Centre of Indian Language
School of Language, Literature &
Cultural Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

GRAM : JAYENU, Tel.: (91-011) 26741557, 26742676 Extn. : 4217, (D) 26704217 Fax : (91-011) 26717603, 2671758

अपने पूज्य पिता

(स्व.) ईश्वर सिंह जी

को

सादर समर्पित

(अपने असामयिक निधन के कारण जो इस लघु शोध प्रबंध को देखकर अपना आशीष दे न पाए।)

–सोनिया

आभार

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में स्पेनी गृह युद्ध पर आधारित साहित्य लिखने में अग्रणी स्पेनी नाटककार आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो के नाटक 'दीआलोगो सेक्रेतो' का हिन्दी अनुवाद प्रस्तावित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने के दौरान आई समस्याओं में मेरा मार्गदर्शन और सहायता करने के लिए सर्वप्रथम, मैं अपने शोध निदेशक डॉ. रणजीत कुमार साहा जी का धन्यवाद करना चाहूँगी। जिनके सहयोग के बिना प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को अंतिम रूप देना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन था।

किसी कृति का अनुवाद करना असंभव को संभव बनाने जैसा होता है। इस राह में अनुवादक से जितनी अपेक्षाएँ की जाती हैं उससे भी ज़्यादा आवश्यक होता है उसका हौसला बढ़ाना और जब इस राह में अपनों का प्यार, सहयोगियों का साथ और दोस्तों का हाथ और बड़ों का आशीर्वाद मिल जाए तो हर मुश्किल राह आसान हो जाती है। इसलिए मैं अपने प्रेरणा स्रोत मेरे माता-पिता का धन्यवाद करना चाहूँगी जिन्होंने मुझे इस मुक़ाम तक पहुँचाया और अपना पूर्ण सहयोग दिया। मैं अपने चाचा-चाची, दीदी, जीजाजी, भइया-भाभी को भी धन्यवाद करना चाहूँगी जिनकी उम्मीदों पर आज मैं खरी उतरने में सफल रही हूँ। मैं यश, अक्षय, मयंक, यशिका, मयंक, स्नेहा, हर्ष, इशांत और समर की उस मीठी मुस्कान और शरारतों का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ, जिन्होंने मेरी समस्याओं को सरल कर दिया। मैं अपनी छोटी बहन और सहपाठी मनीषा का भी धन्यवाद करना चाहूँगी जिसने हर मुश्किल घड़ी में मेरा साथ दिया। मैं अंकल रवि बजाज का भी धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने हर समय मुझे सही राह दिखायी।

अपने परिवार के बाद मैं शालिनी, कुणाल किशोर भारती, मुराद अहमद ख़ान, ऋषि और रंजीवा का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ जिन्होंने इस शोध को सफल बनाने में मेरी मदद की। मैं लवी श्रीवास्तव का भी धन्यवाद करना चाहती हूँ जिनके सुझावों से मैं कुछ नया कर पाने में सफल रही।

मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र को भी धन्यवाद देना चाहूँगी जिसकी सहायता से मैं हिन्दी में निपुणता हासिल कर पायी। इसके अतिरिक्त भारतीय भाषा केन्द्र के सभी अध्यापकों, कर्मचारियों और अपने सहपाठियों को भी मैं धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने समय-समय पर सूचना और सहायता के द्वारा मेरी सहायता की और इस लघु शोध प्रबंध को पूर्ण करने में मुझे अपना सहयोग दिया।

मैं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, साहित्य अकादेमी, स्पानी दूतावास और इंसतितूतो सेरवांतेस के पुस्तकालय और कर्मचारियों का भी धन्यवाद करना चाहूँगी, जिन्होंने समय -समय पर मुझे अपना कीमती समय और सहयोग दिया।

अनुक्रम

आभार

भूमिका 1-4

पहला अध्याय 5-21

1.1 आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो का जीवन और साहित्यिक परिचय 6-12

1.2 दीआलोगो सेक्रेतो की कथावस्तु 12-17

1.3 दीआलोगो सेक्रेतो के हिन्दी अनुवाद 'कूट संवाद' की समस्याएँ 17-21

दूसरा अध्याय 22-138

दीओलोगो सेक्रेतो का 'कूट संवाद' शीर्षक से हिन्दी अनुवाद

2.1 दृश्य 23

2.2 पहला अंक 24-85

2.3 दूसरा अंक 86-138

तीसरा अध्याय 139-151

'कूट संवाद' के अनुवाद में आने वाली समस्याएँ

3.1 अनुवाद में आने वाली समस्याएँ 141

3.1.1 सामाजिक-सांस्कृतिक एवं मिथकीय समस्याएँ 141-144

3.1.2 भाषागत समस्याएँ 145-151

3.1.3 शीर्षक संबंधी समस्या 151

उपसंहार 152-153

परिशिष्ट 154-155

आधार ग्रंथ 156

संदर्भ ग्रंथ 156-159

भूमिका

अनुवाद एक संवाद है। दो संस्कृतियों और विषम संस्कृतियों के मध्य। आज भूमण्डलीकरण के युग में देशों की सीमाएँ समाप्त होती जा रही हैं। विश्व एक छोटा-सा गाँव बनकर रह गया है। हर देश में अनुवाद को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। भारत में, प्रारम्भ में अनुवाद का क्षेत्र कुछ प्रमुख भाषाओं तक ही सीमित था। परन्तु अब स्थितियाँ वैसी नहीं रहीं। अब विदेशी भाषाओं से अनुवाद को पर्याप्त महत्त्व दिया जाने लगा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध अध्येता ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्पानी भाषा का विधिवत् कोर्स किया था। प्रस्तुत नाटक के चयन में दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त 'एडवान्स डिप्लोमा इन स्पेनिश लैंग्वेज' की उपाधि ने प्रस्तुत शोध अध्येता के लिए आधार का काम किया है। उक्त पाठ्यक्रम के दौरान स्पानी भाषा के साहित्य, संस्कृति और उससे संबद्ध देशकाल का परिचय और स्पानी साहित्य के निकट जाने का अवसर मिला। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय में एम.फ़िल. उपाधि के अनुवाद पाठ्यक्रम के लिए इस विषय "आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो के स्पेनी नाटक 'दीआलोगो सेक्रेतो' का हिन्दी अनुवाद और संबंधित समस्याएँ" का चयन किया गया है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। आज विदेशी भाषा से अनूदित साहित्य के माध्यम से हम दूसरे देश की संस्कृति और साहित्य से परिचित हो सकते हैं। दूसरी ओर, अपने साहित्य को समृद्ध कर सकते हैं। कहना न होगा, हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की अहम् भूमिका है। फिर चाहे वह अनुवाद विविध भारतीय भाषाओं से हुआ हो या विदेशी भाषाओं से। हिंदी में गद्य साहित्य का आरम्भ अनुवाद के माध्यम से ही हुआ। हिंदी में विभिन्न भाषाओं से अनूदित साहित्य ने हिंदी साहित्य को निरंतर समृद्ध किया है।

आज अंग्रेज़ी विश्व की सबसे विकसित भाषा है क्योंकि अंग्रेज़ी में विश्व की समस्त महत्त्वपूर्ण सामग्री का अनुवाद मिलता है। इसके बावजूद अन्य विदेशी भाषाओं से भी हिंदी में अनुवाद किया जा रहा है। जिसमें स्पानी भाषा साहित्य से अनूदित साहित्य का

महत्त्वपूर्ण स्थान है। दिन-प्रतिदिन स्पानी भाषा साहित्य का हिंदी में अनुवाद हो रहा है। सर्वप्रथम, स्पानी भाषा साहित्य से सन् 1887 में बिपिन बिहारी चक्रबर्ती द्वारा मिगेल दे सेरवांतेस के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'दोन कीखोते दे ला मांचा' का बाङला में अनुवाद किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण कृतियों का भी स्पानी से हिन्दी में अनुवाद किया गया। जैसे– गाब्रिएल गार्सिया मार्केज़ का 'एकांत के सौ वर्ष', पाब्लो नेरूदा की प्रेम-कविताएँ, पेद्रो काल्देरान दे ला बार्का का 'सालामेआ का सरपंच', कामीयो ख़ोसे सेला का 'पासकुआल दुआर्ते का परिवार', 'लासारो', खासिंतो बेनावेंते के 'तीन स्पेनी नाटक', खावियर मारीयास का 'ऑक्सफोर्ड के प्राणी', एर्नेस्तो साबातो का 'सुरंग' इत्यादि।

भारतीय संस्कृति को स्पानी संस्कृति से रु-ब-रु होने का पहला अवसर एनी बेसेंट के माध्यम से बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मिला जब उन्होंने 'भगवतगीता' का स्पानी अनुवाद करवाया। इसके अतिरिक्त योगेंद्र शर्मा ने भी प्रेमचंद की कुछ कहानियों का स्पानी अनुवाद किया है। नोबेल पुरस्कार विजेता ओक्तावियो पास ने अपनी पुस्तकों के द्वारा स्पानी पाठकों को भारत और भारतीय संस्कृति से परिचित कराया। इस परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट है कि अनुवादक की भूमिका हमेशा ही विशेष होती है जो एक पुल का निर्माण करता है– दो संस्कृतियों को जोड़ने के लिए।

अगर भारतीय परिदृश्य की बात करें तो समाज और राजनीति में फैली बुराइयों से सभी परिचित है। समाज में आए दिन होने वाले 'ऑनर किलिंग' के मामले, बलात्कार और राजनीति में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, सत्ता का पूरा फ़ायदा उठाना, सत्ता-विरोधियों पर लाठीचार्ज़ करना इत्यादि वे ज्वलंत मुद्दे हैं जिनसे कोई अछूता नहीं है। स्थिति पहले भी नहीं बदली थी और आज बद से बदतर होती जा रही है। ऐसे समय में इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से यह प्रयास किया जा रहा है कि पाठक वर्ग को स्पानी गृह युद्ध की परिस्थितियों से परिचित कराया जाए जहाँ परिस्थितियाँ इससे कम बदतर नहीं थीं। प्रतिबंधों के उस दौर में जागरूक लेखकों की आवश्यकता थी जो अपने लेखन के माध्यम से पाठक की संवेदना को झकझोरे। स्पेनी गृहयुद्ध के साहित्य को पढ़कर यह ज्ञात किया

जा सकता है कि ऐसे समय में एक लेखक की संवेदना क्या काम करती है और किन-किन सवालों से जूझती है।

'दीआलोगो सेक्रेतो' के माध्यम से नाटककार आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो ने स्पेन के तत्कालीन समाज और राजनीति की आलोचना की है और अयोग्य सत्ताधारियों, अधिकारियों और राजपुरुषों का पर्दाफ़ाश किया है। ज़ाहिर है, ऐसी परिस्थितियों से भारतीय राजनीति और समाज अछूता नहीं रहा है इसलिए भारतीय पाठक भी इन परिस्थितियों को बख़ूबी समझ सकता है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के माध्यम से स्पेनी परिप्रेक्ष्य में इन परिस्थितियों को दिखाने का प्रयास किया गया है।

गृहयुद्ध के दौरान सत्ताधारियों द्वारा वाज़ेखो के पिता की हत्या और वाज़ेखो को दी गई फाँसी की सज़ा का इनके नाटककार बनने में बड़ा योगदान रहा है। गृहयुद्ध के दौरान जिन परिस्थितियों का जनता को सामना करना पड़ा वह भी बख़ूबी सामने आती हैं। जेल में क़ैदियों पर होनेवाले अत्याचारों का पता चलता है। चेहरे के पीछे छिपे असली चेहरे सामने आते हैं। गास्पार ही एकमात्र पात्र है जिसके माध्यम से वाज़ेखो के विचारों को आवाज़ मिली है।

नाटक में चित्रित स्पानी परिवार आधुनिक उच्च-मध्यवर्ग का प्रतिनिधि है जो स्पानी भौगोलिक सीमाओं में न सिमटकर किसी देश के आधुनिक उच्च-मध्यवर्गीय परिवार का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

विश्व की कई भाषाओं में वाज़ेखो के नाटकों के अनुवाद हुए है। परन्तु अभी तक किसी भारतीय भाषा में इनके नाटकों के अनुवाद नहीं हुए है। इस नाटक को पढ़ते हुए प्रस्तुत शोध अध्येता के मन में यह इच्छा हुई कि स्पेनी गृहयुद्ध के समय के साहित्य का एक नमूना भारतीय जिज्ञासु पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए जो अपने समय के महत्त्वपूर्ण नाटकों में से एक है। ज़ाहिर है नाटक का अनुवाद करते समय हमेशा रंग-संकेत और दर्शक-वर्ग को ध्यान में रखना पड़ता है। बूएरो वाज़ेखो ने प्रकाश और अंधेरे के प्रयोगात्मक संयोजन से नाटक की कथावस्तु को स्पष्ट किया है। पात्रों की ऐन्द्रिक अनुभूति

और प्रसंगवश उनमें होनेवाले भावात्मक परिवर्तन को प्रभावी बनाने के लिए रंगमंच के पीछे टँगी पेंटिंग, पात्रों की मंच पर स्थिति का अंतराल और पात्र विशेष पर प्रकाश के संयोजन द्वारा नाटककार ने अपने संकेत एवं संदेश को उभारने का प्रयास किया है। वह किसी शौकिया या पेशेवर निर्देशक को यह छूट नहीं देना चाहता कि मंच पर घटित होनेवाली परिस्थितियों और पात्रों की मानसिकता को दिया जानेवाला अवकाश (Space) किसी ज़्यादती या किसी हड़बड़ी का शिकार हो जाए इसलिए वह पात्रों के आने-जाने, उठने-बैठने, रुकने-मुड़ने या फिर मंच से नेपथ्य में चले जाने– हर स्थिति पर अपना नियंत्रण जताता है और इसके लिए पात्रों के संवाद के साथ अपनी निर्देशकीय टिप्पणी करता जाता है।

पहला अध्याय

आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो का जीवन और साहित्यिक परिचय

दीआलोगो सेक्रेतो की कथावस्तु

दीआलोगो सेक्रेतो के हिन्दी अनुवाद 'कूट संवाद' की समस्याएँ

1.1 आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो : जीवन और साहित्यिक परिचय

साहित्य ने जितना समाज के प्रति निष्ठा का परिचय दिया है उतना ही साहित्य ने अपने समय में होनेवाली बुराइयों का पुरज़ोर विरोध भी किया है। फिर चाहे वे बुराइयाँ रूढ़िगत रीति-रिवाज़ों से अटी पड़ी हो या तानाशाही कुकृत्यों की मिसाल हो। एक सच्चे साहित्यकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी समकालीन परिस्थितियों के प्रति उदासीन न हो। इसी प्रकार स्पेनी साहित्य के कालजयी नाटककार आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो (Antonio Buero Vallejo) ने भी अपनी समकालीन परिस्थितियों को अपने नाटकों में अप्रत्यक्ष रूप से दिखाया है।

आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो का जन्म सन् 29 सितम्बर, 1916 को स्पेन के ग्वादालाखारा (Guadalajara) प्रांत में हुआ था। इनके माता-पिता का नाम दोन्या मारीया क्रूस वाज़ेखो (Doña Cruz Vallejo) और दोन फ्रांसिस्को बूएरो वाज़ेखो (Don Francisco Buero Vallejo) था। इनके पिता आर्मी में इंजीनियर थे। साहित्य और थियेटर में इनका रूझान इनके पैतृक पुस्तकालय से ही हुआ। बचपन, किशोरावस्था और जवानी के दौरान छुट्टियों में पेंटिंग करना इनका शौक रहा है। सन् 1926 में इनकी स्कूली शिक्षा आरंभ हुई। शुरू से ही इन्हें दूमास, ह्यूगो, शेक्सपियर, बर्नार्ड शॉ, गाल्दोस और '98 की पीढ़ी' (Generación de 98) के लेखकों और नाटकों को पढ़ना आरम्भ किया। सन् 1930 में इनका रूझान राजनीति की ओर हो गया। स्कूली शिक्षा ख़त्म कर सन् 1934 में इन्होंने सान फेरनान्दो (San Fernando) के एस्कूएला दे बेयास आरतेस (Escuela de Bellas Artes) में दाख़िला लिया। इसी दौरान इनका परिवार मैड्रिड चला गया, जहाँ इनका ध्यान '98 की पीढ़ी' के लेखकों पर केंद्रित हो गया।

सन् 1936 में पेंटिंग के प्रति रुचि का ही परिणाम हुआ कि इन्होंने सान बेरनारदो विश्वविद्यालय (Universidad de San Bernardo) में पेंटिंग की सांध्य कक्षाओं में प्रशिक्षण देना आरंभ किया। इनके पिता और भाई फ्रांसिस्को, जो फ़ौजी थे, को स्पेनी गृहयुद्ध के

दौरान राष्ट्रवादियों द्वारा पकड़ लिया गया। इस हादसे में इनके पिता की मौत हो गई। परिवार के विरोध के बावजूद सन् 1937 में ये फ़ौज में भर्ती हो गए जहाँ इन्हें युवा बटालियन में रखा गया। सन् 1938 में इन्हें आर्मी ऑपरेशन के लिए आरागोन (Aragon) भेजा गया। जहाँ से इन्हें लेवान्ते (Levante) आर्मी में भेजा गया।

सन् 1939 में फ्रांको की जीत के बाद जब ये मैड्रिड पहुँचे तो वहाँ इन्हें क्रांतिकारी सहयोग के कारण राष्ट्रवादियों द्वारा मौत की सज़ा सुनाई गयी। इसी दौरान जेल में इनकी दोस्ती मिगेल हेरनान्देस (Miguel Hernández) से हुई। इन्हें कोन्दे दे तोरेना (Conde de Toreno) जेल में भेजा गया। बाद में सन् 1940 में इसे 30 साल की उम्रक़ैद में तब्दील कर दिया। सन् 1945 में ओकान्या (Ocaña) जेल में ही इन्हें अपना नाटक 'एन ला आरदीएन्ते ओस्कूरीदाद' (En La Ordiente Oscuridad) लिखने का ख़याल आया। सन् 1946 में इन्हें मैड्रिड से निर्वासित किया गया। भरण-पोषण के लिए इन्होंने पेंटिंग शुरू की। इसी साल अगस्त में हफ़्तेभर में ही इन्होंने 'एन ला आरदीएन्ते ओस्कूरीदाद' लिखा। सन् 1947 में फ्रांको (Francisco Franco) सरकार द्वारा इन्हें माफ़ कर दिया गया और मैड्रिड आने की अनुमति दी गई। इसी साल इन्होंने अपना पहला प्रकाशित प्रसिद्ध नाटक 'हीस्तोरिया दे उना एस्कालेरा' (Historia de una Escalera) लिखा जिससे इन्हें स्पेनी मंच पर प्रसिद्धि दिलाई और बाद में 'लोपे दे वेगा'(Lope de Vega) पुरस्कार। इस नाटक की प्रसिद्धि का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि सन् 1950 में इस पर फ़िल्म भी बनायी गयी।

सन् 1958 में वाज़ेखो का पहला निबंध-संग्रह 'ला त्राखेदिया' (La Tragedia) प्रकाशित हुआ, जिसे वाज़ेखो के आदर्शात्मक विचारों का संग्रह कहा गया। सन् 1950 में इन्होंने विक्तोरिया रोद्रीगेज़ (Victoria Rodriguez) से शादी की जिसने इनके नाटक 'ओई एस फिएस्ता' (Hoy es Fiesta) में दानिएला (Daniela) की भूमिका निभायी। विक्तोरिया से इन्हें दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। सन् 1961 में इन्होंने विलियम शेक्सपियर के 'हेमलेट' का स्पानी में अनुवाद किया।

सन् 1963 में इन्हें स्पेन से बाहर जाने की अनुमति मिल गयी। इसी साल इनकी माँ की मृत्यु हो गयी जो इनके लिए अत्यधिक दुःखदायी थी। सन् 1968 में 'हीस्तोरिया दे उना एस्कालेरा' का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ। सन् 1970 में वाज़ेखो संगोष्ठी के लिए अमेरिका गए। सन् 1971 में इन्हें 'ला रेआल आकादेमीया एस्पान्योला' (La Real Academia Española) में सर्वसम्मति से सदस्य चुना गया। सन् 1972 इन्होंने 'ला रेआल आकादेमीया' में फेदेरीको गार्सीया लोरका (Federico Garcia Lorca) पर भाषण दिया। इनके अंतिम नाटक 'उन सोन्यादोर पारा उन पूएब्लो' (Un Soñador Para Un Pueblo,1999) पर भी फ़िल्म बनाई गई है। वाज़ेखो अपने जीवन के अंतिम दिनों तक लिखते रहे। बीमारी के चलते 29 अप्रैल, 2000 में इनकी और बाद में इनकी पत्नी की मौत हो गई।

वाज़ेखो के कुछ प्रसिद्ध नाटकों के नाम इस प्रकार है– 'हीस्तोरिया दे उना एस्कालेरा' (Historia de Una Escalera, 1949), 'एल आरदीएन्ते ओस्कूरीदाद' (El Ardiente Oscuridad, 1950), 'लास मेमीनास'(Las Meminas, 1960), 'एल कोन्सिएरतो दे सान ओवीदीओ' (El Concierto de San Ovidio, 1962), 'आवेन्तूरा एन एल ग्रीस'(Aventura un el Gris, 1963), 'एल त्रागालूस' (El Tragaluz, 1967), 'ला दोब्ले हीस्तोरीया देल दोक्तोर वाल्मी'(La Doble Historia del doctor Valmy, 1968), 'दीआलोगो सेक्रेतो'(Diálogo Secreto, 1984), 'उन सोन्यादोर पारा उन पूएब्लो' (Un Sonador para un Pueblo, 1999)। वाज़ेखो नाटककार होने के साथ एक विशिष्ट अनुवादक भी हैं जिन्होंने कई महत्त्वपूर्ण कृतियों का स्पानी भाषा में अनुवाद किया है। जैसे– विलियम शेक्सपीयर लिखित 'हेमलेट' (1961), बर्तोल्ट ब्रेख्त लिखित (Bertolt Brecht) 'मात्रे कोराखे' (Madre Coraje) (1966) और इब्सन (Ibsen) का 'एल पातो सीलवेस्त्रे'(El pato Silvestre, 1982)। कई विदेशी भाषाओं में इनकी कृतियों का सफल अनुवाद किया जा चुका है।

अपने साहित्यिक जीवन के दौरान इन्होंने जो योगदान स्पेनी साहित्य को दिया, उसके नाते, इनको कई पुरस्कार दिए गए जिनमें से कुछ इस प्रकार है : 'हीस्तोरिया दे उना एस्कालेरा' के लिए 'लोपे दे वेगा पुरस्कार' (1949), 'लास पालाब्रास एन ला आरेना' के

लिए 'ला आसोसीआसीओन दे आमीगोस दे लोस कीतेरो पुरस्कार' (La Asociación de Amigos de los Quintero, 1949), 'मारीया रोयान्ड पुरस्कार' (María Rolland, 1956), 'नासीओनाल दे तेआत्रो पुरस्कार' (Nacional de Teatro , 1956), 'लारा दे ला रेविस्ता, प्रथम अंक पुरस्कार' (Lara de la Revista, Primer acto, 1962), 'एल एसपेक्तोर इ ला क्रीतिका पुरस्कार'(El Espectador y la Crítica, 1970), 'सेरवान्तेस पुरस्कार' (Cervantes, 1986)। सन् 1994 में इन्हें 'लास बेयास आर्तेस' (Las Bellas Artes) और 'ला सोसीएदाद सेन्त्राल दे आउतोरेस दे एस्पान्या'(La Sociedad Central de autores de España) की ओर से गोल्ड मेडल प्रदान किया गया।

बूएरो स्पेनी गृहयुद्ध (सन् 1936-39) के दौर के सबसे महत्त्वपूर्ण नाटककार है। इनके नाटकों की पूरी पृष्ठभूमि स्पेनी युद्ध और उसके दौरान किए गए अत्याचारों सत्ताधारियों की मनमानी और समाज की दुर्दशा के इर्द-गिर्द घूमती है। जिस समय वाज़ेखो ने लिखना आरम्भ किया उस समय जनता गृहयुद्ध के बाद आनेवाली कठिनाइयों का सामना नहीं करना चाहती थी। यही हाल समकालीन रंगमंच का था जो समसामयिक समस्याओं से रू-ब-रू कराने की बजाय उसे सच्चाई से दूर ले जा रहे थे। इस समय जिन लोगों ने फ्रांको सरकार की भर्त्सना की या तो उन्हें जेलों ने बंद कर दिया गया या देशनिकाला दे दिया गया या फिर लोरका की तरह उनकी हत्या कर दी गई। यहाँ तक कि किसी को भी चर्च की आलोचना तक करने का अधिकार नहीं था। प्रेस पर भी सरकार का अधिकार था इसलिए सरकार विरोधी अख़बार, किताबें सब प्रतिबंधित कर दिये जाते थे।

इस कठिन दौर में उन लोगों की आवश्यकता थी जो सच को सबके सामने लाए, जो अस्तित्ववाद की समस्याओं पर बात करे और इस समय यह काम वाज़ेखो ने किया। वाज़ेखो के नाटक सच्चाई से भागते नहीं बल्कि सच्चाई को सबके सामने लाते है। वाज़ेखो यथार्थवादी नाटककार है जिन्होंने जीवन की त्रासदी को प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से सबके सामने प्रस्तुत किया। वाज़ेखो के नायकों में पायी जानेवाली शारीरिक कमी जैसे– 'अंधापन' और 'बहरापन' उस विडम्बना के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से वे स्पानी समाज की

आलोचना करते हैं। 'अंधापन' प्रतीक है चरित्र के नैतिक पतन का, कमज़ोरी, अज्ञानता अथवा समस्याओं से परे न देख पाने की कमी का। 'हीस्तोरिया दे उना एस्कालेरा' में वाज़ेखो ने प्रतीक और यथार्थ दोनों का प्रभावी प्रयोग किया है। 'सीढ़ी' प्रतीक है जीवन में बनी रहनेवाली निराशा का। वास्तविक रूप में, जिसमें कोई सुधार नहीं होता। 'एन ला आरदीएंते ओस्कूरीदाद' (1950) में वाज़ेखो ने नायक की मानसिकता और शारीरिक कमी के द्वारा स्पेन की मानसिक स्थिति को दिखाने का प्रयास किया है। नाटक में अंधे छात्रों के एक संस्थान में द्वंद्व को प्रदर्शित किया है जहाँ एक छात्र अपने अंधेपन को स्वीकारने से इंकार करता है। 'ला दोबले हीस्तोरिया दे दोक्तोर वाल्मी' (1968) में यातना, अपराध, कायरता, एकाकीपन और परस्पर संवाद की कमी को दिखाया गया है। 'एल सूएन्यो दे ला रासोन' राजा फेरदीनान्द (Ferdinand) अष्टम् के द्वारा पेंटर फ्रांसिस्को दे गोया (Francisco de Goya) पर किए गए अत्याचारों पर आधारित रचना है। गोया के बहरेपन को दिखाने के लिए वाज़ेखो ने असम्बद्ध संवाद और चिह्नभाषा अथवा नायक से बात करने के लिए संवाद-संकेत दिए है। 'ला फूंदासीओन' में बूएरो ने पहली बार फ्रांको के शासन की समाप्ति के समय स्पेन की स्थिति को दर्शाया है। जहाँ इन्होंने दिखाया है कि आज़ादी को पाने के लिए जेलों से होकर जाना होता है और इस रास्ते में आने वाला हर क़दम ज़रूरी होता है। 'ला देतोनासिओन', 'दीआलोगो सेक्रेतो' (1984), 'खूएसेस एन ला नोचे' (1979), 'काइमान' (Caíman, 1981), 'एल त्रागालूस' (1967) आदि नाटक अधिकारवादी एवं सत्तावादी शासन के सालों बाद गणतंत्र के बनने में आनेवाली समस्याओं से संबंधित है। वाज़ेखो ने पेंटिंग, संगीत और इतिहास के माध्यम से बेहतरीन रंगमंचीय तकनीकों और प्रवाहमयता के द्वारा दर्शकों का नायक से मनोवैज्ञानिक और ऐद्रिक संबंध स्थापित किया है।

रंगमंचीय प्रभाव के लिए बूएरो ने कई प्रकार के रंगमंचीय संकेत दिए है। जैसे 'एन ला आरदीएंते ओस्कूरीदाद' में रात के एक दृश्य में अचानक एक-एक करके तारों का ग़ायब हो जाना और 'एल सूएन्यो दे ला रासोन' में गोया के बहरेपन को दिखाने के लिए परिवार के सदस्यों द्वारा अपने संवादों को ज़ोर से कहने की बजाय धीरे-से कहलवाना।

वाज़ेखो दर्शकों से तारतम्य बनाकर उनकी संवेदना को झकझोरने में विश्वास करते हैं। उनकी ज्ञानेद्रियों को सक्रिय एवं संवेद्य बनाना चाहते है ताकि हम अपनी आँखें खुली रखें और देखें कि हमारे पास क्या असंगत घटित हो रहा है। वे हमें खड़े होकर लड़ने के लिए प्रेरित करते है। 'ओई एस फिएस्ता' के माध्यम से उन्होंने अपने व्यक्तिगत विकास और दूसरों की समस्याओं को समझने पर ज़ोर दिया है। बूएरो चाहते हैं कि हम अपने आने वाले कल के लिए लड़ें। वे समाज में व्यक्ति की सही स्वतंत्रता चाहते है। इसलिए वे व्यक्ति के समाज या किसी भूतकालीन सत्ता या रूढ़ि के अनुरूप चलने को नकारते है। मनुष्य औरों के लिए लड़े और आगे बढ़े। इसलिए उनके नायक समाज की परम्पराओं और रूढ़ियों से लड़ते है। अपनी समकालीन समस्याओं और सच्चाई को दर्शक के सामने लाने के लिए वाज़ेखो अतीत की तहों में जाकर वैसी ही स्थिति को खोजकर सबके सामने लाते है। जैसे 'मीतो'(Mito) नाटक में।

इस सब क्रियाकलाप के बीच बूएरो अपने आशावादी दृष्टिकोण को नहीं छोड़ते। उनके नाटकों में आशा एक ऐसा तत्त्व है जो अंत तक बना रहता है और जो नायक को लड़ने की हिम्मत देता है। लेकिन वाज़ेखो नाटकों में दिखायी जानेवाली समस्याओं का कोई सीधा-सादा हल या समाधान नहीं बताते। उनके अनुसार, समस्याओं का हल देना मुझे पसंद नहीं। यह कोई कमी नहीं, बल्कि सद्‌गुण है। क्योंकि गंभीर समस्याओं का कोई तत्काल हल नहीं होता।

इसी पक्ष के कारण इनके काम को नकारात्मक भी बताया गया लेकिन वाज़ेखो के नाटक दर्शक को सच्चाई से दूर नहीं बल्कि उसके पास ले जाते हैं। इस तरह वाज़ेखो दर्शक को अन्वेक्षण तक ले जाते हैं ताकि वह अपने भविष्य और वर्तमान की दशा को रंगमंच के माध्यम से देख सकें। वे स्वयं मूल्यांकन कर सकें और भविष्य के द्वारा स्वयं को मूल्यांकित होता देख सकें। इन्हीं सब कारणों से वाज़ेखो के नाटकों को प्रतिबंधित किया जाने लगा क्योंकि इनकी प्रतिक्रिया जनता पर दिखाई दे रही थी। इनके नाटकों की प्रसिद्धि का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इनके नाटकों का मंचन उस

समय पूरे स्पेन में होता था। सन् 1960 में 'लास मेमीनास' का लगातार 260 बार मंचन, सन् 1967 में 'एल त्रागालूस' का 500 से अधिक बार मंचन और 'ला दोब्ले हीस्तोरिया देल दोक्तोर वाल्मी' का सन् 1976 तक 600 से अधिक बार सफल मंचन हुआ।

1.2 दीआलोगो सेक्रेतो की कथावस्तु

सुप्रसिद्ध स्पेनी नाटककार आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो (Antonio Buero Vallejo) ने *दीआलोगो सेक्रेतो* नाटक की रचना सन् 1984 में की। इस नाटक में वाज़ेखो ने अपनी समकालीन परिस्थितियों को बख़ूबी दिखाने का प्रयास किया है। इस नाटक में स्पेन के तत्कालीन समाज और राजनीति की आलोचना की गई है। इसमें एक अयोग्य कला आलोचक और पेन्टर फ़ाबियों के माध्यम से तत्कालीन स्पेनी सत्ताधारियों, अधिकारियों और राजपुरुषों का पर्दाफ़ाश किया है।

उक्त नाटक में चित्रित परिवार आधुनिक उच्च मध्यवर्ग की पाखंडपूर्ण मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है। *दीआलोगो सेक्रेतो* दो अंकों में रचित नाटक है। कुल पात्रों की संख्या छह हैं –फ़ाबियो, तेरेसा, आउरोरा, आउरोरीन, ब्राउलियो और गास्पार। दो अन्य पात्र सामूएल कोस्मे और निसेतो हैं जिनका केवल ज़िक्र भर है। कोस्मे एक युवा पेन्टर है जिसके चित्रों की नकारात्मक आलोचना फ़ाबियो करता है क्योंकि वह उसे पसन्द नहीं करता। फ़ाबियो द्वारा एक लेख में कोस्मे के चित्रों की भर्त्सना को कोस्मे बर्दाश्त नहीं कर पाता और वह खुदकुशी कर लेता है। फ़ाबियो यानी प्रस्तुत नाटक का नायक एक वरिष्ठ और सम्मानित कला समीक्षक और पेन्टर है, लेकिन वह वर्णान्ध (Colourblind) है। फ़ाबियो के अनुसार, उसकी वर्णान्धता के बारे में उसके पिता ब्राउलियो के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। फ़ाबियो की पत्नी तेरेसा एक स्कूल में पढ़ाती है। आउरोरा, फ़ाबियो की बड़ी बेटी है तथा युवा पेंटर सामूएल कोस्मे से प्रेम करती है। आउरोरीन छोटी बेटी है, जो एक स्कूल में पढ़ती है और अपने जिज्ञासु सवालों से फ़ाबियो और ब्राउलियो को परेशान करती

रहती है। फ़ाबियो का पिता ब्राउलियो एक बेरोज़गार आदमी है जो फ़ाबियो के घर में ही रहता है। वह कभी-कभी फ़ाबियो के काम में उसकी मदद भी कर देता है। ब्राउलियो जेल भी जा चुका है। अंतिम पात्र है गास्पार– ब्राउलियो का मित्र है और अपनी देशभक्ति के चलते चौबीस साल जेल में रह चुका है। ब्राउलियो और गास्पार की पहली मुलाक़ात जेल में ही हुई थी, जहाँ गास्पार ने उसकी बड़ी मदद की थी।

पहले अंक में फ़ाबियो और ब्राउलियो की बातों से यह पता चलता है कि फ़ाबियो वर्णान्ध (Colourblind) है। वह अपनी इस हालत और कला आलोचक के पद के लिए ब्राउलियो को ज़िम्मेदार ठहराता है। ब्राउलियो फ़ाबियो को समझाता है कि उसने फ़ाबियो से सलाह-मशविरा करने की कोशिश की थी। तभी तेरेसा स्कूल से आ जाती है और ब्राउलियो वहाँ से चला जाता है। तेरेसा और फ़ाबियो आउरोरा की बात करते हैं। थोड़ी देर बाद थकी-माँदी आउरोरा आती है और उन दोनों को बड़ी रुखाई से देखती है। फ़ाबियो और तेरेसा आउरोरा से उसके परेशान होने का कारण पूछते हैं लेकिन वह कुछ नहीं बताती और अपने कमरे में चली जाती है। तेरेसा और फ़ाबियो यही समझते हैं कि आउरोरा और कोस्मे का संबंध टूट गया होगा और इस बात पर खुश होकर दोनों जाम पीते हुए लास इलांदेरास की बात करने लगते हैं। तेरेसा रसोई में चली जाती है। ब्राउलियो परछाई से रोशनी में आ जाता है और फ़ाबियो से बात करने लगता है। तभी आउरोरीन स्कूल से आ जाती है और फ़ाबियो से रंगों और पेंटिंग्स के बारे में बात करती है।

इसी बीच फ़ोन पर फ़ाबियो को पता चलता है कि सामूएल कोस्मे ने खुदकुशी कर ली। फ़ाबियो इसकी सूचना तेरेसा को देता है। आउरोरा चुपचाप इन दोनों की बातें सुन रही होती है। फ़ाबियो और तेरेसा आउरोरा की हिम्मत बँधाते है। लेकिन आउरोरा पिता फ़ाबियो को कोस्मे की मौत के लिए ज़िम्मेदार ठहराती है। तेरेसा आउरोरा को समझाती है। फ़ाबियो कोस्मे की खुदकुशी को एक नाकारा कलाकार की मामूली-सी प्रतिक्रिया बता है। इसी समय ब्राउलियो और गास्पार आ जाते है। जो निसेतो से मिलकर आ रहे हैं।

आउरोरा चुप हो जाती है। आउरोरा उन सबकी बातों से परेशान होकर रोने लगती है। वह ब्राउलियो को बताती है कि कोस्मे ने फ़ाबियो की वजह से खुदकुशी कर ली और मैं पापा के इस गुनाह से पर्दा उठाउगी। तेरेसा, ब्राउलियो और गास्पार आउरोरा की इस बात से सहमत नहीं है। तेरेसा के वहाँ से जाने के बाद फ़ाबियो, ब्राउलियो और गास्पार बैठकर बातें करने लगते हैं। ब्राउलियो दोबारा नज़र आता है और फ़ाबियो से बातें करता है कि कोस्मे ने आउरोरा को फ़ाबियो के बारे में क्या कहा होगा। फ़ाबियो ब्राउलियो को कहता है कि नासमझी का दिखावा मत करो। हम दोनों ही उस वर्णान्धता (Colourblindness) से वाकिफ़ है। वे पालास और आराक्ने पर बहस भी करते हैं। ब्राउलियो अपने कमरे में चला जाता है और फ़ाबियो अपने कमरे में।

कुछ देर बाद पर आउरोरा वहाँ आती है। वह किताबों के ख़ाने में से कला की किताबें देखने लगती है। उसे देख हैरान तेरेसा उससे नाश्ते के लिए पूछती है। लेकिन आउरोरा मना कर देती है और अपने कमरे में चली जाती है। तेरेसा फ़ाबियो को उठाती है लेकिन वह उठता नहीं। तेरेसा भी अपने कमरे में जाकर सो जाती है।

सुबह का दृश्य। आउरोरा फ़ाबियो से पेंटिंग्स को दिखाकर रंगों के बारे में पूछती है। फ़ाबियो सही-सही जवाब देता है क्योंकि वह उन पेंटिंग्स के बारे में अच्छी तरह जानता था। आउरोरा रंगों का एक चार्ट लाकर फ़ाबियो को परखना चाहती है लेकिन फ़ाबियो ऐसा करने से मना कर देता है। आउरोरा उसके मना करने की वजह उसकी 'कलरब्लांइडनेस' बताती है, जिसके बारे में सामूएल कोस्मे ने उसे बताया था। अपनी कामयाबी का बहाना बनाकर फ़ाबियो इस बात को खारिज कर देता है लेकिन आउरोरा सबको यह बात बताने के लिए कहती है। फ़ाबियो आउरोरा को मना करता है क्योंकि इससे तेरेसा को बहुत तकलीफ़ होगी। ब्राउलियो सामने आकर फ़ाबियो को सांत्वना देता है कि आउरोरा तेरेसा को कुछ नहीं बताएगी। फ़ाबियो की आवाज़ सुनकर तेरेसा उठ जाती है और उससे पूछती है कि वह किससे बाते कर रहा था ?

दूसरा दृश्य दोपहर का है, जब ब्राउलियो और फ़ाबियो म्यूज़ियम से आते हैं। तेरेसा उन्हें बताती है कि आज आउरोरा कुछ अजीबोगरीब ढंग से काम कर रही है मानो वह अपना बैग पैक कर रही हो। ब्राउलियो आउरोरा से बात करने के लिए उठता है लेकिन तेरेसा मना कर देती है। वह बताती है कि आजकल गास्पार और आउरोरा अकेले में बातें करते रहते हैं। तेरेसा को इस बारे में गास्पार ने कुछ नहीं बताया। तेरेसा रसोई में चली जाती है। ब्राउलियो फ़ाबियो को आउरोरा से बातें करने कहता है लेकिन वह मना कर देता है और फ़ाबियो चला जाता है। तभी आउरोरीन स्कूल से घर जाती है ओर दूसरी ओर से ब्राउलियो भी आउरोरीन फ़ाबियो से पेंटिंग्स के विषय में बात करती है। बातों-बातों में वह बंद कमरे में अपनी मृत दादी के होने का मज़ाक उड़ाती है।

कमरे में फ़ाबियो अकेला बैठा है। इसी बीच आउरोरा चेहरे पर हरा मेकअप करके आती है। फ़ाबियो उसके चेहरे का रंग नहीं देख पाता क्योंकि वह 'कलरब्लाइंड' है। फ़ाबियो उसे भी बताता है कि वह कोस्मे की मौत का ज़िम्मेदार नहीं। आउरोरा फ़ाबियो को कहती है कि सबूत तो सामने ही है क्योंकि तुम मेरा हरा चेहरा नहीं देख पा रहे हो। फ़ाबियो इस बात को नकारता है। इतने में गास्पार आ जाता है। आउरोरा गास्पार से उसके चेहरे का रंग बताने को कहती है। गास्पार इसे हरी सेब बताता है। फ़ाबियो गास्पार की बात मानने से इंकार करता है। इतने में तेरेसा रसोई से आ जाती है। वह आउरोरा के चेहरे का हरा रंग देखकर हैरान है। आउरोरा तेरेसा को सारी बात बता देती है। तेरेसा इसे मानने से इंकार कर देती है कि ऐसा नहीं हो सकता। मैंने फ़ाबियो से हज़ारों बार रंगों के बारे में बातें की हैं।

आउरोरा अब अपने पिता फ़ाबियो के सच को सबके सामने लाना चाहती है। वह तेरेसा को एक ख़त देती है जो उसने अख़बार में छपवाने के लिए लिखा है। वह फ़ाबियो को सावधान करती है कि अगर परसों तक उसने ऐसा ही ख़त लिखकर पोस्ट नहीं किया तो वह ख़ुद यह ख़त पोस्ट कर देगी। आउरोरा की बातें सुन फ़ाबियो घर से चला जाता है। तेरेसा उसके पीछे जाती है। गास्पार आउरोरा को समझाता है कि उसे ऐसा नहीं

करना चाहिए। यह एक घरेलू मामला है और फ़ाबियो को एक मौक़ा मिलना चाहिए। कोस्मे उससे प्यार नहीं करता था अगर वह उससे प्यार करता तो वह खुदकुशी नहीं करता। तेरेसा लौट आती है। ब्राउलियो आता है जो इस घटना से अनजान है। वह गास्पार को निसेतो के पास ले जाता है। तेरेसा और आउरोरा में बहस होती है। आउरोरा तेरेसा को फ़ाबियो और आउरोरा में से किसी एक का चुनाव करने के लिए कहती है। मजबूर तेरेसा फ़ाबियो का साथ छोड़ने से मना कर देती है।

अगले दिन शाम को जब फ़ाबियो घर लौटता है तो बिना कुछ खाए-पिए खुद को अपने कमरे में बंद कर लेता है। जब वह कमरे से बाहर आता है तो तेरेसा उसे बताती है कि गास्पार हमेशा के लिए घर छोड़कर जा रहा है। फ़ाबियो अकेले में गास्पार से बात करता है। गास्पार उसे सलाह देता है कि उसे ख़त लिखकर माफ़ी माँग लेनी चाहिए। क्योंकि कुछ दिनों के बाद सब कुछ शांत हो जाएगा। घरेलू मामला समझकर लोग तुम्हारे धोखे को भूल जाएँगे और तुम आराम से रहना। क्योंकि जो कुछ उसने किया है– वह कुछ ख़ास नहीं। धोखा तो सभी लोग देते है। धोखेबाज़ तो पूरा समाज है।

इसी बीच आउरोरा आ जाती है जो घर छोड़कर जा रही होती है। तेरेसा उसे समझाती है। फ़ाबियो भी उसे रोकता है लेकिन वह नहीं रुकती। आउरोरा के बाद गास्पार भी चला जाता है। फ़ाबियो वहीं अकेला खड़ा होता है। तभी ब्राउलियो आउरोरा के बारे में पूछता है। फ़ाबियो उसे बताता है कि वह अपनी सहेली के घर गई है। फ़ाबियो ब्राउलियो से अपनी 'कलरब्लाइंडनेस' की बात करता है जिसपर ब्राउलियो उसे कहता है कि वह 'कलरब्लाइंड' नहीं है क्योंकि एक कला आलोचक कलरब्लाइंड कैसे हो सकता है ? फ़ाबियो गुस्सा होकर ब्राउलियो को कहता है कि उन दोनों ने कई बार इस बारे में बात की है तो अब वह इससे अनजान कैसे बन सकता है ? ब्राउलियो के इंकार से फ़ाबियो आपे से बाहर हो जाता है। तेरेसा दौड़कर आती है और उसे कुछ देर आराम करने की सलाह देती है। ब्राउलियो चला जाता है। फ़ाबियो तेरेसा को कुछ देर काम करने का बहाना बना भेज देता है। उसके जाने के बाद फ़ाबियो खुद को उसी कमरे में बंद कर

लेता है, जिसमें उसकी माँ की मौत हुई थी। इधर तेरेसा घबराई हुई अपने कमरे से बाहर आती है। वह फ़ाबियो को ढूँढ़ती है वह समझ जाती है कि फ़ाबियो ने खुद को पहले की तरह कमरे में बंद कर लिया है। वह दरवाज़ा खुलवाने की कोशिश करती है लेकिन अंदर से कोई आवाज़ नहीं आती। तब तेरेसा उसे बताती है कि वह शुरू से ही फ़ाबियो का सच जानती थी लेकिन उसे बुरा ना लगे, इसलिए उस सच से अनजान बनने का नाटक करती रही। फ़ाबियो बाहर आता है और कोस्मे की मौत के लिए खुद को दोषी मानता है। बावजूद इसके तेरेसा उसे समझाती है कि कभी इस सच को किसी के सामने ज़ाहिर ना होने दे। हम दोनों मिलकर सब कुछ ठीक कर लेंगे।

1.3 दीआलोगो सेक्रेतो की समस्याएँ

राजनीति को षडयंत्रों की नीति माना जाता है। जहाँ पर सत्ता बनायी और पल्टी जाती है। जिस सत्ता को बनाने में दिन महीने और साल लग जाते हैं वह कुछ मिनटों और घंटों में पलट जाती है। सर्वविदित है कि सत्ता को पाना हर किसी का सपना होता है । जो स्पेन के गृहयुद्ध के समय में भी हुआ। इसी पृष्ठभूमि में 'दीआलोगो सेक्रेतो' नाटक की रचना आंतोनियो बूएरो वाज़ेखो ने की। वाज़ेखो का साहित्य न्याय और आज़ादी का साहित्य है। इस नाटक में नाटककार ने स्पेन के तत्कालीन समाज और राजनीति की आलोचना की है जहाँ पर एक अयोग्य व्यक्ति फ़ाबियो जो एक प्रसिद्ध कला आलोचक और पेंटर है के माध्यम से तत्कालीन स्पेनी राजपुरुषों का पर्दाफ़ाश किया है। इसलिए इस नाटक का मूल स्वर– राजनीतिक और सामाजिक आलोचना है।

यह नाटक मात्र मनोरंजन ही नहीं करता बल्कि समाज और राजनीति में व्याप्त बुराईयों के प्रति सचेत भी करता हैं एक वर्णांध (कलरब्लाइंड) कैसे पेंटर और कला आलोचक बन सकता है– यही इस समाज की विडम्बना है और सुयोग्य व्यक्ति पीछे रह जाता है। सामूएल कोस्मे योग्य होकर भी खुदकुशी करने की हद तक मजबूर किया जाता है। इस सबके पीछे फ़ाबियो का स्वार्थ है। उसे डर है कि कहीं उसका सच सबके सामने

न आ जाए । फ़ाबियो के अनुसार, " हमेशा सावधान रहना मेरे लिए जेल जैसा हो गया। मैं अपने डर से बढ़कर कुछ नहीं हूँ। हमेशा सबके सामने बेपर्दा होने का डर। "

फ़ाबियो मात्र वर्णांध ही नहीं है वह अंधा भी है उसका अंधापन आधुनिक मानव के मन के अंधेपन को सामने लाता है जहाँ पर सही-ग़लत का फ़र्क़ नहीं पता चलता। फ़ाबियो अपनी शारीरिक कमी और आउरोरा के मन में कोस्मे के लिए जो प्यार है उसे बर्दाश्त नहीं कर पाने के कारण कोस्मे की ग़लत आलोचना करता है। वह इतना निर्दयी है कि उसे अपनी लड़की की हालत पर भी तरस नहीं आता – "पुराने देवी-देवता भी कोई कम निर्दयी नहीं होते थे।"– वह अपनी खोखली मर्दानगी की खातिर तेरेसा से भी झूठ बोलता है।

फ़ाबियो के माध्यम से नाटककार ने एक आलोचक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। एक आलोचक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह निर्वैयक्तिक होकर आलोचना करे लेकिन फ़ाबियो इस कसौटी पर खरा नहीं उतरता। उसके आलोचक पर एक पिता हावी हो जाता है। "गास्पार : एक नशेबाज़ और तुम्हारी बेटी को तुमसे छीननेवाले मूरख के साथ तुम तटस्थ कैसे हो सकते थे ? *(फ़ाबियो उसे गुस्से से देखता है।)* दूसरों की तरह तुम भी अपनी ज़िद और जलन या अपनी हमदर्दी के साथ बढ़ रहे थे। इसलिए आलोचना करना बेहद मुश्किल काम है।" इस प्रकार, एक आलोचक के ऊपर एक व्यक्ति का व्यक्तित्व हावी हो जाता है।

फ़ाबियो के माध्यम से एक कलाकार का संघर्ष सामने आता है जो अपनी अयोगयता को छिपाने के लिए सालों-साल झूठ बोलता रहता है। वह अपने आप से लड़ता है कूट संवाद करता है पर फिर भी उसका यह झूठ सबके सामने आ जाता है। "ये किया है मैंने। झूठ और बस झूठ।" फ़ाबियो और ब्राउलियो का कूट संवाद प्रतीक है कलाकार के अंतर्मन और बहिर्मन का। जिससे कलाकार के असमंजस का पता चलता है।

वाज़ेखो ने 'दीआलोगो सेक्रेतो' में हमारे आसपास फैली गंदगी की भी बात की हैं। सभी पात्र सामान्य लगते है परन्तु गास्पार एक ऐसा पात्र है जो अपनी बेतुकी बातों के

माध्यम ये सब कह जाता है इसलिए गास्पार का चरित्र गहराई लिए है। गास्पार के माध्यम से ही वाज़ेखो के विचारों को आकार मिलता है। साथ ही, गास्पार के साथ जेल में हुई घटना वाज़खो के जीवन का सच है। फ़ाबियो यदि गंदी दुनिया का प्रतीक है तो गास्पार इस गंदी दुनिया का सच सबके सामने लाता है। आज इस गंदी दुनिया में जगह-जगह पर ग़लत काम हो रहे हैं क्योंकि यह दुनिया गंदे लोगों की ही है। इसलिए यह दूसरों पर दोष नहीं मढ़ सकती। "यह समाज हर एक की चालाकियों के लिए ज़िम्मेदार है, इसलिए यह सारा दोष तुम पर नहीं मढ़ सकता।" "यही इस घिनौनी दुनिया की ख़ासियत है। एक कमीना दूसरे कमीने को सहारा देता है।" समाज में हर ओर बुराई का बोलबाला है। सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं। फिर भी हमारी नैतिकता उनको दबा देती है।

दीआलोगो सेक्रेतो में घटनाएं सामान्य हैं, पात्र सामान्य हैं कुछ भी ऐसा नहीं है जो असामान्य प्रतीत हो, लेकिन इसी सामान्यता में नाटक की असामान्यता छिपी है। मंच पर स्थित आवक्ष मूर्ति जिसे गास्पार का नाम दिया गया– प्रतीक और साक्षी है मूक जनता का– जो सब देख रही है। उससे कितने ही सवाल किए जाए वह चुप रहती है। वहीं असली गास्पार प्रतीक है बुद्धिजीवी वर्ग का, जो समाज का सच सबके सामने लाने की कोशिश करता है। आवक्ष मूर्ति दर्शक को संवाद करने और सोचने के लिए प्रेरित करती है। वह दर्शक की संवेदना को झकझोरती है।

बूएरो वाज़ेखो ने बेरोज़गारी से होनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला है। बेरोज़गारी के कारण ही समाज में बुराई फैली है। "जो तुम जैसा बनना चाहते है। लोगों को धोखा दो या उनका फ़ायदा उठाओ, यही इस जंगल का नियम है।" क्योंकि "क़ानून भी यही कहता है कि तुम्हें [काम करने और] खाने का हक़ है... बेरोज़गारी से हर कोई डरता है। कोई भी बेरोज़गार नहीं रहना चाहता।"

वेलास्केस की पेंटिंग लास इलांदेरास जो एक मिथक पर आधारित है प्रतीक है यथार्थ का। जहाँ बुराई पर अच्छाई की जीत नहीं बल्कि बुराई अच्छाई से जीत जाती है। यहाँ संसार में या हमारे वर्तमान में सच्चाई अभीशप्त है। जो इस समाज का यथार्थ है। इस

पेंटिंग के माध्यम से नाटककार ने यह बताया है कि जब भी बुराई के विरुद्ध लड़ा जाता है तो विडंबना यह है कि बुराई अच्छाई को अपने पाँव तले रौंद देती है। "यह बुनी हुई पेंटिंग देवी-देवताओं के ओछेपन को सबके सामने लाती है।" देवी पालास आतेनेआ तानाशाही का प्रतीक है। वहीं आराक्ने तानाशाही विरोधी जनता की प्रतीक। देवी पालास आराक्ने को मकड़ी बना देती है। लेकिन फिर भी सच्चाई नहीं मरती वह निरंतर संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है। पेंटिंग में बनी बुनकर इसी जीत को प्रतीकित करती है। मकड़ी का जाल प्रतीक है अभिशाप का जिसे हम हटा नहीं पा रहे हैं और करघा प्रतीक है जीवन चक्र का।

वाज़ेखो ने गास्पार के माध्यम से स्त्री की महानता की बात की है। गास्पर कहता है– "इस दुनिया में सबसे बड़ी चीज़ है स्त्री।" वह बहुत तेज़ होती है। माफ़ कर देना उसका सबसे बड़ा गुण है। तेरेसा फ़ाबियो का सच सालों से जानती है। और फ़बियो के झूठ के लिए उसे माफ़ कर देती है। मुसीबत की घड़ी में उसका साथ देती है। वहीं आउरोरा जो युवा वर्ग का प्रतीक है सच्चाई का सामना करने को तैयार है। वह अपनी चालाकी से फ़ाबियो की वर्णांधता का पर्दाफ़ाश कर देती है। साथ ही, अपने पापा को सामूएल कोस्मे की मौत के दोष से मुक्त कर देती है।

आउरोरा के माध्यम से वाज़ेखो ने पत्रकार के दायित्व की बात भी की है। उनके अनुसार पत्रकार सच का सेवक होता है। उसे किसी भी हालत में सच को सबके सामने लाना चाहिए, जैसे आउरोरा ने किया। वह अपने परिवार के प्रति अपने दायित्व से ज़्यादा समाज के प्रति अपने दायित्व को महत्त्व देती है जो एक पत्रकार का कर्तव्य होता है।

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु क्षीण है। पूरा कथानक सामूएल कोस्मे की मौत से हुई परेशानी के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। एक ऐसा पात्र, जिसका नाटक में ज़िक्र भर है। वाज़ेखो का पूरा प्रयास पात्रों के चरित्रांकन पर रहा है जिसमें वे सफल भी हुए हैं। फ़ाबियो, तेरेसा और गास्पार ऐसे पात्र हैं जो देखने में कुछ लगते हैं लेकिन हैं कुछ और। इसलिए कहा जा सकता है कि उनके चेहरे के पीछे एक और चेहरा छिपा है। फ़ाबियो अपनी वर्णांधता को सबसे छिपाता रहता है। जिसके लिए वह तरह-तरह के झूठ बोलता है। तेरेसा

फ़ाबियो का सच जानने के बावजूद अनजान बनी रहती है क्योंकि उसे डर है कि कहीं फ़ाबियो फिर से खुद को कमरे में बंद न कर ले। चूँकि वह एक डरपोक इंसान है जो खुदकुशी भी नहीं कर सकता । गास्पार फ़ाबियो के सच को पहले से जानता था लेकिन सही समय आने तक चुप रहता है। इसलिए जो पात्र जैसा प्रतीत होता है वैसा नहीं है।

TH-19332
Jawaharlal Nehru University
Library

दूसरा अध्याय

दीओलोगो सेक्रेतो नाटक का

'कूट संवाद' शीर्षक से हिन्दी अनुवाद

(प्रस्तुत शोध अध्येता द्वारा)

2.1 दृश्य

किसी आधुनिक फ़्लैट का एक कमरा। मध्यम स्वरसंगति और दीवारों पर सफ़ेदी की हुई है। दायीं ओर एक दरवाज़ा है बीच में कुछ ऊँचाई पर एक कीमती चित्र की अनुकृति जो कि वेलास्केस[1] के चित्र 'फाबूला दे पालास इ आराक्ने' (Fabula de Palas y Aracne) जिसे लास इलांदेरास[2] (Las Hilanderas) के नाम से भी जाना जाता है, जैसा चित्रित है। चित्र के नीचे पुस्तकों के दो-तीन ख़ाने हैं जिनमें कला संबंधी पुस्तकें, प्रसिद्ध पीठों के मोनोग्राफ़, पत्रिकाएँ और कुछ पृष्ठों की विवरणिकाओं से अटी। इन ख़ानों के ऊपर किसी आधुनिक मूर्तिकार की बहुत ही सुंदर आवक्ष मूर्ति रखी है। किसी प्रशांत यूनानी या रोमन पुरुष की आवक्ष मूर्ति, जिसकी अपलक दृष्टि शून्य में खोई है। मूर्ति के बायीं ओर, कुछ पृष्ठ पड़े हैं और दायीं ओर टेलीफ़ोन। पुस्तकों के ख़ाने की ओर सामने वाले दरवाज़े के बीच सी.डी. प्लेयर है। पुस्तकों के ख़ाने की दायीं ओर कॉकटेल कैबिनेट[3] है। बायीं ओर, पार्श्व से बरामदा दिखता है और उसके आगे बंद चबूतरा है। दायीं ओर, पार्श्व के अंत में एक गैलरी है जो घर के अंदर की ओर जाती है। जिसकी बायीं ओर ऊपर एक परदा है। इसी ओर, एक बहुत बड़ा सोफ़ा है जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला है। उससे काफ़ी दूर एक छोटी मेज़ पर बड़े शेडवाला एक लैम्प रखा है। कमरे के बीच में मेज़ पर राखदानी, एक संदूक़ची और कुछ पत्रिकाएँ पड़ी है। किनारे की ओर दो-तीन कुर्सियाँ रखी हैं। बायीं ओर, एक सिरे पर सामने ही एक बाँहवाली कुर्सी है। उसके दायीं ओर एक छोटी मेज़। इनके पीछे एक स्टैण्डिंग लैम्प। सोफ़े के बिल्कुल दायीं ओर, पास ही इस बाँहवाली कुर्सी के सामने रंगमंच का अगला भाग है। दीवार पर लहरदार और जीवंत विषम आकार-प्रकार की नक्क़ाशियों से उकेरी गई दीवार की सजावट कुछ बेहतरीन उपादानों से की गई है। इधर-उधर कुछ सजावटी सामान : धातु निर्मित एक सूरज और एक अफ़्रीकी या अमरीकी मुखौटा, उत्कृष्ट दिवालगीर से संबंधित दीवार पर कुछ नक्काशियाँ ...। मंच पर ख़ामोशी पसरी है। लेकिन शालीनता नहीं है। न ही किसी पारम्परिक रुचि को दर्शाता है। दूसरे शब्दों में, मंच वास्तविक सौन्दर्यशास्त्र की रूढ़िमुक्त परम्पराओं की ओर हमारा ध्यान खींचता है।

---

[1] स्पेनी राजा फ़ीलिप चतुर्थ के समय के प्रसिद्ध राजदरबारी पेंटर दीएगो रोद्रीगेस दे सेल्वा इ वेलास्केस (1559.1660ई.)
[2] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट
[3] अनेक प्रकार की शराब रखने के लिए एक तरह का बार

2.2 पहला अंक

(अंधेरे को चीरता चरखे का कर्कश स्वर। प्रकाश से अंत में लगा चित्र चमकने लगता है जिसमें वेलास्केस के चित्र में बना चरखा दिखाई देता है, जिसके साथ चित्र में बनी पहिया घुमानेवाली स्त्री की आकृति इस तरह प्रकाशित होती है कि उस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। धीरे से आवाज़ और स्वर प्रारम्भ होता है : वाग्नेर[4] के "एल बूके फान्तास्मा" [5](El buque fantasma) के बुनकरों का समवेत गान शुरू होता है। तमाम ध्वनियों के आरोह के साथ चित्र अंधेरे से उभरने लगता है। सजीव होता चित्र किसी विशालकाय पारदर्शी शीशे जैसा प्रतीत होता है। कुछ क्षणों बाद कुछ असाधारण घटित होता है : चित्र अपने धूपछाँही यथार्थ रूप में क़ायम रहता है लेकिन उसके रंग हल्के पड़ने लगते हैं और चित्र एक गेरुए, बदरंग काले-भूरे, काले-नीले अथवा धूसर पुंज में परिवर्तित हो जाता है। प्रकाश फैलता हुआ बायीं ओर की बाँहवाली कुर्सी पर ठहर जाता है। उस बाँहवाली कुर्सी पर आरामदायक पोशाक पहने हुए, करीब पैंतालीस साल का आकर्षक व्यक्तित्ववान फ़ाबियो (Fabio) जिसकी क़मीज़ के बटन खुले हैं, बैठा है। उसके घुटनों पर कुछ फ़ाइलें और पन्ने रखे हैं जिन पर वह कुछ लिख रहा है। संगीत धीमा होने लगता है। फ़ाबियो कहीं खो जाता है। वह अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए वेलास्केस के इलांदेरास (बुनकर) को एकटक देखने लगता है। इस बीच दूसरी रोशनी सोफ़े के पहले हिस्से पर ठहर जाती है। वहाँ बैठा ब्राउलियो फ़ाबियो को देख रहा है। स्लेटी रंग का थ्री पीस सूट और टाई पहने करीब पचहत्तर साल का ब्राउलियो (Braulio) थका हुआ चेहरा, चश्मे से झाँकती ध्यानमग्न आँखें। फ़ाबियो उसे देखता है। बहुत दूर से आते गायकों और वाद्यों का अस्पष्ट स्वर।)

फ़ाबियो : क्यों ? *(ब्राउलियो उसे देखना बंद कर देता है।)* पिताजी, क्यों ? *(मौन प्रतिवाद करते हुए)* मैं आपको समझना चाहता हूँ।

ब्राउलियो : *(उसे न देखते हुए)* यह सब स्वीकारना मुझे काफ़ी महँगा पड़ा।

फ़ाबियो : कम-से-कम तुमने तो समझा होता।

---

[4] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

[5] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

ब्राउलियो : शुरुआती सालों में ही...नहीं।

फ़ाबियो : एक साल ? कुछ कम नहीं।

ब्राउलियो : लेकिन...मैं तुम्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचाना चाहता था। तुम यह सब कब समझते ?

फ़ाबियो : धीरे-धीरे...। कभी-कभी मैं यह सोचता हूँ कि काश मैं उस वाहियात-सी सनक का शिकार न होता। अब मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अब ऐसा नहीं हैं। *(खीज के साथ)* तुम्हें मेरी सहायता करनी चाहिए थी।

ब्राउलियो : मैं इन पेचीदगियों को कम जानता था। यह उन तमाम ग़रीब कलाकारों के मुक़ाबले कुछ नहीं था।

फ़ाबियो : और मैं, मैं क्या जानता था पापा ? मैं तो एक छोटा बच्चा था। तुमने उसे क्यों नहीं टाला?

ब्राउलियो : मैंने तुमसे मशविरा लेने की कोशिश की थी... लेकिन बाद में, मुझे इस बात का एहसास हुआ।

फ़ाबियो : मुझसे मशविरा लेने का यह अच्छा तरीक़ा है। आज मैं वही हूँ जो मुझे बनाने की कोशिश की गई। *(ख़ासी चुप्पी)* क्यों ?*(कोई जवाब नहीं)* एक दिन आप वहाँ होंगें और तब आपको पता चलेगा...

(उसकी आवाज़ धीमी हो जाती है लेकिन फ़ाबियो अभी भी बडबड़ा रहा है। प्रकाश सामान्य हो जाता है और दोनों परदे चमकने लगते हैं। दूर से आता बुनकरों का समवेत गान रुक जाता है। चित्र के सभी रंग फिर से सामान्य हो जाते है। जिस कोने में ब्राउलियो बैठा है वहाँ अंधेरा हो जाता है। कमरे में काफ़ी रोशनी फैल जाती है। तेरेसा (Teresa) बायीं ओर से प्रवेश करती है, रुकती है और मुस्कुराती है। अपने पति की ओर ध्यान से देखती है। यह एक चालीस साल की आकर्षक महिला है, साधारण और सुंदर पहनावे में पर्स के साथ और अपने हाथ में एक मोटी फ़ाइल लिये हुए।)

तेरेसा : *(फ़ाबियो के पास जाकर उसका चुंबन लेती है।)* आज किससे बात कर रहे हो ?

फ़ाबियो : *(ब्राउलियो को एक नज़र देखता है)* पालास आतेनेआ[6] के साथ।

तेरेसा : क्या बकवास कर रहे हो।

फ़ाबियो : या आराक्ने[7] के साथ। एक दूसरे के साथ।

तेरेसा : रहने भी दो ।

फ़ाबियो : अब मैं क्या करूँ जबकि मुझे संवादों की कल्पना करना पसंद है। इस तरह मैं कलात्मक समस्याओं को अच्छी तरह समझ सकता हूँ।

तेरेसा : कुछ और नई तरक़ीबें शामिल की ? *(फाइल और पर्स बीच की मेज़ पर रख देती है।)*

फ़ाबियो : उन सबसे भी बढ़कर।

तेरेसा : *(इस बीच अंदर जाते हुए)* क्या आउरोरा घर आ गयी ?

फ़ाबियो : नहीं।

तेरेसा : और तुम्हारे पापा ?

फ़ाबियो : *(फ़ाबियो उस कोने की ओर देखता है जहाँ ब्राउलियो की स्थिर परछाई है)* गास्पार (Gaspar) के साथ गये हैं। जल्दी ही आ जाएँगे।

तेरेसा : *(बार की ओर जाती है, गिलास उठाती है)* तुम भी लोगे ?

फ़ाबियो : अभी नहीं।

तेरेसा : लेकिन मैं तो लूँगी। *(एक ह्विस्की बनाती है। फ़ाबियो का ध्यान अपने पन्नों पर है, फिर से अपनी पत्नी को देखता है।)*

फ़ाबियो : चुड़ैल, आज तुमने देर कर दी।

---

[6] एक बुनकर जिसने पालास आतेनेआ को प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया था।
[6] ग्रीक सभ्यता में कला की देवी, जो लास इलांदेरास में चित्रित है।
[7] एक बुनकर जिसने पालास आतेनेआ को प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया था।

तेरेसा : *(हँसते हुए)* तुम्हें खाना समय पर ही मिलेगा। चुड़ैलों का जादू कभी ज़ाया नहीं जाता।

फ़ाबियो : अगर तुम चाहो तो हम बाहर कुछ खा सकते हैं।

तेरेसा : और बेटी ?

फ़ाबियो : कह देंगे कि हमेशा की तरह तुमने बाहर कुछ खा ही लिया होगा।

तेरेसा : *(शराब का घूँट भरकर उसके पास जाती है)* मुझे नहीं लगता कि मैं दोबारा बाहर जा पाऊँगीं। मैं थक गई हूँ। शुक्र है, कल से छुट्टियों का सप्ताह शुरू हो रहा है। लेकिन बच्चों की कापियाँ जाँचना कितना ऊबाऊ काम है।

फ़ाबियो : तुम चाहो तो स्कूल छोड़ सकती हो, हमें तुम्हारी तनख़्वाह की ज़रूरत नहीं।

तेरेसा : मुझे भी तुम्हारे पैसों की ज़रूरत नहीं। देखो, क्या तुम इस घर की वफ़ादार और जी हुजूरी करनेवाली गुलाम औरत के साथ रहने के सपने देख रहे हो ?

फ़ाबियो : नहीं तेरेसा, क्योंकि क्लासिज़ तुम्हें थका देती हैं...

तेरेसा : मैं कर सकती हूँ और मैं इस क़ाबिल हूँ कि इसे पूरा कर पाऊँगी।

फ़ाबियो : मुझे बेहद खुशी है *(लंबा विराम)* क्या किचन जाकर तुम्हारी कुछ मदद करूँ ?

तेरेसा : सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारा खाना गर्म करना है। *(दोनों मेज़ पर साथ बैठते हैं। फ़ाबियो तेरेसा को खीज भरी निगाह से देखता है, वह हँसती है।)* शांत। *(शराब का घूँट भरकर)* मैं अभी आयी। *(मज़ाक करते हुए)* क्योंकि मुझे तुम्हें देखना अच्छा लगता है।

फ़ाबियो : *(लिखते हुए)* क्यों नहीं, मैं इतना ख़ूबसूरत जो हूँ !

तेरेसा : तुम नहीं समझ सकते, तुम्हारी बदसूरती भी मुझे तुम्हारी ओर खींचती है।

फ़ाबियो : बनिस्बत मेरे तुम्हारी तरफ़ खींचती है।

तेरेसा : गँवार कहीं के !

फ़ाबियो : लकडबग्घी कहीं की !

तेरेसा : *(हाथ में गिलास लिये खड़ी होती है)* मैं जा रही हूँ, मैं तुम्हें और बर्दाश्त नहीं कर सकती। *(सामने की ओर जाती है, रुकती है, अपनी घड़ी देखकर परेशान हो जाती है।)*

फ़ाबियो : क्या हुआ ?

तेरेसा : आउरोरा अभी तक नहीं आयी।

फ़ाबियो : क्या तुम अभी तक इसकी आदी नहीं हुई ?

तेरेसा : *(फिर से उसके पास आती है)* तुम्हें डर नहीं लगता कि एक दिन... वह सामूएल कोस्मे के साथ रहने चली गई तो ? और वह भी हमें बिन बताए।

फ़ाबियो : *(गुस्से में)* किसलिए, वो जब चाहे तब साथ सो सकते हैं ? वह गृहस्थ जीवन के लिये अभी तैयार नहीं है, कम-से-कम उस वाहियात आदमी के साथ तो हर्गिज़ नहीं।

तेरेसा : जैसा लोग कहते है... ये उसके बस की बात नहीं है, यह पूरी दुनिया जानती है कि वह ऐसा करता है। लेकिन मैंने अभी तक आउरोरा के हाथों पर कोई निशान नहीं देखे हैं।

फ़ाबियो : वह किसी और तरीक़े से ड्रग्स ले सकती है...

तेरेसा : मुझे डराओ मत !

फ़ाबियो : [तुम चिंता मत करो।] मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा... वह एक संयत और समझदार लड़की है। उस गधे के लिए अफ़सोसनाक लगाव के सिवा उसे कोई और बीमारी नहीं है। *(गुस्से में)* आउरोरा को नुक़सान पहुँचाने के घटिया इरादे के ज़रिए वह मुझे जो नुक़सान पहुँचाना चाहता है, मैं... ! लेकिन वह कभी इसमें कामयाब नहीं होगा, तेरेसा। अगर एक दिन वह चली गई, ऐसा होगा क्योंकि आजकल बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं। या वो चले गए हैं... हालाँकि अभी तक वे नहीं गए हैं !

तेरेसा : आउरोरा नहीं! हरगिज़ नहीं।

फ़ाबियो : *(मुस्कुराते हुए)* बहुत अच्छा।

तेरेसा : वो हमें प्यार करती है।

फ़ाबियो : मुझे शक है लेकिन जब मैं सामूएल कोस्मे की डंडे से पिटाई करूँगा तो आउरोरा का प्यार मेरे प्रति कम हो जाएगा। *(तेरेसा फिर से घड़ी देखती है)* चलो, तुम चिंता मत करो। उस घटिया पेंटर के साथ ऐसा ही होगा। आजकल के लड़के-लड़कियों को आज़ादी देने का एक फ़ायदा है।

तेरेसा : क्या ?

फ़ाबियो : यह कि उनमें इतनी समझ आ जाती है कि वे अच्छे और बुरे इंसान में फ़र्क़ कर सकें। सामूएल तो एक नाकारा इंसान है।

तेरेसा : अच्छा ठीक है, मुझे किचन में काम है *(हाथ में अभी भी थोड़ा भरा हुआ शराब का गिलास लेकर सामने की ओर जाती है, फ़ाबियो की ओर वापस आती है और सामने के दरवाज़े की ओर इशारा करती है)* तुम अपने काम में फिर से तो नहीं खो गए हो ?

फ़ाबियो : सिर्फ़ तभी तक जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता।

तेरेसा : *(बड़े चित्र की तरफ़ इशारा करती है)* क्या ? पालास और आराक्ने।

फ़ाबियो : मैं तुम्हें इस बारे में पहले भी बता चुका हूँ।

तेरेसा : या शायद लास इलांदेरास। जब से ये आई है उस दिन से तुम्हारा वक़्त इसी बारे में सोचते हुए बीतता है।

फ़ाबियो : *(चित्र को देखते हुआ उठता है और उसके पास जाता है)* लेकिन अपने पेंटर की तरह यह भी रहस्यमय है।

तेरेसा : अगर तुम इसको लेकर गंभीर हो तो मैं जा रही हूँ। *(जाने को होती है।)*

फ़ाबियो : *(उसे रोकता है।)* रुको... मैं भी थका हुआ हूँ।

तेरेसा : *(शंका से)* क्या, तुम कहना क्या चाहते हो ?

फ़ाबियो : अगर तुम चाहो तो मैं कोई दूसरा रास्ता ढूँढता हूँ। *(उसे भरोसे में ले लेता है।)*

तेरेसा : सुनो, हम रुक जाते हैं, तुम थके हुए हो।

फ़ाबियो : तुम्हारे साथ नहीं।

तेरेसा : *(हँसते हुए)* जाओ, तो फिर तुम जा सकते हो।

फ़ाबियो : नहीं जाऊँगा, मैं तुममें खो जाना चाहता हूँ। *(उसे गले लगा कर चूमता है।)*

तेरेसा : *(उसके ऊपर शराब डाल देती है।)* तुम मुझे छलकाओगे ! *(खुद को छुड़ाकर भाग जाती है।)*

फ़ाबियो : धोखेबाज़ !

तेरेसा : क्यों ?

फ़ाबियो : क्योंकि तुम छलकाने नहीं देती।

तेरेसा : गंदे इंसान ! *(फ़ाबियो उसके पीछे भागता है, धीरे से चिल्लाती हुई मेज़ के दूसरी तरफ़ आ जाती है।)*

फ़ाबियो : मुझसे बचकर कहाँ जाएगी, लोमड़ी ! *(पीछे भागता है, वह गिलास मेज़ पर रखकर दोबारा भागती है।)*

तेरेसा : *(इलांदेरास के समवेत गान के गुनगुनाने की आवाज़ आती है।)* तुम कुछ नहीं कर सकते। मेरा जादू तुम्हारी कोशिश नाकाम कर देगा। *(हैरान फ़ाबियो वहीं ठहर जाता है।)*

फ़ाबियो : कहाँ से आ रही है, ये आवाज़ ?

तेरेसा : देखा मेरा जादू, तुम पत्थर हो गए हो !

फ़ाबियो : यह तो इलांदेरास का कोरस है।

तेरेसा : हाँ, यह वाग्नेर के एल बूके फ़ांतास्मास का ही कोरस है।

फ़ाबियो : मज़ाक मत कर, चूड़ैल ! जब तुम आई थी तब मैं यही धुन गुनगुना रहा था।

तेरेसा : तुम नहीं गुनगुना रहे थे।

फ़ाबियो : *(थोड़ा ठहर कर।)* मुझे मत बनाओ कि ये तुम्हारी कोई नयी पिशनगोई है...

तेरेसा : *(हँसते हुए)* मैं एक ऐसी जादूगरनी हूँ जो चीज़ों को पहले ही भाँप लेती है।

फ़ाबियो : तुम्हारे आने से कुछ देर पहले मैं इस धुन के ही बारे में सोच रहा था।

तेरेसा : फिर तो ज़रूर मेरे दिल की कोई आवाज़ होगी। *(हँसने लगती है।)*

फ़ाबियो : तुम हँस क्यों रही हो ?

तेरेसा : कभी-कभी जादुई बातें भी हमें हँसाती है।

फ़ाबियो : उल्लूओं की। *(वह फिर से हँसती है)* और मैं एक उल्लू हूँ।

तेरेसा : *(हँसे जा रही है)* तुम यह जान लो कि तुम मेरे जादू से उल्लू नहीं बन सकते। मैं तुम्हें कोई धोखा नहीं दूँगी। कल रात मैंने यह गाना कमरे में सुना था जो तुमने कल रात बहुत धीमी आवाज़ में सी.डी.प्लेयर में चला रखा था।

फ़ाबियो : कुतिया... कमीनी ! *(वह उसका पीछा करता है, तेरेसा फिर से चिल्लाती हुई वहाँ से खिसकती है। फ़ाबियो उसे पकड़ लेता है।)* लेकिन नहीं यह संयोग बहुत हैरतंगेज़ है क्योंकि मैं कुछ देर पहले ही इस धुन के बारे में सोच रहा था।

तेरेसा : इसमें हैरान होने वाली क्या बात है। ऐसी बातें तो होती ही रहती हैं।

फ़ाबियो : हाँ, और तुम्हारे साथ तो कुछ ज़्यादा ही होती है।

तेरेसा : अच्छा। कुछ और मदद करूँ।

फ़ाबियो : *(व्यंग्यात्मक ढंग से)* तो फिर बताओ कि अब मैं क्या करने जा रहा हूँ।

तेरेसा : हाँ, मैं वो भी जान लूँगी। *(भागने की कोशिश करती है। फ़ाबियो उसका रास्ता काटता है।)* शांत ! *(हँसती है।)*

फ़ाबियो : *(उसे पकड़ लेता है)* अब तुम मेरी हो !

तेरेसा : रहम करो, मेरे आक़ा *(उसे चूमता है)* अब और ज़ोर-ज़ुल्म नहीं ! *(उसे सोफ़े पर गिराता है और प्यार करता है)* अरे, मुझे खाना बनाना है।

फ़ाबियो : अब तो तुम ही मेरा खाना हो !

तेरेसा : *(हँसी के बीच में)* अरे पापी, छोड़ मुझे! तुमने मेरे बाल बिगाड़ दिए हैं !

फ़ाबियो : सारी कोशिश छोड़ दो !

(कुछ समय पहले बायीं ओर से उन्नीस साल की आउरोरा (Aurora) आ चुकी है। जो उन दोनों को देख लेती है। रंगीन तंग पैंट, कमीज़ और फ़ैन्सी बास्कट कंधे पर टँगा ज़री का काम किया हुआ कैन्वास का बैग। सुंदर लेकिन बहुत थका हुआ चेहरा। थकी हुई-सी आती है। अपने मम्मी-पापा की हरक़त को रुख़ाई से देखती है। तेरेसा उसे देख लेती है।)

तेरेसा : आउरोरा। *(फ़ाबियो तेरेसा को उठाता है और उसके पास ही बैठ जाता है।)*

फ़ाबियो : हैल्लो बेटा, *(हँसते हुए)* हम लोग अकेले थे... इसलिए...

आउरोरा : आप जारी रख सकते हैं। *(चली जाती है।)*

तेरेसा : तुम जब कहो मैं खाना लगा दूँगी। *(बालों को सँवारती है और उठ जाती है।)*

आउरोरा : मैं खाना नहीं खाऊँगी। मेरा मन नहीं है। *(गैलरी के पास पहुँच जाती है और जाने को होती है।)*

तेरेसा : आउरोरा। *(आउरोरा रुक जाती है।)* तुम्हारे साथ कुछ हुआ है क्या ?

आउरोरा : *(झिझक के साथ, अटकते हुए)* कुछ ख़ास नहीं।

तेरेसा : कुछ ख़ास तो है। *(उसके पास जाती है।)* तुम थकी-थकी-सी लग रही हो... क्या हुआ है ?

आउरोरा : *(फ़ाबियो और तेरेसा को एक नज़र देखती है।)* मेरा ही कुछ है तुम्हारे मतलब का कुछ नहीं। *(जल्दी से दायीं ओर से निकल जाती है।)*

फ़ाबियो : *(उठता है।)* कोई ख़ास वजह नहीं होगी...

तेरेसा : उसकी आँखें नम थीं। *(दायीं ओर जाती है।)*

फ़ाबियो : *(उसका हाथ पकड़ लेता है।)* तुम मत जाओ। वो अकेले रहना चाहती है। लगता है उस गधे से इसका ब्रेक-अप हो गया है।

तेरेसा : काश ! ऐसा ही हुआ हो।

फ़ाबियो : चलो, इसकी खुशी मनाए क्योंकि ऐसा ही हुआ होगा। *(तेरेसा का गिलास उठाता है, एक घूँट पीता है और उसे देता है।)*

तेरेसा : *(रुखाई से गिलास लेती है।)* लेकिन वो दुःखी है।

फ़ाबियो : चलो खुशी मनाओ कि आउरोरा को उससे छुटकारा मिल जाए *(गिलास उसके मुँह तक ले जाता है और तेरेसा बेमन से हँसते हुए शराब का गिलास ख़ाली कर देती है।)*

तेरेसा : *(दुःखी मन से गैलरी की तरफ़ देखती है।)* फ़िलहाल अभी तो मैं यही चाहूँगी कि मैं एक जादूगरनी ही बनी रहूँ।

फ़ाबियो : तुम बन सकती हो क्योंकि तुम्हारे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है।

तेरेसा : मैं भी यही चाहती हूँ।

फ़ाबियो : *(तेरेसा का ध्यान बँटाने के लिए)* मैं तुम्हें अपने नए 'कला संवाद' (Díalogo de arte) के बारे में कुछ बताऊँ ? आराक्ने जो कहना चाहती है उसी का एक छोटा-सा हिस्सा।

तेरेसा : ठीक है। *(फ़ाबियो उसे मेज़ तक ले जाता है, वह बैठ जाती है। उसके हाथ से गिलास ले लेता है।)*

फ़ाबियो : उसे देखो *(चित्र की ओर इशारा करता है।)* आराक्ने देवी पालास आतेनेआ (Palas Atenea) के सामने काँप रही है।

तेरेसा : काँप रही है ?

फ़ाबियो : और शायद यह कह रही है –'मुझे मत घूरो। मैं सिकुड़ रही हूँ।'

तेरेसा : ऐसा कह रही है ? *(चुपचाप गैलरी की ओर देखती है।)*

फ़ाबियो : *(बैठ जाओ।)* पालास आतेनेआ ने आराक्ने (Aracne) को एक घिनौनी मकड़ी में तब्दील कर दिया है। पुराने देवी-देवता भी कोई कम निर्दयी नहीं होते थे।

तेरेसा : *(धीमे स्वर में)* क्या वे दोनों सचमुच वहीं है ? क्या चित्र में जो दो आकृतियाँ हैं, क्या वे वहीं तो नहीं हैं।

फ़ाबियो : ऐसा माना जाता है। *(तेरेसा सिर गैलरी की ओर घुमाती है।)* मेरी बात ध्यान से सुनो।

तेरेसा : *(हँसती है)* माफ़ करना।

फ़ाबियो : वेलास्केस एक ऐसा गंभीर पेंटर था, जिसे समझना मुश्किल है और यह पेंटिग भी उस जैसी ही है। *(हँसता है।)* उस पर्दे की उलझनभरी हलचल मुझे काफ़ी दिलचस्प लगी। क्योंकि वेलास्केस यह जानता था ! उसने देवी पालास और आराक्ने को बिल्कुल अमूर्त-सा बनाया है। रंगों में लिपटी हुई धुँधली-सी दीवार के सामने उनकी हल्की-सी झलक। लेकिन दोनों दुश्मन अपनी जगह से एक-दूसरे को घूर रही हैं और नफ़रत कर रही हैं।

तेरेसा : फिर भी, अराक्ने काफ़ी सिकुड़ गई है और उसके हाथ उसके शरीर से काफ़ी लम्बा है। ऐसा तो नहीं है कि पेंटिंग का हिस्सा होने की वजह से वह पूरी तरह साफ़ दिखाई नहीं दे रही हो ?

फ़ाबियो : सब इस पेंटिंग के बारे में जानना चाहते हैं और ऐसा कुछ नहीं है जो तुम सोच रही हो। आराक्ने सिकुड़ रही है और उसके हाथ-पैरों में तब्दील होने की वजह से लम्बे हो गए है। और इसमें भी मेरी भागीदारी होगी।

तेरेसा : कितनी भयावह सज़ा... *(गैलरी से नज़र नहीं हटा पाती।)*

फ़ाबियो : आराक्ने एक कठोर आलोचक थी।

तेरेसा : ओहो, छोड़ो। *(फ़ाबियो उसे देखता है और टेबल की दूसरी ओर बैठ जाता है।)*

फ़ाबियो : यह बुनी हई पेंटिंग देवी-देवताओं के ओछेपन को सबके सामने लाती है और अराक्ने पूरी ज़िंदगी एक अदने कीड़े की तरह जाल बुनने के लिए अभिशप्त है।

तेरेसा : *(पेंटिंग की ओर इशारा करती है।)* लेकिन यह तो सत्रहवीं सदी के समय की बात है।

फ़ाबियो : इस पेंटर ने एक पौराणिक मिथक को एक वास्तविकता में तब्दील कर दिया है। शायद कालजयी वास्तविकता। पहले छोर पर भाग्य की देवियाँ : लास मोइरास[8] (Las Moiras) यानी लास पारकास(Las Parcas)। ओरतेगा[9] ने इस ओर इशारा किया था और अब मैं इन दोनों मिथकों को एक करने जा रहा हूँ। वेलास्केस भी अपना ध्यान पारकास से नहीं हटा पाया।... सामने काले कपड़ों वाली बुनकर हमारी ज़िंदगी की लौ के धागे बुन और तोड़ रही है... विशाल। करीब से। बेरहम। यह पेंटिंग मृत्यु संबंधी एक चिंतन है। दुनिया का एक और बड़ा नाटक लेकिन वेलास्केस से ज़्यादा उसके समकालीन काल्देरान[10] के लिए ज़्यादा बेहतर और उम्दा है।

तेरेसा : *(बड़ी उत्सुकता से पेंटिंग को देखती है।)* बेहद दिलचस्प है और पालास क्या कहती है ?

फ़ाबियो : *(अटकते हुए)* शायद कह रही होगी... 'तू मेरे जैसा बनना चाहती है। लेकिन मैं तुझे महत्त्वाकांक्षी होने की सज़ा नहीं दूँगी।'

तेरेसा : क्यों ? फिर ?

फ़ाबियो : 'झूठी होने की। तूने देवी-देवताओं पर जो कलंकित होने के आरोप मढ़े है वे तेरे पापों से बड़े नहीं हैं।'

---

[8] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

[9] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

[10] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

तेरेसा : *(उठती है)* शाबाश ! दुष्ट आत्मा। *(दायीं ओर जाती है। वापस आती है।)* मुझे तुम्हारा नया संवाद पसंद आया। यह बड़ा कलात्मक है।

फ़ाबियो : इसमें वेलास्केस के रूप, रंग और वेलादूरास की भी बात की जाएगी।

तेरेसा : क्या तुम उस बेचारी मकड़ी के मामले में कुछ ज़्यादा बेरहम तो नहीं हो। आख़िरकार उसकी भी तो अपनी कुछ वजहें थीं।

फ़ाबियो : *(गंभीर)* मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं उसे बचाना चाहता हूँ। *(वह जाने को होती है)* सुनो, तुम्हें नहीं लगता कि गास्पार और पापा को कुछ ज़्यादा देर हो गई है ?

तेरेसा : हाँ, बाक़ी दिनों से कुछ ज़्यादा। *(प्रार्थना करते हुए)* मैं आउरोरा को देखना पसंद करूँगी।

फ़ाबियो : अरी, सठियाई माँ, शांति रख और उस काम में मन लगा जिस बारे में मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ। *(तेरेसा अपनी खीज को छिपाते हुए मेज़ के पास आ जाती है।)* क्या तुम गास्पार से कुछ ऊब नहीं गयी ?

तेरेसा : अगर यह मुसीबत न खड़ी करे तो! वह अपनी चीज़ों को सहेजता है, अपना बिस्तर लगाता है... आज सुबह वो तुम्हारी पुरानी जैकेट नहीं लेना चाह रहा था। मैंने उसे पहनने पर ज़ोर दिया और उसमें वह अच्छा लग रहा था।

फ़ाबियो : वो बूढ़ा खूसट ?

तेरेसा : *(कुर्सी का सहारा लेती है।)* तुम्हें नहीं लगता कि वह ख़ुद से ऊब गया है ?

फ़ाबियो : नहीं, नहीं। लेकिन यहाँ तुम्हारी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। अगर वह तुम्हें परेशान करें, तो उसे प्यार से गली में फेंक देना ... बिना कोई रहम किए, ठीक! वह मेरा ध्यान बँटा देता है *(हँसता है)* कितनी ही बार मेरे पापा ने हमें नहीं टोका होगा– 'तुम लोगों को उसे जानना चाहिए।' ये सारे के सारे बूढ़े [इनको ऐसा लगता है कि ये बड़े सयाने हैं। लेकिन] सठिया गए हैं।

तेरेसा : *(बैठ जाती है, उसे उत्सुकता से देख रही है।)* मैं तुम्हें यक़ीन दिलाती हूँ कि गास्पार मुझे तंग नहीं करता।

फ़ाबियो : *(दुःखी मन से)* मुझे खुशी है। उसकी मदद करना मेरी ज़िम्मेदारी है जिसे मैं खुशी से पूरा करूँगा। *(जिस कोने में ब्राउलियो की परछाई दिखाई दे रही थी वह साफ़ होने लगती है।)*

ब्राउलियो : तुम खुशी से करोगे, मेरे बच्चे ? *(कमरे की रोशनी धीरे-धीरे हल्की होने लगती है)*

फ़ाबियो : हाँ मैंने ऐसा ही कहा था बड़ी खुशी से और बड़े अदब के साथ– जब मेरे पापा ने हमसे पूछा था।

तेरेसा : मुझे बहुत अच्छी तरह याद है *(दोनों याद में खो जाते हैं। ब्राउलियो बोल रहा है और वे उसे देख रहे हैं।)*

ब्राउलियो : बहुत ही तक़लीफ़देह समय था फ़ाबियो। जेलों में लोग बड़े आराम और आसानी से भूखे मर जाते हैं। तुम्हारी माँ ने तुम्हें बड़ी मुश्किल से पाला-पोसा। ज़रा सोचो– तुम्हारी उम्र एक साल से कुछ ही ज़्यादा थी जब लड़ाई ख़त्म हुई। वह मुझे एक ब्रैड रॉल (Panecillo) तक भी नहीं भेज पाती थी। तुम्हारी पाँच साल की उम्र तक उसने मुसीबतों का सामना किया। लेकिन जब तक मैं रिहा हुआ तब वह मर चुकी थी। बेटा, अगर मैं जेल में ज़िंदा रहा तो वह गास्पार की बदौलत। उसे अपनी एक बहन से खाना मिलता था जो वह बड़ी मुश्किल से जुटा पाती थी। तुम्हारी ही तरह मैं भी एक नौजवान था जिसकी बहुत सारी ज़रूरतें थीं और उसी वजह से मैं ज़िंदा रह सका। लेकिन वह... चरित्रवान और बहुत ही समझदार युवक था। वह दुनिया में होने वाली घटनाओं का अनुभवी राजनेताओं से भी बढ़िया बहस-मुबाहिसा करता था। मुश्किल घड़ी में हमें सही राह दिखाता था। हमारा हौसला बढ़ाता... और हमें अपना खाना तक भी खिलाता। *(अपने पति को देखते हुए रोमांचित तेरेसा उसके पास जाती है।)* उसने तब तक अपना खाना मेरे साथ बाँटा जब तक मैं जेल से रिहा नहीं हुआ। इसलिए ज़िंदगी भर तुम्हें भी उसका अहसानमंद रहना चाहिए... मुझे उसके बारे में कभी पता नहीं चलता अगर उस रात मुझे वह मेट्रो की

सीढ़ियों पर ठिठुरता हुआ नहीं मिलता। वह सत्तर साल का बूढ़ा भिखारी लेकिन मैं भी उसे जल्दी ही पहचान गया कि वह कौन है। तुम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि उसने कितने साल एक जेल से दूसरी जेल में काटे ? इक्कीस साल... तुम दोनों समझते क्यों नहीं कि उसने जो कुछ मेरे लिए किया उसके बाद अब मेरा फ़र्ज़ बनता है कि मैं उसके लिए कुछ करूँ ?

तेरेसा : तुम्हारे चेहरे पर वह दिख रहा है जो तुम कहना चाहते हो।

फ़ाबियो : *(हँसते हुए)* तुम्हें नहीं लगता कि कभी-कभी इस मतलबी दुनिया में हमें दो विरोधी चीज़ें भी साथ लेकर चलनी पड़ती है ?

तेरेसा : *(फ़ाबियो की बग़ल में खड़ी तेरेसा फ़ाबियो को पीठ की तरफ़ से पकड़ लेती है।)* सर, मैं तो आपकी क़ायल हो गयी हूँ।

फ़ाबियो : शुक्रिया, सेन्योरा। मैं भी। *(फ़ाबियो को छोड़ देती है, अपना गिलास उठाकर गैलरी की ओर जाती है।)*

तेरेसा : तुम वेलास्केस के साथ अपना कूट संवाद जारी रखो।

फ़ाबियो : तेरेसा ! *(उसे देखती है।)* किचन में, ओह ? लड़की को अकेले में सुकून से रहने दो !

तेरेसा : *(उसे गिलास दिखाती है।)* तुम्हें दिखाई नहीं देता ?

(दायीं ओर से चली जाती है। रोशनी ब्राउलियो पर केंद्रित। फ़ाबियो उठता है और पहले अंत पर रखी बाँहवाली कुर्सी तक जाता है। बैठ जाता है, और मेज़ पर रखे काग़जात उठाता है, सोचने लगता है। कमरे की रोशनी कम होने लगती है और पेंटिंग फिर से अजीब ढंग से बेरंगी हो जाती है। दूसरी रोशनी फ़ाबियो पर केंद्रित है, जो अपनी नज़र उठाकर ब्राउलियो को देख रहा है।)

फ़ाबियो : फिर से मैं अपनी कूट बातों पर आ जाता हूँ... वेलास्केस के साथ नहीं, तुम्हारे साथ।

ब्राउलियो : लेकिन पहले इन बुनकरों को तो सुनो।

फ़ाबियो : कौन-से बुनकर ?

ब्राउलियो : तुम सुन नहीं सकते ?

फ़ाबियो : *(विरोधी भाव से)* मैं कुछ नहीं सुन सकता !

ब्राउलियो : लेकिन मैं तो सुन सकता हूँ।

फ़ाबियो : दिखावा बंद करो और मुझसे साफ़-साफ़ बात करो।

ब्राउलियो : तुम कौन होते हो मुझसे सवाल करने वाले ?

फ़ाबियो : नहीं ! तुम मैं ! तुम ही तो हो जिसने मुझे पैदा किया, हाथ पकड़कर एक बच्चे को बड़ा किया !

ब्राउलियो : जब तक तुम बड़े नहीं हुए।

फ़ाबियो : और अब इतनी देर हो गयी। तुम्हारी वजह से।

ब्राउलियो : मेरी वजह से, पूछो गास्पार से ?

फ़ाबियो : *(लाइब्रेरी की आवक्ष मूर्ति की ओर इशारा करता है।)* वो दोनों कौन थे ? तुम या तुम्हारा दोस्त ?

ब्राउलियो : यह वही है।

फ़ाबियो : सनकी बूढ़ा ! तुम्हारा बेवकूफ़ बहादुर गास्पार !

ब्राउलियो : तुम उससे पूछो।

फ़ाबियो : *(आवक्ष मूर्ति की ओर)* न तो इस गास्पार ने कभी कुछ कहा और न ही हमें लाने वाले ने ! गास्पार के नाम पर तुम बचना छोड़ दो और यह मान लो कि जब तुम्हें मुझे डूबने से बचाने के लिए बोलना चाहिए था तब तुम चुप थे।

ब्राउलियो : तुम मेरे बारे में ऐसा कैसे सोच सकते हो ?

फ़ाबियो : तुम ज़िंदा रहने के लायक़ नहीं हो।

ब्राउलियो : तुम चुप हो जाओ !

फ़ाबियो : *(दुःखी होकर)* मैंने कई बार तुमसे बात करने की कोशिश की।

ब्राउलियो : जो तुमने कभी नहीं की। तुम मुझे किस बात के लिए दोषी मानते हो। दोष हम दोंनो का है।

फ़ाबियो : *(छिड़कते हुए)* मैं नहीं जानता कि मैं तुमसे किस बारे में बात करूँ ?

(आह भरते हए अपने काम में लग जाता है। ध्यान लगाने की कोशिश करता है। सामने बायीं ओर का दरवाज़ा आधा खुला हुआ है जिससे एक साफ़ अजीब-सी रोशनी आ रही है। उसी समय, सिर्फ़ चरखेवाली बुनकर को दिखाने के लिए बदरंग पेटिंग काली पड़ जाती है।)

ब्राउलियो : *(न देखते हुए)* और कभी अपनी माँ से बात की ?

फ़ाबियो : *(हैरान)* क्या ?

ब्राउलियो : *(ज़ोर देते हुए)* जब तुमने अपना काम ख़त्म करने के लिए ख़ुद को बंद कर लिया था। उसने तुम्हें कुछ बताया था ? *(फ़ाबियो अपना सिर नहीं हिलाता, लेकिन दरवाज़े पर हुई हल्की-सी हलचल और जीती-जागती तस्वीर उसका ध्यान खींच लेती है।)*

फ़ाबियो : *(पन्नों से नज़र हटाए बिना)* नहीं।

ब्राउलियो : ठीक है। वह यह कभी नहीं जानती थी। [मुझे भी तब पता चला जब वह मरी थी।]

फ़ाबियो : *(याद करते हुए)* मैं एक छोटा बच्चा था ...

ब्राउलियो : हाँ, अपनी माँ का छोटा-सा बच्चा।

फ़ाबियो : हाँ, मैं हमेशा अपनी माँ का छोटा-सा बच्चा बना रहना चाहता था... बेहद खुश।

ब्राउलियो : और तुम एक खुशदिल इंसान बने। आत्मविश्वास से भरे। [तुम भी मानोगे कि यह मेरी वजह से हुआ।] मैंने तुम्हें यह खुशी दी। *(सामने का दरवाज़ा धीरे-धीरे बंद होने लगता है। उसी दौरान पास वाली खिड़की में वाग्नेर के लास इलांदेरास के मुखड़े की मधुर धुन सुनाई देती है।)*

फ़ाबियो : *(अचानक)* यह सच नहीं था !

ब्राउलियो : सच यही था ! तुम्हें याद नहीं ? *(वह उठता है, चश्मा हटाकर आवक्ष मूर्ति की ओर झुकता है। फ़ाबियो की नज़र उसी पर टिकी होती है। उसी दौरान रोशनी सुबह जैसी चमकदार हो जाती है। पेंटिंग के रंग चमकने लगते हैं।)* दरवाज़े पर दस्तक हुई है... *(बायीं ओर से आउरोरीन* (Auriprín) *प्रवेश करती है। स्कूली पहनावे में, जुराबे, हाथ में लाल रंग का चमकदार प्लास्टिक का पर्स।)*

आउरोरीन : हेलो !

ब्राउलियो : दादा को पप्पी !

आउरोरीन : पहले पापा को। *(पापा को चूमने के लिए भागती है।)*

फ़ाबियो : तुम्हारे लिए दरवाज़ा किसने खोला ? *(तेरेसा बायीं ओर से आती है। जैकेट, शॉपिंग बैग और हाथ में मुड़ा हुआ अख़बार।)*

तेरेसा : यह मेरे साथ आई है।

आउरोरीन : हाथ धो लो !

आउरोरीन : एक सेकेंड, मम्मा।

तेरेसा : एक सेकेंड नहीं, अभी।

आउरोरीन : अभी नहीं, एक सेकेंड।

तेरेसा : बकझक के बाद, ठीक है ?

आउरोरीन : बकझक तक रुको, मम्मा ! मुझे इन लोगों से कुछ पूछना है।

तेरेसा : और जैसे मेरे पास कुछ करने को नहीं है। इसे पकड़ो, ब्राउलियो। *(तेरेसा ब्राउलियो को अख़बार देती है जिसे वह नज़रभर देखता है।)*

फ़ाबियो : क्यों न हम सब किचन में चलें ?

तेरेसा : परेशान करने के लिए ?

फ़ाबियो : सब मिलकर बातें करेंगे और तुम्हारी मदद भी कर देंगे।

तेरेसा : *(हँसती है)* रावियोली[11] (Ravioli) बनाने के लिए ?

फ़ाबियो : *(हड़बड़ी में)* तुम्हें नमक पकड़ा देंगे।

तेरेसा : अरे फ़ेमिनिस्ट, मुझे हँसाओ मत !

फ़ाबियो : *(छिछोरों की तरह खीजते हुए)* वो तो मैं हूँ ! और खाना बनाना भी सीखूँगा !

तेरेसा : कोशिश भी मत करना ! मैं गोबर नहीं खाना चाहती। यहाँ, काम का बँटवारा... *(दायीं ओर से जाती है।)*

आउरोरीन : क्या आप अभी भी उसी का इंतज़ार कर रहें हैं ?

ब्राउलियो : *(गिड़गिड़ाते हुए)* दादा को पप्पी !

आउरोरीन : लो, और बड़ी। *(अपनी स्कूल की छोटी पेटी मेज़ पर रख देती है। दादा के पास भाग कर जाती है और उसे चूमती है। ब्राउलियो बड़बड़ाता है और अपना अख़बार पढ़ने लगता है।)*

फ़ाबियो : *(मज़ाक में)* लो बहस शुरू हो गई।

आउरोरीन : *(फ़ाबियो के पास दौड़ कर जाती है)* पापा, तुम पेंटिंग के बारे में क्या जानते हो...

फ़ाबियो : हे मेरे भगवान !

आउरोरीन : ओह, नहीं ? अच्छा, तुम कोई अख़बार के आलोचक नहीं हो ? *(अपने पापा के कंधों पर झुक जाती है और पेजों में झाँकती है।)*

---

[11] पनीर, कीमा और सब्जियों के छोटे-छोटे टुकड़ों से बनाया गया एक प्रकार का पास्ता

फ़ाबियो : कला के एक इतिहासविद् से ज़्यादा। पेंटिंग की आलोचना उसकी प्रशंसा है... जो पैसा भी देती है।

आउरोरीन : और प्रसिद्धि। अखबारों से प्रसिद्धि मिलती है इसलिए मैं पत्रकारिता ही पढ़ूँगी।

ब्राउलियो : *(जो ध्यान से बातें सुन रहा है, हैरान)* ये कैसी सनक है ?

आउरोरीन : बुद्धू कहीं के ! पापा सब जानते है।

ब्राउलियो : *(बुदबुदाते हुए)* हमेशा की तरह, मुझे सबसे बाद में पता चलता है।

आउरोरीन : चुप। जब देखो शिकायत करते रहते हो। यह सच है ना पापा, आपने इसके लिए अपनी मंज़ूरी दे दी है ? *(उसे चूमती है।)* पत्रकार सच का सेवक होता है !

फ़ाबियो : बिल्कुल।

आउरोरीन : तुम्हारी तरह ! *(अपने पिता के पन्नों को देखते हुए)* देखना मैं ऐसी सुंदर-सुंदर चीज़ें लिखूँगी।

फ़ाबियो : यह पत्रकारिता नहीं है।

आउरोरीन : हाँ मुझे पता है ! यह सब एक किताब के लिए है जिसका नाम होगा "कला संवाद"। मैं भी अच्छी-अच्छी किताबें लिखूँगी।

ब्राउलियो : हाँ। कहानियों की। *(फ़ाबियो हँसता है।)*

आउरोरीन : वाहियात कहीं के ! ऊफ़, जलन! *(दादा हँसता है।)* मैं बहुत ही अहम् मुद्दों पर किताबें लिखूँगी जैसे ... *(अपने पिता से।)* मुझे देखने दो !

फ़ाबियो : मैं तुम्हें बताता हूँ :–"सत्रहवीं सदी के अनोखे चित्रों की संरचना और उसके कंट्रास्ट के बारे में"

आउरोरीन : *(हैरान)* क्या ?

फ़ाबियो : तुम कुछ समझती हो कि नहीं, समझी।

आउरोरीन : तुम कुछ रंजक रंगों की बात कर रहे थे ?

फ़ाबियो : तुम इनके बारे में क्या जानती हो ?

आउरोरीन : कैसा संयोग है ! मम्मी का ही कोई जादू होगा।

ब्राउलियो : बकवास मत करो। बेवकूफ़ों जैसी बात मत करो !

आउरोरीन : बकवास ? आज ही फिज़िक्स के प्रोफ़ेसर ने हमें सहायक रंगों के मिश्रण के बारे में बताया।

ब्राउलियो : तुमने भी जादूगरनी तेरेसा से टैलीपैथी की तालीम ली है। *(दोनों हँसने लगते हैं।)*

आउरोरीन : तुम हँस सकते हो। लेकिन इस दुनिया में जादू कम ही देखने को मिलता है।

फ़ाबियो : रंजकों की तरह। तुम्हें कुछ याद आया ?

आउरोरीन : मुझे पागल समझते हो ? दो रंजक रंगों को मिलाने से हम जो रंग चाहते हैं वो हमें मिल जाता है।

फ़ाबियो : बहुत अच्छे !

आउरोरीन : लेकिन ये भी मुसीबत है।

फ़ाबियो : क्यों ?

आउरोरीन : क्या एक रंग सभी रंगों से मिलकर नहीं बनता ?

फ़ाबियो : अगर दो रंजक रंग है तो उनमें सभी रंग होते हैं।

आउरोरीन : हाँ, हमारे प्रोफ़ेसर ने यही बताया था, लेकिन... *(अलग होकर सोचती हुई चलती है। रोशनी ब्राउलियो और फ़ाबियो पर केंद्रित।)*

ब्राउलियो : *(फ़ाबियो से)* तुम याद कर रहे हो या कल्पना कर रहे हो ?

फ़ाबियो : चुप करो।

ब्राउलियो : क्या अपने आपको समझाने की कोशिश नहीं करोगे कि उसने तुमसे रंगों के बारे में पूछा और तुम उसे अपनी हेठी बघार रहे थे ?

फ़ाबियो : *(बेमन से)* मुझसे पूछा। मुझे यक़ीन है। *(आउरोरीन रुक जाती है। रोशनी फिर से बढ़ने लगती है।)*

आउरोरीन : मुझे नहीं लगता। सलेटी ? और खाकी ?

फ़ाबियो : मिलाए जाने वाले रंग तो वहीं होते है लेकिन उन्हें कम चटकीला बनाकर मिलाया जाता है और उनके भी अपने संबंधित रंजक होते है।

आउरोरीन : तुम पागल हो गए हो। इस तरह की पेंटिंग में मैंने ऐसा कुछ नहीं देखा है जो तुम बोल रहे हो। *(सामने की पेंटिंग की ओर इशारा करती है।)*

फ़ाबियो : *(मज़ाक में)* लेकिन मैं तो देख सकता हूँ, क्योंकि मैं काफ़ी समझदार जो हूँ *(उठता है और पेंटिग के पास जाता है।)*

आउरोरीन : ये तो पहले से सोचा हुआ है।

फ़ाबियो : क्या ?

आउरोरीन : रंगों का यह तालमेल आख़िर कहाँ घटित हो रहा है अंदर या बाहर ? *(आँखों से इशारा करती है।)*

फ़ाबियो : अच्छा सवाल है।

आउरोरीन : तुमको नहीं पता !

फ़ाबियो : हाँ। लेकिन इसकी व्याख्या बहुत बड़ी हो जाएगी।

ब्राउलियो : *(आउरोरीन से)* गास्पार से पूछ लो। *(आवक्ष मूर्ति की ओर इशारा करता है।)*

आउरोरीन : जब तुम्हें कुछ पता नहीं होता तो हमेशा यहीं कहते हो। ये इस मूर्ति को गास्पार क्यों पुकारते है ?

फ़ाबियो : तुम्हारे दादा की बातें। उनके मुताबिक इस दुनिया में गास्पार सब कुछ जानता है।

आउरोरीन : ये ?

फ़ाबियो : एक आदमी जिसे ये सालों से जानते हैं।

आउरोरीन : कौन था वो ?

ब्राउलियो : एक... आदमी।

आउरोरीन : ठीक है। मुझे उल्लू मत बनाओ !

फ़ाबियो : एक लड़का जो इनके साथ जेल में था।

ब्राउलियो : *(परेशान होते हुए)* तुम इससे ऐसी बातें क्यों कर रहे हो ?

फ़ाबियो : बच्चों से कुछ नहीं छुपाना चाहिए।

ब्राउलियो : हाँ, बाद में स्कूलों और घरों में इसकी बातें होती थी...

फ़ाबियो : *(हँसता है)* बुरा समय इतनी जल्दी नहीं बीतता, पापा। लेकिन अब इसे छुपाने की ज़रूरत नहीं।

ब्राउलियो : *(आह भरते हुए)* हाँ, ये सच है। लेकिन इतने सालों की आदत ...

आउरोरीन : मुझे लगता है कि तुम ये समझते हो कि मुझे नहीं पता कि लड़ाई के बाद तुम जेल में थे इसमें कोई शर्म वाली बात नहीं है। और ये गास्पार, क्या इसे सब पता है ?

फ़ाबियो : *(चुटकी लेते हुए)* मैं तो मानता हूँ। तुमने तो ये देखा है और... तुम्हीं कहा करते थे कि यह सब जानता है।

ब्राउलियो : *(दुःखी होकर)* इस दुनिया में कोई सब कुछ नहीं जानता लेकिन एक अनोखा साधी जो सब समझता था। ।

आउरोरीन : *(मूर्ति को)* पर ये गास्पार कुछ नहीं बोलता है।

ब्राउलियो : क्यों नहीं? सुनो उसे। *(आवाज़ को भारी कर आवक्ष मूर्ति के पीछे से बोलता है।)* रंग आँखों में ही होते है और इसके साथ किसी भी चीज़ को किसी भी रंग में देख सकते है।

फ़ाबियो : *(हैरानी से)* क्या कहा ?

आउरोरीन : अब मैं समझ गयी !

फ़ाबियरे : क्या समझी !

आउरोरीन : *(हँसती है)* तुमसे ज़्यादा, सुना गास्पार ने क्या कहा।

ब्राउलियो : *(हँसता है)* गास्पार से सीखो।

फ़ाबियो : तुम इसे ग़लत मत समझना।

आउरोरीन : *(अपने दादा से अलग होकर और ज़्यादा आवाज़ भारी करके बोलती है।)* कुछ ऐसे पेंटर होते है जो नीले चेहरे और रंगीन घोड़े बनाते है।

फ़ाबियो : नहीं ऐसा नहीं दिखते ! लोग ऐसे कल्पना कर लेते है जैसे बच्चे चित्र बनाते है।

आउरोरीन : ऐसा दिखता है। अगर अब मैं अपनी आँखें बंद करूँ... *(बंद कर लेती है।)* और तुम्हारा चेहरा हरा देखना चाहूँ ... *(आँखें खोलती है और अपने पापा को देखती है।)* मैंने तुम्हें हरा देखा !

फ़ाबियो : झूठी !

आउरोरीन : सचमुच !

फ़ाबियो : झूठी...। *(आउरोरीन और पेंटिंग के पास जाता है, हँसता है, वह दादा के पीछे हो जाती है। फ़ोन की घंटी बजती है। सब रुक जाते है, गंभीर और अनमने से।)*

ब्राउलियो : बहुत मज़े आए, बहुत अच्छा रहा...

(नज़र बचाते हुए ब्राउलियो दायीं ओर से चला जाता है। बच्ची अपनी पेटी उठाकर नींद में चलने वालों की तरह सोने वाले कमरे में जाती है जिसका दरवाज़ा बंद है। रोशनी पहले की

तरह सामान्य हो जाती है। फ़ाबियो वहीं खड़ा है, फ़ोन को देखता रहता है जिसकी घंटी बज रही है। उसके बाद फ़ोन उठाता है। तेरेसा एप्रैन पहने हुए दायीं ओर से जल्दी जल्दी दाखिल होती है।)

तेरेसा : मुझे डर है कि कोई बुरी ख़बर होगी। आउरोरा इसे सुनकर उठ गई।

फ़ाबियो : तुम उसके साथ थी ?

तेरेसा : *(मुँह बनाकर माफ़ी मागने के भाव से)* हाँ, लेकिन उसने मुझे नहीं बताया कि उसके साथ क्या हुआ। *(फ़ाबियो फ़ोन उठाता है।)*

फ़ाबियो : हेलो... रेकेना। तुम्हें सुनकर खुशी हुई...

तेरेसा : तुम्हारा जज दोस्त। *(फ़ाबियो बैठ जाता है। वह चुपचाप मेज़ के पास जाकर बैठ जाती है।)*

फ़ाबियो : किस बारे में बात करनी है?... नहीं हमें नहीं पता।... उसने हमसे एक शब्द भी नहीं कहा... *(चिल्लाते हुए)* सामूएल कोस्मे ?... हाँ, मैं सुन रहा हूँ *(लम्बी चुप्पी)* लेकिन वो उसके साथ थी ?...नहीं, नहीं। कल रात वह साढ़े आठ बजे आई थी और अभी तक बाहर नहीं निकली है... हाँ, क्यों नहीं.. .*(लम्बी चुप्पी)* आप समझ सकते हैं कि इसके लिए हम आपके कितने शुक्रगुज़ार है। कृपया अगर कुछ नया पता चले तो हमें बताना... बहुत-बहुत धन्यवाद, रेकेना और बहुत सारा प्यार... बाय। *(फ़ोन रख देता है। एक-दूसरे को देखते है। धीमी आवाज़ में)* उसने हमें तसल्ली देने के लिए फ़ोन किया है, क्योंकि आज सुबह ही आउरोरा ने यह स्टेटमेंट दी है। यहाँ से जाने के बाद वह सामूएल कोस्मे के घर गई थी। जहाँ वह पुलिस से मिली और कोर्ट गयी थी। आउरोरा के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं है और अब यह पक्का हो गया है कि वह नशा नहीं करती और सामूएल था ना, वह कल रात गुज़र गया।

तेरेसा : ड्रग्स से ?

फ़ाबियो : *(घूमने लगता है।)* लगता तो ऐसा ही है, शायद ज़्यादा ही हो गयी होगी।

तेरेसा : वह... रो-रोकर बुरा हाल कर लेगी। लेकिन हाँ, शायद ये उसकी किस्मत है।

तेरेसा : *(बड़ी बेचैनी के साथ)* नहीं, नहीं... तुम समझ नहीं सकते और आवाज़ धीमी करो।

फ़ाबियो : मुझे समझना भी नहीं है। इस बारे में... *(दायीं ओर गैलरी में देखकर अपने क़दम रोक लेता है।)* तुम वहाँ क्या कर रही हो ? *(तेरेसा खड़ी हो जाती है।)*

आउरोरा : कुछ नहीं।

तेरेसा : *(तेरेसा गैलरी तक जाती है)* देखो, बेटा, *(आउरोरा नीचे आँखें किए पर्दे के पीछे छिपी हुई है। उसकी माँ आउरोरा को गले लगाती है और उसे अपने साथ लाती है।)* मुझे बहुत दुःख है... हमें तुम्हारे लिए बहुत बुरा लग रहा है... हम एक काम करते हैं अगर तुम चाहो ? तुम सो जाओ, मैं तुम्हारे लिए तीला[12] बना देती हूँ जिसे तुम अपने पापा की दवाई के साथ ले लेना।

आउरोरा : *(माँ से ख़ुद को छुड़ा लेती है।)* नहीं। *(मेज़ पर बैठ जाती है।)*

तेरेसा : *(उसके पीछे)* तुम्हें हिम्मत से काम लेना होगा... सुबह से। आज रात तुम ऐसा नहीं कर सकती। पूरी रात तुमने रोकर बिताई है... तुम्हें आराम करना चाहिए। बेटा ख़ुद को संभालो।

आउरोरा : मैं नहीं रोऊँगी और ना ही मुझे सोना है।

फ़ाबियो : *(पास आता है)* बेटा, हमें बहुत दुःख है।

आउरोरा : हाँ हाँ बिल्कुल। तुम्हारे जैसा नेक आदमी यही महसूस करेगा जैसे ही जज ने तुम्हें यह बताया कि तुम्हारी बेटी बेगुनाह साबित हुई है तो तुम्हें ऐसा ही महसूस होना था, हाँ, लेकिन तुम्हें तो दुःखी नहीं, बहुत खुश होना चाहिए।

फ़ाबियो : तुम्हें पूरा हक़ है ऐसा कहने का और मैं एकदम ऐसा ही सोचता हूँ।

तेरेसा : फ़ाबियो !

---

[12] नींबू से बनाया जाने वाला एक प्रकार काढ़ा (Tila)

फ़ाबियो : *(आउरोरा से)* मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ और ये तुमसे बेहतर जानता हूँ कि तुम्हारा भला किसमें है। तुम्हारे नशेड़ी होने का जो ख़तरा था वो भी दूर हो गया है।

आउरोरा : या पास आ गया।

तेरेसा : अपने पापा को दुःख पहुँचाने के लिए ऐसी बातें मत करो। तुम इससे बचना जानती थी। जब तुम्हारा दोस्त... ज़िंदा था।

फ़ाबियो : माफ़ करना। मुझे घबराहट हो रही है। तुम्हारे लिए हमारी बेचैनी... और तुम्हें जल्द से जल्द बसा हुआ देखने की हमारी जो इच्छा है उसे तुम्हें समझना चाहिए। तुम एक नींद की गोली लो और सो जाओ।

आउरोरा : तुम माफ़ी माँग रहे हो ! मैं नहीं जानती कि तुम इस मौत के लिए कभी शर्मिंदा हो भी पाओगे कि नहीं।

फ़ाबियो : *(हैरानी से)* मेरा इस मौत से भला क्या लेना देना !

आउरोरा : क्यों ? क्या तुम समझे नहीं ?

फ़ाबियो : बेटा, बकवास मत करो !

तेरेसा : आउरोरा यह बहुत बुरा समय है, तुम जिस हालत में घर आई हो... हमें तुम्हारा ख़याल रखने दो ! अभी तुम्हें आराम करने की ज़रूरत है। जो भी सवाल-जवाब तुम करना चाहो कल कर लेना। तुम चाहो तो सारा मसला ही निपटा लेंगे।

आउरोरा : *(निन्दा करते हुए)* आप मुझे सारी बातें साफ़ करने दीजिए।

फ़ाबियो : ठीक है। जैसा तुम चाहती हो हम सारी बातों पर से परदा उठाएँगे और वादा करो कि उसके बाद तुम दवाई ले लोगी।

आउरोरा : वादा।

तेरेसा : नहीं। कल, अभी शांत रहो।

आउरोरा : अभी !

फ़ाबियो : ठीक है अभी ! तुम्हें यह लगता है कि सामूएल कोस्मे की ज़िंदगी बर्बाद करने में कहीं मेरी आलोचना का हाथ है।

आउरोरा : उससे बढ़कर, अंतिम वाली आलोचना। *(तेरेसा आउरोरा के पास बैठ जाती है।)* कल तुम पूरी दोपहर सभा में टीका-टिप्पणी करते रहे। तब ये बात तुम्हारे दिमाग़ में नहीं आई। तुम्हारी मनमानी और तुम्हारी औक़ात...

फ़ाबियो : एक नाकारे कलाकार की मामूली-सी प्रतिक्रियाएँ।

आउरोरा : इतनी भी मामूली नहीं। देखा इसका अंजाम क्या हुआ।

तेरेसा : एक असावधानी... उसने ज़्यादा ड्रग्स ले ली थी या बहुत ज़्यादा दारू पी ली...

आउरोरा : और सोचो, मम्मी ये मुझे अपने घर में बंद रखना चाहते थे। लेकिन इस अकेलेपन का क्या नतीजा हुआ और यह इतना घटिया था... अगर मैं उसके साथ होती तो वह नहीं मरता। *(पति-पत्नी एक-दूसरे को देखने लगते हैं।)*

तेरेसा : आउरोरा... तुम हमें कहना चाहती हो कि यह एक हादसा नहीं था ?

आउरोरा : मैंने जज को यह बात नहीं बताई। लेकिन तुम लोगों को ज़रूर बताऊँगी।

फ़ाबियो : *(कटुता के साथ)* क्या यह एक ख़ुदकुशी है ?

आउरोरा : हाँ।

फ़ाबियो : मेरी आलोचना की वजह से ?

आउरोरा : हाँ।

फ़ाबियो : *(घूमते हुए)* बेटा ! यह पागलपन है। भला कोई अख़बारी आलोचना की वजह से अपनी जिंदगी कैसे ख़त्म कर सकता है *(उसके पीछे, कंधों को थपथपाते हुए)* कोई भी किसी आलोचना की वजह से ख़ुद को ख़त्म नहीं करता।

आउरोरा : अगर वह सिर्फ़ हताश भर होता तो मैं उसे बचा लेती। लेकिन वह तो नशा भी करता था और मैं उसकी यह लत छुड़ाने की कोशिश कर रही थी...

फ़ाबियो : *(तल्ख़ी से)* वहम। *(फिर से घूमता है)*

आउरोरा : हाँ। मुझे वहम हुआ था। लेकिन तुमने अपनी आलोचना से उसे तबाह कर दिया।

फ़ाबियो : आउरोरा, ये एक नशेबाज़ के साथ हुई मामूली-सी घटनाभर थी। लेकिन उसकी ख़ुदकुशी की वजह उसकी दिमाग़ी हालत थी न कि मेरे लेख। उनकी मौजूदगी और ग़ैर-मौजूदगी के बावजूद उसका यही अंजाम होना था।

आउरोरा : लेकिन उसे इस हाल तक पहुँचाने के ज़िम्मेदार तो तुम ही थे।

फ़ाबियो : *(खीजते हुए)* किसी बेकार के मुद्दे पर बहस करना बेमानी है। जाओ, जाकर सो जाओ !

तेरेसा : शश्श...! वे दोनों आ गए।

(बायीं ओर से गास्पार और चश्मा पहने हुए ब्राउलियो का प्रवेश। आवक्ष मूर्ति जैसा न दिखने वाला लगभग सत्तर साल का गास्पार काफ़ी बीमार लग रहा है। तेरेसा से मिले कपड़े, जो उस पर जच नहीं रहे हैं। नम और बेजान आँखें। दोनों दोस्त बहुत खुश लग रहे हैं। प्रवेश करने से पहले उनकी हँसने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। ब्राउलियो थोड़ा थका लग रहा है।)

ब्राउलियो : हम पहुँच गए।

गास्पार : गुड नाइट।

फ़ाबियो : *(उन दोनों के पास जाता है।)* तुम दोनों ने बड़ी देर कर दी।

गास्पार : इसमें मेरा कोई क़सूर नहीं...

फ़ाबियो : कोई तुम पर दोष नहीं मढ़ रहा।

गास्पार : हुआ ये कि हमें निसेतो मिल गया।

ब्राउलियो : निसेतो। एक पुराना दोस्त ! *(गास्पार से)* सुनो : तुमने देखा कि वह बर्बाद हो चुका है ? *(फ़ाबियो से)* लेकिन वह आगे बढ़ा। बिल्कुल : जामों से भरी शाम वैसे ही जैसे हम ओकान्या (Ocaña) में रैन्च के सामने उस अड्डे पर मिलते थे। शायद तुम्हें दूएसो (Dueso) का वह नशेबाज़ याद हो जो पागलों की तरह कानों में चिल्ला रहा था। *(शराब की ओर इशारा करते हुए)* फ़ाबियो, क्या हम आख़िरी जाम उठा सकते हैं ? [हम एक बार और तुमसे माँगते हैं...]

फ़ाबियो : जिस तरह तुम टल्ली होकर आए हो इसके बाद तो तुम्हारी हालत और बिगड़ जाएगी।

ब्राउलियो : क्या कह रहे हो ! तुम्हें पता है गास्पार के साथ बड़ी अजीब वाक़या होता है ? *(गास्पार उसे देख रहा है लेकिन कुछ नहीं कहता और चुपचाप जाकर सोफ़े पर बैठ जाता है।)*

गास्पार : क्या ?

ब्राउलियो : जब वह पीता है तो उसका दिमाग़ और हल्का हो जाता है।

गास्पार : रहने भी दो, ब्राउलियो।

फ़ाबियो : यह इतना भी अजीब नहीं है।

गास्पार : अब, नहीं।

गास्पार : नहीं। मैं भी एक नशेबाज़ हूँ। *(झुँझलाते हुए)* इसके बाद चीज़ें मेरी पकड़ में नहीं आती। जैसे दो घंटे पहले जब मैंने आख़िरी जाम लिया...

(आउरोरा, जो कि अपनी बेचैनी को दबाए गास्पार और ब्राउलियो की गपशप सुन रही थी, गास्पार को तिरछी नज़र से देखती है। जब वह ख़ुद को नशेबाज़ कहता है।)

तेरेसा : गास्पार, तुम पसंद करोगे पीने की जगह खाना। मैंने बहुत ही बढ़िया सूप बनाया है।

गास्पार : शुक्रिया। मैं अपने दूध के गिलास के साथ ... फ़िलहाल मैं इसे ले अपने कमरे में चला।

ब्राउलियो : और मैं, इतना सारा खाना देखकर मेरा भी मन नहीं है। बस एक आख़िरी सिगरेट ! *(अपने कपड़ों में टटोलता है।)* फ़ाबियो तुम्हारे पास है क्या? आज हम दोनों ने सिगरेट पी ही नहीं।

फ़ाबियो : *(छोटी मेज़ के पहले सिरे से)* ये लो !

ब्राउलियो : *(सिगरेट के पैकेट को लेकर उसमें से दो सिगरेट निकालता है।)* लो गास्पार ! *(सोफ़े के पास जाता है और अपने दोस्त के साथ बैठ जाता है।)* यह कितनी सुहानी शाम, है न ? *(सिगरेट जलाते हैं।)* हमने आज एक सिगरेट भी नहीं पी।

गास्पार : बुरी नहीं है। *(ऊबा हुआ फ़ाबियो जाकर एक सिगरेट लेता है। पैकेट वहीं छोड़ देता है।)*

ब्राउलियो : *(बड़े इत्मीनान से धुएँ के छल्ले उड़ाता है।)* बेचारा तबाह और कर्ज़दार ! निसेतो *(गास्पार खीजभरी गुर्राहट के साथ बैठ जाता है और सिगरेट पीता रहता है। आउरोरा और बर्दाश्त नहीं कर पाती और मेज़ पर गिरकर बुरी तरह रोने लगती है।)*

तेरेसा : चलो, अपने कमरे में चलो आउरोरा !

आउरोरा : *(बिना सिर उठाए)* नहीं...

ब्राउलियो : मेरी पोती को क्या हुआ ?

तेरेसा : इसकी बदकिस्मती। आप सबको जाकर सो जाना चाहिए...

गास्पार : कम से कम, मैं ! अगर इजाज़त हो। *(उठने को होता है लेकिन ब्राउलियो उसे रोक लेता है।)*

ब्राउलियो : रुको ! *(उठता है)* सबसे पहले मुझे यह पता लगाना है कि किस वजह से तुम्हारे चेहरों पर मुर्दनी छाई हुई है।

गास्पार : *(उठने की कोशिश करता है।)* जैसे कि मुझे... लगता...

ब्राउलियो : *(धक्का देकर उसे बैठा देता है।)* तुम भी इस परिवार का हिस्सा हो। *(मेज़ के पास जाता है।)* बेटा, अपने दद्दू को बताओ कि तुम क्यों रो रही हो ?

तेरेसा : ब्राउलियो अभी वह बात नहीं करना चाहती।

आउरोरा : *(सिर उठाती है)* मैं ज़रूर बात करूँगी। *(दोनों बूढ़ों से)* इन लोगों को भी पता होना चाहिए। *(वह पक्के इरादे के साथ आँसू पोंछ लेती है।)*

ब्राउलियो : पता होना चाहिए, क्या ?

आउरोरा : सामूएल कोस्मे ने ख़ुदकुशी कर ली।

ब्राउलियो : *(कुछ क्षण बाद)* वही... जिसके साथ तुम जाया करती थी ?

आउरोरा : वही, जिसे मैं प्यार किया करती थी।

फ़ाबियो : *(अपने पिता से)* मेरे पापा की अंतिम आलोचना के द्वारा उकसाऐ जाने पर की गई एक ख़ुदकुशी।

ब्राउलियो : क्या कह रही हो ?

फ़ाबियो : हाँ! उसने ख़ुदकुशी की क्योंकि यही उसकी फ़ितरत थी।

आउरोरा : उसने ऐसा तुम्हारी वजह से किया। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके लिए तुम्हारे विचार तुम्हारे विश्वास से ज़्यादा मायने रखते थे। तुम्हारे द्वारा की गई बेइज्ज़ती के बोझ को वह उतार फेंकना चाहता था, लेकिन मैं जानती हूँ कि इस प्रदर्शनी से उसे काफ़ी उम्मीदें थीं जिनका उसने कभी ज़िक्र नहीं किया। वह तुम्हारे सुझावों में सुधार कर तुम्हें खुश करना चाहता था। आख़िरकार तुम उससे जीत गए। वह तुम्हारी किताबों से प्रभावित था... तुममें विश्वास करता था... जितने के तुम हक़दार थे उससे भी कहीं ज़्यादा और तुमने उसके भरोसे को छीन लिया। वही हुआ जो तुम चाहते थे !

ब्राउलियो : एक मिनट ! यह तो बहुत बेतुकी बात है। अगर तुम्हारे पापा की बेइज़्ज़ती होती है तो तुम्हें खुशी होगी...

गास्पार : *(धीमी आवाज़ में)* चुप रहो ब्राउलियो !

ब्राउलियो : एक अनुभवी के नाते वह तुम्हारी आलोचना को सराहता था... *(उसे तालमेल बैठाने में कठिनाई होती है, अपने माथे पर हाथ रखकर)* इसलिए नहीं कि वे अच्छी लगा करती थीं।

फ़ाबियो : अगर आलोचना पक्ष में हो तो आलोचक बहुत उम्दा और अगर विपक्ष में हो तो आलोचक हरामज़ादा।

आउरोरा : तो फिर तुम्हारी आलोचना उसके इतने ख़िलाफ़ क्यों थी ?

फ़ाबियो : [आउरोरा, मैं तुम्हें दुःखी नहीं देखना चाहता... मैं तुम्हें दुःख नहीं पहुँचाना चाहता] **तुम जानती हो कि मैं उसकी कला पर कोई फ़तवा नहीं देता था।**

तेरेसा : *(झुँझलाते हुए)* मुझे नहीं लगता कि पेंटिंग पर अकादमिक बहस करने का यह सही वक़्त है।

आउरोरा : क्यों नहीं ? पापा मुझे एक सिगरेट दो। *(फ़ाबियो विचलित हो जाता है, वह हँसती है।)* ना ही यह हिरोइन है और ना चरस। यह तुम लोगों की दवा है जो दर्द नहीं देती।

तेरेसा : बस, आउरोरा *(फ़ाबियो पैकेट आगे बढ़ाता है और आउरोरा उसमें से एक सिगरेट निकालती है।)*

आउरोरा : इसे सुलगाओगे... भी... *(फ़ाबियो सिगरेट जलाता है।)* शुक्रिया *(पहला कश लगाती है।)* इस केस की अजीबोगरीब बात देखिए। पापा के मुताबिक सामूएल कोस्मे एक ठस्स पेंटर था। पेंटर ऐसा हो जो रंगों को ढूँढ़-ढूँढ़कर उसमें तालमेल बिठाकर, उस पेंटिंग में जान फूँक सकता हो वही पेंटर कहलाने का अधिकारी...

फ़ाबियो : प्लीज़ आउरोरा।

आउरोरा : ऐसा तुम्हारे साथियों ने कहा है।

फ़ाबियो : वे बडे रहमदिल हैं। अब पेंटिंग बेहद आज़ाद और सोच से परे हो गई है जिसका जायज़ा लेने के लिए कुछ ही तौर तरीक़े बचे है। आलोचना कामचलाऊ और किताबी हो गई है...

आउरोरा : बड़े रहमदिल हो !

फ़ाबियो : जो चाहे कहो। लेकिन हर आलोचक के अपने कुछ नियम होते हैं। उसके लिए ज़रूरी है ज़रूरत के मुताबिक संजीदा होना।

आउरोरा : ये पता कैसे चलेगा कि यह कब ज़रूरी है ? क्या हज़ारों बार तुम लोग ग़लत साबित नहीं हुए हो ?

फ़ाबियो : यह हमारी सरदर्दी है। अगर दूसरे आलोचक इससे ख़ुद को बचाना चाहेंगे तो मैं इसको भाँप लूँगा।

गास्पार : *(अपने आपसे बात करता है सब सुन लेते है।)* बिल्कुल... यहाँ बेरोज़गारी ही बेरोज़गारी है। *(सब उसे देखते है, हैरान।)*

ब्राउलियो : क्या ? *(कहीं खोया हुआ गास्पार कोई जवाब नहीं देता।)*

आउरोरा : *(धीमी आवाज़ में)* पापा, मैंने तुमसे गुज़ारिश की थी कि उससे अच्छा बर्ताव करो, उसे समझो।

फ़ाबियो : अगर मैं वह लिखता जो मैं महसूस नहीं करता तो सब लोग यही कहते कि मैंने तुम्हारी ख़ातिर ऐसा किया है यहाँ तक कि सामूएल भी यही कहता।

आउरोरा : वह तुम्हारे लेखों के मुद्दों को सराहता था... लेकिन वह इस बात के ख़िलाफ़ था कि तुम उसकी कला को समझ नहीं पाते।

फ़ाबियो : उसे समझना चाहिए था कि तब वह अंधापन कहाँ गया था जब उसे मेरे लेख मानीखेज़ लगते थे।

गास्पार : *(फ़र्श की ओर देखते हुए)* अरे इस दुनिया में सबसे ऊँची चीज़ है स्त्री। *(फ़ाबियो सिर हिलाता है।)*

ब्राउलियो : क्या कहा तुमने ? *(गास्पार उसे देखता है और जवाब नहीं देता।)*

आउरोरा : और अब यह मौत ! मैं भी मर गई हूँ। *(अपनी माँ की बाँहों में चली जाती है।)*

फ़ाबियो : *(प्यार से)* मेरी ग़लती की वजह से नहीं बल्कि अपनी असुरक्षा और कमी की वजह से। *(पास आता है, उसके सिर को हल्का-सा छुता है।)* एक बड़ा कलाकार और रचनाकार एक कठोर आलोचना की वजह से ख़ुद को नहीं मारता। वह ख़ुद में विश्वास रखता है।

तेरेसा : वह नहीं, फ़ाबियो। एक बड़ा कलाकार निराशा के चलते ख़ुद पर भी शक कर सकता है।

आउरोरा : *(झुँझलाकर)* उन कुछ आलोचकों की तरह नहीं जो [ख़ुद को अचूक मानते है] पेंटिंग करना नहीं जानते लेकिन यह जानते हैं कि किसी को कैसे पेंटिंग करनी चाहिए।

फ़ाबियो : उस बारे में मुझे कुछ लेना देना नहीं... मुझे यक़ीन है कि मैंने काफ़ी अच्छी पेंटिंग की है। हर हाल में, आलोचना करना मेरा काम है और कर्तव्य है। उम्मीद है कि एक़ दिन तुम उसे समझ पाओगे।

आउरोरा : *(अपनी माँ को छोड़ देती है और खड़ी हो जाती है।)* कभी नहीं।

ब्राउलियो : गास्पार तुम्हारी क्या राय है ?

फ़ाबियो : *(ख़ुद से)* अच्छा है तुम दोनों यहाँ हो।

आउरोरा : तुम इन दोनों को कम मत समझना। यहाँ सभी अपनी-अपनी राय दे सकते हैं। *(दुःख पर क़ाबू कर उठती है और गास्पार के पास जाती है।)* गास्पार तुम क्या सोचते हो ? क्या मेरे पापा गुनहगार है ? तुम कुछ तो समझ ही गए होगे ?

ब्राउलियो : गास्पार, कुछ कहो न !

तेरेसा : *(उठती है।)* बेटा, तुम अपने इस बेचारे से क्या पूछ रही हो ? यह उसका मामला नहीं है... वह थका हुआ है...

गास्पार : *(तेरेसा को देखता है।)* इस दुनिया में सबसे बड़ी चीज़ है स्त्री... हाँ... मेरा यह मानना है।

आउरोरा : बस यही सब न... जो तुम्हारे दिमाग़ में चल रहा है ?

गास्पार : मैं ...सोच नहीं पा रहा हूँ ...*(सिर पर हाथ मारता है)* यह ...अभी काम नहीं कर रहा।

आउरोरा : *(व्यंग्य से)* ना तो ये और ना ही वो गास्पार कुछ जवाब दे पा रहा है और तुम मम्मा ?

तेरेसा : *(बदले भाव से)* क्या चाहती हो कि मैं तुमसे क्या कहूँ ?

आउरोरा : कि मेरे पापा इस मौत के लिए ज़िम्मेदार हैं।

तेरेसा : *(सोचती है।)* ज़िम्मेदार ? सभी हर चीज़ के लिए... और इस मौत के लिए... शायद हम सभी बेगुनाह है। सामूएल भी।

आउरोरा : *(रूखाई से)* शुक्रिया। *(आवक्ष मूर्ति की ओर इशारा करती है।)* गास्पार इतने बड़बोले मत बनो। *(अपने पिता से)* लेकिन मैं भी जर्नलिज़्म पढ़ रही हूँ और उस गुनहगार को ढूँढ़ कर रहूँगी जैसे कि तुम चित्रों में कमियाँ ढूँढ़ते रहते हो। सामूएल ने गुस्से में तुम्हारी बेइमानी के लिए कुछ कहा था। शायद अनजाने में ही सही लेकिन वह सही था। मैं वह जानकर रहूँगी।

फ़ाबियो : क्या कहा था ?

आउरोरा : *(इंकार करते हुए)* जल्द ही तुम भी जान जाओगे। मम्मा मुझे दवा दो ! मैं सोने जा रही हूँ।

तेरेसा : *(हाथ पकड़कर)* हाँ, बेटा। तुम आराम करो !

(दोनों चलती हैं। आउरोरा निकलने से पहले रुककर अपने पापा को देखती है। दोनों दायीं ओर से चली जाती हैं। फ़ाबियो अपनी आरामकुर्सी पर बैठने जाता है लेकिन उसके पहुँचने से पहले फ़ोन की घंटी बज जाती है। फ़ाबियो वापस आता है और फ़ोन को शक़ की नज़र से देखता है।)

ब्राउलियो : तुम चाहते हो मैं फ़ोन उठाऊँ ?

फ़ाबियो : नहीं। *(फ़ोन के पास जाकर फ़ोन उठाता है।)* हेलौ... कहो, तुम्हारे ही फ़ोन का इंतज़ार कर रहा था... सचमुच, मैं तो चाहूँगा कि तुम इसकी जाँच पड़ताल करो... [मुझे भरोसा है कि तुम इसे समझोगे] तुम जानते हो कि मैं उसकी पेंटिंग्स को पसंद नहीं करता था और मुझे भरोसा है कि तुम मना नहीं करोगे... मेरी बेटी के साथ उसके संबंध थे, मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार रहूँगा कि अख़बार में इस बारे में कुछ न छपे... शुक्रिया ! तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हारा कितना एहसानमंद हूँ.. वह? तुम अंदाज़ा लगा सकते हो कि वह कैसी होगी। लेकिन तुम इससे दूर रहो। लगता है कि सब साफ़ है : यह कोस्मे की बेवकूफ़ी थी... एक बार फिर से बहुत शुक्रिया ! फिर मिलते है... बाय *(फ़ोन रख देता है, कुछ देर के लिए सोचता है।)*

ब्राउलियो : उम्मीद है कि इस बेचारी बच्ची के साथ जो होना था हो चुका। वह कोस्मे उससे बहुत बड़ा था और वाहियात भी।

फ़ाबियो : *(अपनी आराम कुर्सी पर बैठने जाता है।)* और वह वाहियात आदमी अपनी मौत मर चुका है।

ब्राउलियो : क्या उन्होंने प्यारी आउरोरा को परेशान किया ?

फ़ाबियो : यह तो जब वह बताएगी तभी पता चलेगा... [शुक्र है वह इस घर में रह रही थी उस रात कोस्मे के घर में नहीं थी।] उन्होंने उसे इस मामले से बाहर कर दिया है। *(वेलास्केस की पेंटिंग को देखता है।)*

ब्राउलियो : शुक्र है। अच्छा, अब उसे सोना चाहिए, अगर तुम लोगों को मेरी ज़रूरत हो तो बुला लेना। गास्पार, हम चलें ?

गास्पार : *(उठता है।)* मैं अपना दूध भी ले जाता हूँ। *(दोनों कुछ क़दम दायीं ओर चलते हैं।)*

फ़ाबियो : तुम लोगों को इतनी जल्दी क्यों है ? कुछ देर मेरे साथ बैठो ! *(दोनों बुज़ुर्ग बिना हैरानी से एक-दूसरे को देखते हैं।)* गास्पार, सचमुच तुम तो बिना पीये ठीक से बात भी नहीं कर पाते ?

गास्पार : हाँ, ये... मुझमें... बहुत बड़ी कमी है। मुझे पीना पसंद है और मैं कुछ और... जैसे उन मुक्केबाज़ों के बारे में कहा जाता है ? मुझे याद नहीं .....

फ़ाबियो : हिकारत से ?

गास्पार : यही! हालाँकि मैं नहीं पीऊँगा।

ब्राउलियो : तुम उस पर ध्यान मत दो ! बिना पीये भी वह बहुत गहरी बात कह जाता है।

फ़ाबियो : क्या तुम दोनों की एक और आख़िरी जाम की तलब है ?

गास्पार : लेकिन मैं नहीं पीऊँगा क्योंकि आज शाम, हम...हम...निसेतो से मि...ले...

ब्राउलियो : निसेतो *(सोफ़े पर बैठ जाता है।)*

गास्पार : हाँ, निसेतो *(बैठ जाता है।)*

फ़ाबियो : सुनो गास्पार। यह बेरोज़गारी का कोई दूसरा पहलू था या फिर इसमें भी कोई गहरी बात थी ?

गास्पार : बेरोज़गारी की ? *(हँसता है)* ओह, हाँ...

फ़ाबियो : तुम क्या कहना चाहते हो ?

गास्पार : [क्या फ़र्क़ पड़ता है।] मैं इससे सहमत नहीं हूँ।

ब्राउलियो : मैं भी इस बेरोज़गारी के जाल में फँस गया हूँ। गास्पार ज़्यादा होशियार मत बनो, हमें साफ़ बताओ तुम क्या कहना चाहते हो !

गास्पार : लेकिन मुझे याद नहीं है।.... *(लम्बी चुप्पी)*

फ़ाबियो : लिहाज़ा... चौबीस सालों तक जेल में ?

गास्पार : हाँ, तीन बार। पहली बार ही मैं ब्राउलियो से मिला था।

फ़ाबियो : और तुमने उसकी मदद की। *(घूमता है। कुछ देर बाद आरामकुर्सी पर बैठ जाता है।)*

गास्पार : मुझे मदद करनी ही थी। जब मेरी बहन की मौत हो गई और बाहर से मुझे कुछ नहीं मिला, तो दूसरे लोगों ने मेरी मदद की।

ब्राउलियो : गास्पार, हमेशा ऐसी बातें क्यों करते हो ? मुझे लगता है तुम्हारी और पीने की इच्छा नहीं।

गास्पार : वह कैसे ?

फ़ाबियो : जैसे अब ज़रूरत के मुताबिक।

गास्पार : *(हल्की मुस्कान के साथ।)* शायद मुझ पर वाईन का असर हो रहा है।

फ़ाबियो : कैसे तुम बार-बार उतनी ख़तरनाक लड़ाइयों से जूझते ? यह बेहद क़ाबिलेतारीफ़ है।

गास्पार : क़ाबिलेतारीफ़ नहीं। क्योंकि ...*(संकोच से)* जब कोई... किसी चीज़ के लिए ठान ले... तो वह ऐसा ही करेगा... मेरे जैसे ढेरों लोग हैं।

ब्राउलियो : ढेरों नहीं। मुझमें भी... हिम्मत कहाँ थी।

गास्पार : तुम्हारे साथ एक परिवार था और बावजूद इसके... आज़ादी का डर भी था। *(हँसते हैं।)*

फ़ाबियो : क्या उन्होंने तुम्हें मौत की सज़ा दी थी ?

गास्पार : हाँ। दूसरी बारी में उन्होंने मुझे 'जोसेफ' की तरह टाँग दिया। सिर्फ़ हमें सबक सिखाने के लिए। लेकिन बाद में उन्होंने मेरी सज़ा बदल दी।

ब्राउलियो : *(फ़ाबियो से)* फिर से अपने पुराने ढर्रे पर आ गया।

गास्पार : बारह साल बाद मैं आज़ाद हुआ। तब मैं क्या करता ?

फ़ाबियो : सचमुच गास्पार। क्या तुम्हें आने वाले भविष्य पर वैसा ही यक़ीन था ?

गास्पार : हाँ। वही विश्वास था... अगर शक न होता... तो भविष्य में क्या होता।

ब्राउलियो : *(आह भरता है।)* यही तो बात है।

गास्पार : मेरी अपनी परेशानियाँ हैं... क्योंकि यह दुनिया अब किसी मौत के ज्वालामुखी से कम नहीं है और जो कभी भी फट सकता है। यह भी निश्चित नहीं है कि यह नहीं फटेगा और हम इससे बचना भी नहीं जानते।

फ़ाबियो : आख़िर क्यों तुम्हारे अपनों ने इतने बड़े त्याग के बावजूद भी तुम्हारी मदद नहीं की ?

गास्पार : हाँ उन्होंने किसी समय... मेरी मदद की थी।

फ़ाबियो : बस किसी समय ? तुम अपनी ज़िंदगी गँवा दोगे लेकिन अपनी आदतें नहीं।

ब्राउलियो : हमेशा से यह ऐसा ही रहा है।

गास्पार : मैंने अपनी ज़िदगी नहीं गँवाई है।

फ़ाबियो : अच्छा, मुझे लगता था कि कभी-न-कभी तुम इस नतीजे पर पहुँचे ही होगे कि जिस मुद्दे के लिए तुम लड़ रहे थे उसे पाना नामुमकिन था।

गास्पार : क्योंकि नामुमकिन के लिए ही लड़ना चाहिए। अभी हम अपनी मंज़िल से दूर हैं। तुम्हारी तरह, उसका सिर्फ़ अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

फ़ाबियो : *(चौंक जाता है)* क्या ? *(तेरेसा दायीं ओर से एक प्लेट में बिस्कुट और दूध का गिलास लेकर आती है। रुकती है और उन लोगों को हँसी सुन लेती है।)*

गास्पार : तुम्हारी किताबें, तुम्हारे लेख वह सब नहीं कर सकते जो तुम करना चाहते हो। लेकिन यह इस ज़िंदगी गँवाना नहीं बल्कि उसे जीतना है।

फ़ाबियो : सच ? उसने इसलिए कहा क्योंकि उसने पी रक्खी है...

गास्पार : और मैं इससे उभर रहा हूँ। मैंने हज़ारों बार ऐसी बेवकूफ़ाना बातें कही हैं। *(उठता है।)*

ब्राउलियो : *(खुश होकर)* तुम अच्छी तरह जानते हो कि नहीं।

तेरेसा : अपना दूध तो ले लो।

गास्पार : शुक्रिया। मैं इसे अपने कमरे में लेकर चला। *(थोड़ा मुड़कर)* सोने चले बुढ़ऊ। *(ब्राउलियो उठता है, तेरेसा से)* बिटिया कैसी है ?

तेरेसा : वह तो खर्राटे भर रही है।

गास्पार : मुझे खुशी है। कल और भी शांत होगी। *(अपने दूध के साथ बायीं ओर चला जाता है। सिर पर हाथ फिराकर।)* कितनी अजीब बात है... यहाँ कितनी बेरोज़गारी है...

फ़ाबियो : फिर से बेरोज़गारी ? *(उठता है।)*

गास्पार : आह... यह तो डर है... काम खोने का... *(हँसता है।)* जो कि मेरे पास नहीं है। लेकिन ज़्यादा देर तक मैं बेरोज़गार नहीं रह सकता।

तेरेसा : गनीमत है इस घर में कोई बेरोज़गार नहीं।

गास्पार : लेकिन डर, तेरेसा डर...

तेरेसा : किसका ?

गास्पार : आख़िर इस पेंटर को डर होगा।

फ़ाबियो : मैंने पैसा कमाया है।

गास्पार : तुम्हारी तरह। तुम दोनों को... तुम्हारी शोहरत ने ...पैसा दिया है। अगर शोहरत

न हो तो बेरोज़गारी...

तेरेसा : चलो, अब ऊपर जाओ।

गास्पार : अगर यह औरतों की वजह से नहीं हुआ होता... ओह ! तुम सब एक जैसी हो... तेंदुए की तरह फुर्तीली।

फ़ाबियो : *(मज़ाक और धीमी आवाज़ में, परेशान तेरेसा से)* ये फिर से शांत हो जाएगा।

गास्पार : सुबह मिलते हैं। *(अपना दूध लेकर बायीं ओर से निकल जाता है। दूर से कमरे का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनाई देती है।)*

तेरेसा : *(ब्राउलियो से)* अगर तुम खाना नहीं चाहते तो मैं तुम्हारे लिए दूध का दूसरा गिलास ला देती हूँ।

ब्राउलियो : ठीक है। *(सामने की ओर जाता है और लाइब्रेरी में खो जाता है, आवक्ष मूर्ति को प्यार से छूता है। बाद में उन दोनों की ओर देखता है।)*

तेरेसा : *(अपने पति से)* तुम काम करने जा रहे हो ?

फ़ाबियो : हाँ। *(बायीं ओर का लैंप जलाता है।)*

तेरेसा : तुम्हारे लिए यहीं कुछ ला दूँ ?

फ़ाबियो : रहने दो। मैं बाद में कुछ खा लूँगा।

तेरेसा : तो हम कुछ देर बातें करें ?

फ़ाबियो : *(उसे देखता है।)* जैसा तुम कहो।

ब्राउलियो : *(मज़ाक में)* पागल।

फ़ाबियो : क्या कहा ?

ब्राउलियो : *(आवक्ष मूर्ति के पीछे से आवाज़ बदल कर बोलता है।)* पागल, ब्राउलियो मेरे बारे में जो कहा करता था उस पर यक़ीन नहीं...

फ़ाबियो : *(प्यार से)* बंद करो, जाकर सो जाओ मसख़रे कहीं के !

ब्राउलियो : *(दायीं ओर से जाकर बड़बड़ाता है और हँसने लगता है।)* गास्पार सही है ! *(बीच की बत्ती बंद कर चला जाता है। फ़ाबियो एक सिगरेट जलाता है और अपनी आरामकुर्सी पर बैठ जाता है। तेरेसा एक कुर्सी पास खींच लेती है।)*

फ़ाबियो : लगता है कि आउरोरा पर दवा का असर हो गया है...

तेरेसा : उसने दवाई नहीं ली।

फ़ाबियो : क्यों ? क्यों नहीं ली ?

तेरेसा : *(बैठ जाती है।)* वह आराम से सो रही है। वह इतनी थकी हुई थी कि उसने अपने कपड़े तक नहीं बदले।

फ़ाबियो : तुम भी थक गयी होगी।

तेरेसा : और तुम ?

फ़ाबियो : मैं तुम्हें बता दूँगा। इस मुसीबत की मौत की ख़बर से मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

तेरेसा : शायद हमारे लिए परेशानी खड़ी करे।

फ़ाबियो : नहीं क़ानूनी तौर पर क़तई नहीं।

तेरेसा : हमें। मुझे डर है... आउरोरा ! यह हादसा उसके लिए बहुत नुक़सानदेह है। वह उस पागल के लिए दीवानी थी।

फ़ाबियो : वह उसके लिए दीवानी थी। लेकिन वह बेवकूफ़ नहीं है। उसे कुछ समय दो।

तेरेसा : मुझे चिंता है कि कहीं वह उसकी मौत और तुम्हारी आलोचनाओं में कोई ताल्लुक जोड़ने में न लग जाए... *(जल्दी से उसे देखती है।)* मैं ख़ुद से सवाल करती हूँ कि अगर तुम उस पेंटर के मामले में कुछ कम कठोर होते... आख़िर उसमें भी कोई हुनर था।

फ़ाबियो : तुम मुझे यह बताना चाहती हो कि तुम उसे पसंद करती थी।

तेरेसा : ओह...

फ़ाबियो : तुम उसे बेहद पसंद करती थी।

तेरेसा : बहुत से लोग उसे पसंद करते थे।

फ़ाबियो : ठीक है। मेरी ही ग़लती है। लेकिन *(ज़ोर देते हुए)* मेरे निष्पक्ष विचार तुम मेरे लेखों में पढ़ ही चुकी हो। और कुछ ?

तेरेसा : *(प्यार से उसकी बाँह पकड़ती है।)* ओ उतावले इंसान नाराज़ मत हो। तुम्हारा काम कितना मुश्किल है मैं यही सोचती रहती हूँ।

फ़ाबियो : तुम आउरोरा का साथ नहीं दोगी ...

तेरेसा : क्या बकवास है !

फ़ाबियो : तुम उन बातों को बढ़ावा नहीं दोगी जो आउरोरा को चोट पहुँचा सकती है। तुमने सोचा है वह क्या कहेगी...?

तेरेसा : *(तभी)* सुनो : वह क्या कहेगी...? चुप हो जाते हैं।

फ़ाबियो : *(हँसते हुए)* एक ओर टोटका ?

तेरेसा : इत्तिफ़ाक़ है, मेरे मुताबिक तुम इस बात पर कहना कि सामूएल कोस्मे ने बिना सोचे-समझे ऐसा कह दिया होगा।

फ़ाबियो : बकवास है यह सब। और आउरोरा तो किसी भी बेवकूफ़ाना बात पर लट्टू हो गयी होगी... तुम्हें शक है कि वह कैसे अपने आप को संभालेगी ?

तेरेसा : शक से नहीं ।

फ़ाबियो : वैसे तुम उससे ऐसा सवाल मत करना। उसके दिमाग़ी संतुलन के लिए बेहतर होगा कि वह उसे भूल जाए। *(अपने पन्नों में फिर खो जाता है। ख़ामोशी।)*

तेरेसा : क्या तुम्हें बहुत सारा काम निपटाना है ?

फ़ाबियो : शायद।

तेरेसा : तुम्हारे इलांदेरास पर।

फ़ाबियो : हाँ !

तेरेसा : ठीक है। मैं तुम्हें अकेला छोड़ देती हूँ। *(उठती है, कुर्सी को उसकी जगह पर वापस रख पेंटिंग की ओर जाती है।)* अब वह बुरी नहीं लग रही। मैं थकी हुई हूँ शायद इसलिए मुझे लग रहा है कि आराक्ने थोड़ी और सिकुड़ गयी है।

फ़ाबियो : बकवास बंद करो और जाकर सो जाओ।

तेरेसा : मैंने आउरोरा की दवा मेज़ पर रख दी है, अगर वह उठ जाए। अगर मैं सो जाऊँ तो जब भी आओ मुझे उठा देना। मैं देखना चाहती हूँ कि उसकी रात कैसे बीतेगी।

फ़ाबियो : बेफ़िक्र होकर जाओ।

तेरेसा : गुडनाइट !

फ़ाबियो : गुडनाइट ! *(तेरेसा जाने को होती है। रुक कर पेंटिंग को ध्यान से देखने लगती है।)*

तेरेसा : और जब आराक्ने एक मकड़ी में तब्दील हो रही थी तो बुनकरों ने क्या कहा ?

फ़ाबियो : शायद... हँसने लगे होंगे और जीत के गीत गाए होंगे।

तेरेसा : लेकिन आराक्ने तो ज़िंदा है।

फ़ाबियो : यह साबित होने पर कि उसकी टेपेस्ट्री[13] अधूरी है, वह बेजान-सी हो जाती है।

तेरेसा : *(उसे कुछ दुःख के साथ देखती है।)* चलो, मुर्दों की बातें नहीं करते। अपनी घड़ी देखती है। हे भगवान ! कितनी देर हो गयी है ! और देर मत करो ! तुम्हें आराम करना चाहिए।

---

[13] दीवारदरी, चित्रपट।

(दायीं ओर से चली जाती है। खिड़की से धीरे-धीरे वाग्नेर के गीत की दूसरी कड़ी की आवाज़ आने लगती है। उसी समय दायीं ओर पहले छोर से आता ब्राउलियो दिखाई देता है। वह सोफ़े पर बैठ जाता है। प्रकाश उस पर केंद्रित हो जाता है। फ़ाबियो उसकी आँखों में देखता है। कमरे में नीम अँधेरा और पेंटिंग के रंग फिर से धूमिल हो जाते हैं। फ़ाबियो समझने की कोशिश करता है और कुछ लिखता है। अचानक पन्नों को छोड़ अपने पिता की ओर देखता है जो उसे नहीं देख रहे है।)

फ़ाबियो : अगर उसे आराक्ने को देखकर सामूएल कोस्मे की याद आती है तो यह उसकी ग़लतफ़हमी है। वह तो मैं हूँ जो आराक्ने की तरह मकड़ी बन गया हूँ। अगर वह मुझे कला की देवी मानती है जिसने कोस्मे को तबाह कर दिया। तो उसका ऐसा सोचना ग़लत है। वह पालास हो सकती है लेकिन मुझे आराक्ने नहीं बनना। मुझे इससे बचना होगा वैसे ही जैसे तुम बच निकले।

ब्राउलियो : मैं ?

फ़ाबियो : तुम्हें क्या लगता है कि पहले मुझे उसका अहसास नहीं हुआ ? तुम यह नासमझी का दिखावा कर रहे थे कि कोस्मे मेरे बारे में क्या कह सकता था ? तुम भी वही सोचते थे।

ब्राउलियो : क्या तुम्हें यक़ीन है ?

फ़ाबियो : पापा, हम दोनों ही उस खूबी से वाक़िफ़ है। पूरी ज़िंदगी मैंने इस कमी को छुपाए रखा है। भारी बोझ की तरह। *(बेबसी से।)* जिंदगीभर के लिए इस दर्द को भला तुमने क्यों चुना ?

ब्राउलियो : मैं ... तुम्हें प्यार करता था और तुम्हारी माँ तब तक मर चुकी थी। मैंने वही किया जो वह करती।

फ़ाबियो : नहीं मुझे प्यार करने के लिए मेरी मम्मी मुझे सच से वाक़िफ़ कराती और वह बिल्कुल वही करती। गास्पार ने ठीक ही कहा : औरतें बहुत समझदार और समर्थ होती है ... *(ब्राउलियो आह भरता है।)* लेकिन एक मामूली इंसान यह कोशिश करता है कि उसकी

औलाद लायक़ बने या कम-से-कम एक कामयाब इंसान बनें जिसे हासिल करने के लिए वह दूसरा रास्ता भी अपनाता है। तुमने तो मेरा इस्तेमाल किया है।

ब्राउलियो : *(डर)* यह भी प्यार है।

फ़ाबियो : बड़ी बेहूदा कोशिश ! तुमने मुझे ख़ासे धोखेबाज़ में तब्दील कर दिया है।

ब्राउलियो : ऐसा मत सोचो।

फ़ाबियो : अगर मैं पालास होता तो मैं भी एक बेहूदा और दकियानूसी देवता होता। *(अस्पष्ट आवाज़, नींद में होता है।)* जबकि सामूएल कोस्मे आराक्ने ...

ब्राउलियो : यह तो सिर्फ़ एक हादसा है। एक बेवकूफ़ी। बेवकूफ़ मत बनो ... दरवाज़े से दूर हो जाओ।

फ़ाबियो : *(हल्की नींद में, उठी हुई गर्दन)* क्या...?

ब्राउलियो : आराक्ने सिकुड़ रही है। तुमने उसे देखा ?

फ़ाबियो : *(बंद आँखों से)* कहाँ है वह ?

ब्राउलियो : अभी वह मक्खी से थोड़ी बड़ी है। उसके पैर धागे जैसे लम्बे हैं...

फ़ाबियो : मैं उसे कुचल दूँगा !

ब्राउलियो : अभी उसे जाल बुनना है। 'धागे से वह फंदा बनाएगी' समझे ! लाल, हरे, पीले ...रंग के धागे उसके पेट से निकलेंगे।

फ़ाबियो : मैं उसके पेट को कुचल दूँगा।

ब्राउलियो : ऐसा मत करना । 'पेट भरने के बाद इंसान नाचने तक लगता है।' हाँ और बड़ा स्याह जाल। जिसमें वह सुकून आराम से सोएगी।

फ़ाबियो : *(आँखें बंद किए हिल रहा है।)* मैं सोने जा रहा हूँ। मुझे बड़ी देर से नींद आ रही है।

ब्राउलियो : बड़ी देर से, अपनी घड़ी देखो। *(फ़ाबियो मुश्किल से उठकर अपना सामान उठाता है।)* जाल बड़ा और काला है। *(जब ब्राउलियो उठकर फ़ाबियो के साथ जाता है तो उस पर केन्द्रित रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगती है। फ़ाबियो धीरे-से अपना सिर ऐसे घुमाता है जैसे वह अपने पिता को उठते हुए देख रहा है। सामने का दरवाज़ा खुलता है। अंदर हल्की-सी रोशनी है। पेंटिंग अपने सालों के स्याह रंगों में खो जाती है। ब्राउलियो उसे देखता और कमरे में चला जाता है। दरवाज़ा बंद हो जाता है। लम्बी ख़ामोशी। इस बीच गहरी नींद में सोये फ़ाबियो के खर्राटों की आवाज़ आती है। कमरे में थोड़ी रोशनी और थोड़ा अंधेरा है। धीरे-धीरे रोशनी सामान्य हो जाती है। धुँधलेपन से अस्पष्ट पेंटिंग के रंग सामान्य हो जाते हैं। दायीं ओर से आउरोरा बार-बार पीछे देखती हुई दाख़िल होती है और मुख्य कमरे की बत्ती जलाती है। अपने पिता को सोता हुआ देख अचानक चौंक जाती है। कुछ सेकेण्ड तक देखती है। बिना नज़र हटाए और बिना आवाज़ किए किताबों के ख़ानों तक जाती है। कुछ किताबें निकालती है जो कला संबंधी लग रही हैं। दूसरी किताब उसका ध्यान खींचती हैं। किताब को निकाल लेती है, रखने से पहले जल्दी-जल्दी पन्ने पलटती है। दायीं ओर से नाईटी पहनी तेरेसा का प्रवेश। वह हैरान रह जाती है।)*

तेरेसा : *(धीमी आवाज़ में।)* तुमने दवाई क्यों नहीं ली ?

आउरोरा : *(धीमी आवाज़ में)* मुझे बहुत कुछ सोचना है।

तेरेसा : तुमने पाजामा भी नहीं पहना !

आउरोरा : क्या फ़र्क़ पड़ता है।

तेरेसा : तुम्हें अंदाज़ा भी है क्या समय हुआ है !

आउरोरा : सुबह होने को है।

तेरेसा : *(दुःख के साथ सिर पर हाथ मारते हुए)* तुम्हारे पापा पूरी रात यहीं सोते रहे। *(फ़ाबियो की ओर जाती है। आउरोरा पुकारती है।)*

आउरोरा : उसे मत उठाओ ! यहीं सोने दो।

तेरेसा : तुम पागल हो !

आउरोरा : *(निश्चय के साथ)* तब तक रुको जब तक मैं चली न जाऊँ।

तेरेसा : क्यों ? *(आउरोरा कोई जवाब नहीं देती और किताबें उठा लेती है। तेरेसा उसके पास जाती है।)* क्या तुम्हें इस वक़्त इन किताबों की ज़रूरत है।

आउरोरा : *(होठों पर उँगली रखते हुए)* चुप, उसे मत उठाओ। *(जाती है।)*

तेरेसा : तुम्हारे लिए नाश्ता बना दूँ ?

आउरोरा : शश्श...! मैं खा लूँगी। *(दायीं ओर से चली जाती है। वहीं खड़ी हुई तेरेसा उसे जाते हुए देखती है। कुछ याद करती हुई लाइब्रेरी में जाती है और किताबों को ठीक करती है। उसका ध्यान गैलरी और अपने पति के बीच बँट जाता है। बिना कुछ सोचे फ़ाबियो के पास जाती है।)*

तेरेसा : *(धीरे-से उसे छूकर)* फ़ाबियो...फ़ाबियो...फ़ाबियो *(कोहनी के बल थोड़ा उठता है। वह फ़िर से उसे हिलाती है।)*

फ़ाबियो : क्या ? ... मैं सोया ... *(अंगड़ाई लेता है।)*

तेरेसा : तुम्हें पता है कि तुम कितने घंटों से यहाँ पड़े हो ? बिस्तर पर चलो।

फ़ाबियो : क्या ? *(अपनी घड़ी देखता है)* अभी क्या समय हुआ है ?

तेरेसा : दिन निकल आया है।

फ़ाबियो : *(उठता है, बेतरतीब ढंग से।)* आउरोरा ठीक है ?

तेरेसा : हाँ। तुम फ़िक्र मत करो। *(फ़ाबियो अलसाता हुअ सामने तक जाता है, रुकता है।)*

फ़ाबियो : मुझे लगता है सोते हुए मैंने तुम्हें किसी से बात करते हुए सुना ... तुम्हारे साथ यहाँ कोई था ?

तेरेसा : तुम्हें ऐसा लगा ?

फ़ाबियो : लगता है मैं कुछ ज़्यादा देर सो गया ... पता नहीं कैसे ?

तेरेसा : ऐसा होता है। *(उसे ले जाती है। कमरे की बत्ती बंद कर देती है। दोनों दायीं ओर से चले जाते हैं। मंच ख़ाली। लास इलांदेरास गीत के तीसरे भाग के मधुर शब्दों की धीमी-धीमी आवाज़। जैसे-जैसे सुरों की आवाज़ तेज़ होती है वैसे-वैसे धीरे-धीरे आती रोशनी और कम हो जाती है। कुछ पल बिल्कुल अंधेरा और फिर तेज़ सुरों की आवाज़ अचानक बंद।)*

(एकाएक रोशन सुबह। सामने की ओर देखती मेज़ पर बैठी हुई आउरोरा। उसके सामने रखी हुई कुछ बंद किताबें। लंबी ख़ामोशी। नाईट सूट पहने हुए हाथ में कॉफ़ी का कप लिए हुए दायीं ओर से आता फ़ाबियो।)

फ़ाबियो : तुम यहाँ कैसे ? मुझे लगा कि तुम सो रही हो।

आउरोरा : अब तो देख लिया न !

फ़ाबियो : आज क्लास जाओगी ?

आउरोरा : पापा, तुम दिन में सपने देख रहे हो ? मेरे स्कूल में भी छुट्टियाँ चल रही है।

फ़ाबियो : हाँ, ठीक कहा। *(अपनी कॉफ़ी का कप ख़त्म कर एक ओर रख देता है। अपने कपड़ों में सिगरेट टटोलता है।)* अब तुम ठीक हो ? कैसा महसूस कर रही हो ?

आउरोरा : बहुत अच्छा।

फ़ाबियो : कितनी शांति है ?

आउरोरा : हाँ।

फ़ाबियो : तुम्हारी मम्मी अब तक सो रही है ? तुम्हारे लिए कॉफ़ी लाऊँ ?

आउरोरा : मैंने पी ली। मैंने दादाजी और गास्पार को नाश्ता भी दे दिया है। वे दोनों बाहर गए हैं।

फ़ाबियो : शाबाश ! बहुत अच्छे ! *(सिगरेट जलाता है। आउरोरा की फुर्ती को देख बहुत खुश होता है।)* तुम बाहर जा रही हो क्या ?

आउरोरा : अभी नहीं, शायद बाद में। *(गैलरी की ओर देखती है।)*

फ़ाबियो : *(अपनी आराम कुर्सी के पास जाकर पन्नों को उठाता है।)* मैं काम करने जा रहा हूँ। लेकिन, अगर तुम चाहो तो हम दोनों थोड़ी देर बाहर सैर को जा सकते हैं। आराम से बातें करने के लिए ...

आउरोरा : *(स्तब्ध)* लेकिन मैं अभी नहीं जाऊँगी।

फ़ाबियो : *(चेहरा उतर जाता है।)* ठीक है फिर मैं अपने कमरे में जाता हूँ। *(पन्नों को झाड़ता है।)* यह एक अच्छी शुरूआत है। *(सामने के दरवाज़े की ओर जाता है।)* अगर तुम तय कर लो तो मुझे बताना। *(दरवाज़ा खोलता हैं।)*

आउरोरा : *(बिना उसे देखे)* हम दोनों यहाँ भी बातें कर सकते हैं।

फ़ाबियो : *(उसकी ओर कुछ क़दम बढ़ाता है, फिर से खुश)* तुम चाहती हो कि हम बातें करें ?

आउरोरा : *(हँसते हुए, उसे देखते हुए)* अगर तुम्हें कोई परेशानी न हो...

फ़ाबियो : अभी इसी वक़्त ?

आउरोरा : ठीक है, अगर तुम्हें लिखना हो ... *(पन्नों को देखते हुए)* वो कुछ देर इंतज़ार कर सकते हैं। *(पन्नों को वापस मेज़ पर रख, वापस मुड़कर आउरोरा के पास जाता है। इसी बीच)* दरअसल, ऐसा है मुझे स्कूल का कुछ काम करना है और इसी सिलसिले में तुमसे मदद लेनी थी। *(अपना हाथ किताबों पर रखती है।)*

फ़ाबियो : बहुत अच्छा ! हमेशा काम करते रहो। विषय क्या है ? *(रखी हुई किताबों को देखता है।)* कला ?

आउरोरा : पेंटिंग से जुड़ी। *(वह घबरा जाती है। फ़ाबियो भाँप जाता है।)*

फ़ाबियो : *(संयमित होकर)* चलो कहो।

आउरोरा : मेरे पास बैठो। *(फ़ाबियो की त्योरी चढ़ जाती है। लेकिन वह भाग कर एक कुर्सी लाता है और उसके साथ बैठ जाता है।)* मुझे तकनीकी तौर पर कुछेक पेंटिंग्स की आलोचना करनी है। समझे ?

फ़ाबियो : हाँ।

आउरोरा : लेकिन मेरे पास अल्फ़ाज़ नहीं है। देखो *(एक किताब खोलकर उसमें कुछ ढूँढ़ती है।)* ये वाली। *(उसे एक रंगीन पेंटिंग दिखाती है।)*

फ़ाबियो : *(हँसता है।) एल एक्सपोलियो देल ग्रेको*[14] । एक मास्टरपीस है !

आउरोरा : क्या बिना बढ़ाए-चढ़ाए यह कहा जा सकता है कि इस लिबास में लाल रंग सामान्य से कुछ फ़ीका है ?

फ़ाबियो : बिल्कुल, क्योंकि इस लाल रंग में गाढ़ापन है न कि नारंगी, तो भी कुछ जगहों पर इसमें चटक है।

आउरोरा : कुल मिलाकर प्रभाव पैदा करने के लिए।

फ़ाबियो : एकदम सही।

आउरोरा : जब मैं छोटी थी तब तुमने मुझे यह बताया था जो मैं अभी भी नहीं भूली हूँ लेकिन यहाँ कुछ रंगतों की अजीब संगति है जिसके बारे में पता नहीं कैसे बताया जाए ! जैसे इसे देखो। इस रंग को हम भला क्या नाम दे सकते हैं ?

फ़ाबियो : आउरोरा, कई बार रंगों का इस्तेमाल फ़रेब देने जैसा होता है।

आउरोरा : यह कहीं बेहतर है, नहीं ?

फ़ाबियो : जैसा यह यहाँ से दिख रहा है, मैं इस शेड को चीकट सलेटी कह सकता हूँ।

आउरोरा : *(हताश)* ठीक। क्या बेहूदगी है ! *(जल्दी से कुछ पन्ने पलटती है।)* और ये ? इस परदे का रंग।

फ़ाबियो : अच्छा... हूं हं हूं इसमें कई रंगों की रंगत है...

आउरोरा : क्या हर एक को एकदम सही नाम दिया जा सकता है ?

---

[14] विस्तार के लिए देखें परिशिष्ट

फ़ाबियो : हमेशा तो नहीं ... कुछ ऐसे अनाम शेड्स भी होते हैं जो अलग-अलग नज़रिये से अलग-अलग दिखाई देते हैं।

आउरोरा : *(उत्तेजित)* तो इस बार एक आसान ! (कुछ पन्ने पलटती है।) इस ब्लाउज़ के रंग को क्या कहेंगे ?

फ़ाबियो : *(बिना दिलचस्पी के साथ।)* ये तो तुम अच्छी तरह जानती ही होगी।

आउरोरा : तुम बताओ ! *(ख़ामोशी।)*

फ़ाबियो : तुम यह खेल क्यों खेल रही हो? *(ख़ामोशी)*

आउरोरा : *(झट से किताब बंद कर देती है।)* एक और बेहदगी जिस पर मुझे शर्म भी आएगी। तुम उन पेंटिंग्स के बारे में बहुत जानते हो, ख़ासतौर पर तब जब वह मशहूर हों। लेकिन अब बिना किसी चाल के। अब मैं अपने कमरे से तुम्हारे लिए रंगों का एक चार्ट लाऊँगी जिसके शेड्स साधारण और सजीव हैं। और तुम एक-एक करके मुझे सबके नाम बताओगे।

फ़ाबियो : *(पीला पड़ जाता है।)* नहीं।

आउरोरा : हाँ !

फ़ाबियो : मैं नहीं जानता तुम क्या करने की कोशिश कर रही हो लेकिन मैं यह बचकाना और बेहूदा टेस्ट नहीं दूँगा। *(उठता है और गुस्से में चलता है।)*

आउरोरा : फिर से मेरा विश्वास जीतने के लिए भी नहीं ?

फ़ाबियो : ओह ! वह तो मैं भूल ही गया ? मैं अपने आपको एक ऐसे सनकी इंसान के हाथ में नहीं सौंपूँगा जो अपना विश्वास जीतने के लिए मेरी भावना को ठेस पहुँचाए। *(मेज़ से अपने पन्ने उठाता है और सामने की ओर मुड़ जाता है।)*

आउरोरा : तो ये सच है।

फ़ाबियो : *(तमतमाया हुआ चेहरा, रुक जाता है।)* क्या सच है ?

आउरोरा : *(उठती है।)* तुमने इसलिए मना किया क्योंकि तुम रंगों में अंतर करना नहीं जानते। *(फ़ाबियो सिहर जाता है। कुछ देर तक एक-दूसरे को देखते हैं।)*

फ़ाबियो : *(गला साफ़ करते हुए)* उम्मीद है कि ये वही है जो सामूएल कोस्मे ने मेरे बारे में कहा था ...

आउरोरा : उसने गुस्से में भरकर कहा था : तुम्हारे पापा मुझे कलरब्लाइंड[15] लगते हैं। उसे पता था कि यह सच है।

फ़ाबियो : तुमने इसे सच मान लिया ?

आउरोरा : अगर तुम्हें ख़ुद को साबित करने में कोई दिक़्क़त नहीं होती तो मैं नहीं मानती।

फ़ाबियो : कलरब्लाइंड! *(हँसता है।)* कलरब्लाइंड! *(ज़ोर से ठहाका मारकर हँसता है।)* नहीं! कुछ साबित करने की ज़रूरत नहीं। मैंने जो मुक़ाम हासिल किया है उससे बड़ा सबूत और क्या होगा !

आउरोरा : तुम्हें तो हँसना तक भी नहीं आता।

फ़ाबियो : *(खीजते हुए)* चलो बिना हँसे ! क्या तुम ये भूल गयी हो कि तुम्हारे पापा पेंटिंग के जाने माने और नामवर इतिहासकार हैं ? तुम्हें क्या लगता है कि अगर मेरी नज़र में ऐसी वैसी कोई खोट होती तो मैं यहाँ तक पहुँच पाता ? क्या मैं एक शब्द भी सही लिख पाता ? तुमने यह कैसे मान लिया कि इतने सालों से मैं लोगों को पागल बना रहा हूँ ? यह तुम्हारी ज़िंदगी की सबसे बेवकूफ़ी भरी बात है।

आउरोरा : हाँ, लेकिन मैं इसे समझना नहीं चाहती।

फ़ाबियो : क्योंकि ये वाहियात और नामुमकिन है। *(अकड़कर चलता है। कहीं तेरेसा ने इन दोनों की बातें सुन न ली हो, इस डर से गैलरी की ओर देखता है।)* आउरोरा, तुमने मेरे बारे

---

[15] नेत्र रोग जिसमें रंगों की निश्चित पहचान नहीं होती।

में बहुत ही घटिया बात सोची है। मैं इसके लिए तुम पर कोई दोष नहीं मढ़ना चाहता ... यह तुम्हारा दर्द ही है जो शक और गुस्से के रूप में तुम्हारे अंदर भरा हुआ है। *(प्यार से उसके कंधे पर हाथ रखता है।)* लेकिन तुम बहुत ही समझदार और सुलझी हुई लड़की हो .. . तुम अपनी ग़लती सुधार ही लोगी। *(आउरोरा उदासीन भाव से अपने आपको धीरे से छुड़ाकर कला की दो किताबों को उनकी जगह पर रख देती है। आकार में छोटी तीसरी किताब को मेज़ पर ही छोड़ देती है।)* ये ठीक है। काश, सब ठीक हो जाए। *(फ़ाबियो अनमने भाव से तीसरी किताब को उठाता है और वापस रख देता है। आउरोरा वापस आती है और फ़ाबियो उसे ध्यान से देख रहा है यह देखकर कि आउरोरा किताब नहीं उठा रही, फ़ाबियो किताब को उठाकर देखता है और हैरान रह जाता है।)* यह तुमने कहाँ से निकाली ?

आउरोरा : ये यहीं रखी थी।

फ़ाबियो : *(किताब को मेज़ पर फेंक देता है और वहाँ से हट जाता है।)* तो इसे इसकी जगह पर रख दो।

आउरोरा : पहले इसे देख तो लो।

फ़ाबियो : इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है।

आउरोरा : लेकिन मेरी है *(किताब को उठाकर उसका शीर्षक पढ़ती है।)* 'दृष्टि विज्ञान।'

फ़ाबियो : विषय, जो मुझे जानना चाहिए !

आउरोरा : *(किताब खोलती है।)* कुछ या सभी रंगों की दृष्टिहीनता। जिसे आमतौर पर 'कलरब्लाइंडनेस' कहा जाता है।

फ़ाबियो : *(बनावटी हँसी हँसता है।)* अच्छा, यह किताब दृष्टि दोष पर है। *(आँखें फेरते हुए)* मुझे यह विषय पसंद आया।

आउरोरा : आख़िर यह ढोंग किस बात के लिए ? इसे पहचानो।

फ़ाबियो : *(वह आहिस्ता से आउरोरा की ओर जाता है।)* इसमें जानने लायक़ कुछ नहीं है और तुमने कुछ साबित नहीं किया है। [ना तो ऐसा है ना ही सही होने के बावजूद दिखा पाओगी, क्योंकि मैं ख़ुद को इस छान-बीन के लिए नहीं सौंपूँगा।] *(आउरोरा की तल्ख़ीभरी घुरघुराहट)* यह बहुत ही घटिया था और मैं दोबारा इस बारे में नहीं सुनना चाहता। *(आउरोरा किताब उठाती है और उसे उसकी जगह पर रख देती है। फ़ाबियो उस पर से नज़र नहीं हटाता।)* मेरी तुम से गुज़ारिश है कि तुम *...(वह वापस आती है और वह उसे देखता है।)* इस बेहद मनगढ़ंत बात का अपनी मम्मी से ज़िक्र करने की ग़लती मत करना, ऐसा करके तुम उसे बहुत तकलीफ़ पहुँचाओगी और जिससे तुम्हें भी तकलीफ़ होगी [कम-से-कम अपनी मम्मी के सुकून का ख़याल रखना।]

आउरोरा : *(कुछ देर बाद)* मैं जा रही हूँ। *(अपना बैग उठाती है और बायीं ओर मुड़ती है।)*

फ़ाबियो : कहाँ जा रही हो ?

आउरोरा : फ़िक्र मत करो। अभी मैंने ख़त्म नहीं किया है। मैं लंच के लिए वापस आऊँगी। *(बायीं ओर से चली जाती है। काँपते हुए फ़ाबियो दूसरी सिगरेट जलाने की कोशिश करता है। दूर से, आउरोरा द्वारा ज़ोर से दरवाज़ा बंद करने की आवाज़ आती है। बिना जलाए फ़ाबियो सिगरेट को राखदानी में फेंक देता है। धीरे से वाग्नेर के इलांदेरास के चौथे अंश का मधुर संगीत सुनाई देता है। इसी बीच, दायीं ओर से ब्राउलियो आता है और शून्य में देखते हुए अपनी जगह पर बैठ जाता है। मंच और पेंटिंग के रंग धूसर हो जाते है। फ़ाबियो पेंटिंग को देखता है। इसके बाद वह अपनी आरामकुर्सी पर बैठ जाता है। उसकी नज़र दूर कहीं खो जाती है।)*

फ़ाबियो : यह अंत है।

ब्राउलियो : *(दुःखी)* हिचकिचाओ मत !

फ़ाबियो : ये किया है मैंने। झूठ और बस झूठ। लेकिन आउरोरा ने मुझे पकड़ लिया। ख़ुद का ज़ोरदार बचाव करने के बावजूद उसने मेरा विश्वास नहीं किया और मैं एक डरपोक... नासमझ ... वह तेरेसा को बता देगी। ना तो वह चुप होगी और ना ही इस बारे में चुप

रहना चाहेगी। वह अपनी मम्मी की आँखें खोल देगी। वो प्यारी आँखें, जिन्हें मैंने बड़ी तकलीफ़ से बंद करवा रखा था। पापा, मैं बुरी तरह काँप रहा हूँ , देखो मेरे हाथ ! एक बेवकूफ़ बर्बाद इंसान ! मैं बर्बाद हो रहा हूँ। जो राज़ बड़े से बड़े सयाने लोग भी नहीं भाँप सके उसे एक बच्ची ने जान लिया।

ब्राउलियो : शायद वह कुछ ना कहे।

फ़ाबियो : मैं नासमझ हूँ जो तुम्हारे कहने पर ख़ुद को झूठी तसल्ली देने के लिए में ऐसा सोच लूँ और तब तेरेसा मेरा असली रूप देख लेगी। झूठ। दग़ाबाज़। मैं उसकी इस बदली हुई नज़र का सामना नहीं कर पाऊँगा। *(लम्बी ख़ामोशी।)*

ब्राउलियो : जब तक नहीं...

फ़ाबियो : जब तक नहीं... अगर मैं अपनी बात पर डटा रहूँ। नहीं। मैं ऐसी उम्मीद नहीं रख सकता । मैं तेरेसा को खो दूँगा। मैं यह जानता हूँ। वह बड़ी सच्ची है, जल्द ही मुझमें छिपे घिनौने इंसान को देख लेगी। मकड़ी भी मारे शरम के सिकुड़ गयी है। *(कड़वाहट भरी मुस्कान।)* वह पालास आतेनेआ है जो मुझे अपने पावों तले रौंद देगी। *(फिर हँसता है।)* कलरब्लाइंड। एक वाहियात इंसान जो एक ऐसी अंधेरी गुफा में रहता है जहाँ लाल और हरा आबनूसी है। जहाँ पीला रंग धुँधला गंदुमी है, जहाँ नीला-काला है। दूसरों को बेवकूफ़ बनाने के लिए कितनी चालाकी ! जो मैं नहीं देख सकता उसका वर्णन करने की कोशिश। किताबों के ढेर, ताकि कोई ग़लती न हो। आँकड़ों को याद रखने और अपने सूनेपन को दूर करने की लगातार कोशिश। हमेशा सावधान रहना मेरे लिए जेल जैसा हो गया। मैं अपने डर से बढ़कर कुछ नहीं हूँ। हमेशा सबके सामने बेपर्दा होने का डर। *(ग़ुस्से से उठता है।)* [और तुम भी जिससे मैंने कभी वैसे बात नहीं की जैसी करनी चाहिए थी।] क्यों तुमने मुझसे बात नहीं की ? अगर तुम यहाँ मेरी जगह होते तो क्या जवाब देते ?

ब्राउलियो : एक बच्चे की सही परवरिश कैसे की जाए ? अगर मैंने तुमसे साफ़-साफ़ बात की होती तो क्या तुम दूसरी परेशानियों का रोना रोते ?

फ़ाबियो : मैं तुमसे बात क्यों नहीं करता ?

ब्राउलियो : तुम ख़ुद को धोखा दे रहे थे।

फ़ाबियो : और तुम ख़ुद को। तुमने मुझसे वह छुपाया जो तुम मुझसे बेहतर जानते थे।

ब्राउलियो : मुझे माफ़ कर दो। सालों साल की धाँधली और चुप्पी के बाद भी मैं तुमसे बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाया।

फ़ाबियो : तुम मेरा रुझान दूसरे कामों की ओर भी तो कर सकते थे।

ब्राउलियो : तुम बहुत ख़ूबसूरत स्केच बनाते थे... कला की किताबों में तुम्हारी बड़ी दिलचस्पी थी।

फ़ाबियो : और मैंने दिखावा करना शुरू किया। मैं रंगों की शेड्स को जानने के लिए दूसरे बच्चों से धोखे से उन रंगों के बारे में सवाल करता, जिन्हें वे अच्छी तरह पहचानते थे।

ब्राउलियो : मैंने सोचा कि तुम एक मासूम मुसाफ़िर की तरह अपनी बीमारी की सुरंग से कभी बाहर निकलोगे। कई बार मुझे लगा कि तुम सबकुछ आम लोगों की तरह देख सकते हो, क्योंकि तुम सही जवाब ...

फ़ाबियो : और हर बार बेहतर होने का दिखावा करता।

ब्राउलियो : यहाँ तक मुझे लगा कि ऐसा नहीं हो सकता। लेकिल आँखों के एक डॉक्टर ने मेरी यह ग़लतफ़हमी दूर कर दी।

फाबिया : तुम मुझे एक डॉक्टर के पास ले गए थे ?

ब्राउलियो : हाँ ।

फ़ाबियो : लेकिन मुझे यह याद नहीं।

ब्राउलियो : तुम्हें कैसे नहीं ले जाता ? उसने तुम्हें कुछ दवाइयाँ दीं... लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

फ़ाबियो : *(निराश)* फिर भी तुमने मुझे पेंटिंग करने को कहा।

ब्राउलियो : वह तुम्हारा शौक था।

फ़ाबियो : जब तक तुमने मुझे कला की थियरी से जुड़ी तालीम के लिए बढ़ावा दिया।

ब्राउलियो : वह तुमने दिया। धीरे-धीरे तुम रंगों से भागने लगे।

फ़ाबियो : लेकिन उन्हें देखने की इच्छा से नहीं भाग पाया।

ब्राउलियो : बेचारे बच्चे।

फ़ाबियो : *(नफ़रत से)* मुझ पर नहीं, ख़ुद पर तरस खाओ ! इस घटिया चाल के पीछे तुम हो!

ब्राउलियो : मैं ?

फ़ाबियो : *(उसकी ओर जाता है।)* इस वाहियात ज़िंदगी की बजाय एक असली ज़िंदगी देने के लिए तुम्हें वक़्त रहते मुझे बताना चाहिए था कि आख़िर मुझे क्या हुआ है ?

ब्राउलियो : मैंने तुम्हें बताया था...

फ़ाबियो : ग़लती तुम्हारी है।

ब्राउलियो : (उठता है।) यह तुम्हारा डर है।

फ़ाबियो : तुम डर गए थे ! मैं तो एक बच्चा था !

ब्राउलियो : लेकिन तुम एक आदमी बन गए, एक कायर और धोखेबाज़ आदमी।

फ़ाबियो : दरअसल तुम ! तुम हो धोखेबाज़ !

ब्राउलियो : तुम...!

फ़ाबियो : *(ब्राउलियो की गरेबान पकड़कर)* तुम...! तुम...! *(उसे हिलाता है और सोफ़े पर गिरा देता है। फ़ाबियो निःशब्द, अपलक, शून्य में खोई आँखें। ब्राउलियो, अपलक आँखें, किसी बेजान कठपुतली की तरह। सामने का दरवाज़ा खुलता है पाजामा और गाउन पहने तेरेसा का प्रवेश। इसी बीच अपने पति की बेचैनी को देखती है, दरवाज़ा बंद हो जाता है। फ़ाबियो स्थिर, लेकिन उसके प्रवेश से उसकी आँखें हिलती हैं। अचानक सामान्य दिन जैसी रोशनी। ब्राउलियो की आकृति घर के पहले सिरे की परछाई में खो जाती है। फ़ाबियो मुड़कर तेरेसा को देखता है।)*

तेरेसा : आउरोरा तुम्हारे साथ नहीं है ?

फ़ाबियो : दोपहर के खाने के लिए वापस आएगी।

तेरेसा : वह गयी कहाँ है ?

फ़ाबियो : वह तो नहीं बताया लेकिन काफ़ी शांत लग रही थी।

तेरेसा : मुझे लगा कि तुम किसी से बातें कर रहे थे... आउरोरा के साथ ?

फ़ाबियो : *(ज़बरदस्ती हँसता है।)* मैं अपने कला संवादों (díalogo del arte) को दोहरा रहा था।

तेरेसा : दोहराने से भी कुछ ज़्यादा...

फ़ाबियो : कुछ ज़्यादा ?

तेरेसा : तुम्हारी आवाज़ से मैं जाग गई। मुझे लगा तुम बच्ची से झगड़ रहे थे।

फ़ाबियो : *(परेशान होकर)* मैं इतनी ज़ोर से बात कर रहा था ?

तेरेसा : हाँ।

फ़ाबियो : और क्या बोल रहा था ?

तेरेसा : भीतर कमरे में मुझे ठीक-ठीक समझ नहीं आ रहा था।

फ़ाबियो : *(तेरेसा और सामने के कमरे को देखता है।)* तुम हमारे कमरे से आई हो ?

तेरेसा : हाँ।

फ़ाबियो : अच्छा ! तुम इतनी देर से वहाँ सो रही थी लेकिन तुम्हारे यहाँ से जाने का मुझे पता नहीं चला...

तेरेसा : बताओगे, तुम कह क्या रहे थे ?

फ़ाबियो : *(हँसता है।)* तुम इस कमरे से नहीं निकली हो ?

तेरेसा : *(हैरान होकर)* इस कमरे से ? मैं यहीं से तो आई हूँ। *(गैलरी की तरफ़ इशारा करती है।)*

फ़ाबियो : फिर, तो कोई धोखा हुआ होगा। *(उसे शक की नज़र से देखता है।)*

तेरेसा : *(परेशान-सी, उसके पास आती है।)* तुम मुझे यहाँ से निकलते हुए कैसे देख सकते हो !

फ़ाबियो : नहीं, तुम्हें नहीं देखा। मुझे लगता है मैंने देखा है। *(हँसते हुए)* घबरा गयी !

तेरेसा : फ़ाबियो, लगता है जो कुछ हुआ है उसका तुम पर बहुत गहरा असर है। तुम बिना सोचे-समझे बोलते हो, कल्पना करते हो... *(प्यार से उसे एक बाजू से पकड़ लेती है।)* इस समय तुम्हें जो बनने की ज़रूरत है वह तुम खुद हो।

फ़ाबियो : हाँ, मैं थक गया हूँ ...

तेरेसा : चुप भी करो! और मेरी बात सुनो। रुको, मैं तुम्हारे लिए नाश्ता बना देती हूँ। *(फ़ाबियो बायीं ओर नहीं जाता। तेरेसा रुकती है और सामने के दरवाज़े को देखती है।)* देखना तुम्हारे साथ क्या होगा अगर तुम यहाँ से बाहर चले गए तो ...

फ़ाबियो : चिंता मत करो।

तेरेसा : क्या इत्तेफ़ाक़ है। जब तुम्हारी आवाज़ ने मुझे जगाया तो मैं तुम्हारा ही ख़्वाब देख रही थी। मैंने देखा कि तुम इलांदेरास का सह गान गा रहे हो। *(फ़ाबियो परेशान होकर उसे देखता है।)* और मैंने तुम्हारी आवाज़ सुनी और मैं तुम्हें ढूँढ़ने लगी। यह मैंने दूसरी बार देखा है।

फ़ाबियो : *(मज़ाक करने की कोशिश करता है।)* मैं अंदाज़ा लगा सकता हूँ , मैंने बहुत बुरा गाया होगा।

तेरेसा : *(हँसते हुए)* हाँ, बहुत बहुत बुरा।

फ़ाबियो : लेकिन यह सिर्फ़ इत्तेफ़ाक है।

तेरेसा : नहीं। नहीं। दूसरा। एक और इत्तफ़ाक।

फ़ाबियो : हो सकता है। (घूमने लगता है। फ़ाबियो रुककर दुःखी भाव से पेंटिंग को देखता है। उसके पीछे तेरेसा।)

फ़ाबियो : *(खिन्न हँसी के साथ)* पालास आतेनेआ।

तेरेसा : *(अटकती हुई)* अभी उसके बारे में मत सोचो। *(फ़ाबियो तेरेसा को अपनी ओर ज़ोर से खींचकर गले लगा लेता है।)*

फ़ाबियो : *(फ़ाबियो की आवाज़ काँपती है।)* तेरेसा....

तेरेसा : *(बड़े प्यार से)* तुम्हें क्या हुआ है ? *(लम्बी ख़ामोशी)*

फ़ाबियो : कुछ नहीं। *(बुनकरों की आवाज़, साथ ही, संगीत धीरे-धीरे शुरू होता है। पेंटिंग चमकती-सी प्रतीत होती है। उसके आसपास का प्रकाश कम होने लगता है और अचानक मंच पर अंधेरा हो जाता है।)*

[परदा गिरता है।]

2.3 दूसरा अंक

(दुपहरी रोशनी। मंच ख़ाली। सामनेवाला दरवाज़ा आधा खुला हुआ। उसमें से दिखाई देता कमरा। कमरे से आती चरखे की साफ़ आवाज़। बायीं ओर से आती फ़ाबियो और ब्राउलियो की अस्पष्ट आवाज़ें।)

ब्राउलियो : *(प्रवेश करता है।)* कितने दिन हो गए मुझे तुम्हारे साथ म्यूज़ियम गए हुए ?

फ़ाबियो : *(प्रवेश करता है।)* काफ़ी दिन।

ब्राउलियो : मेरा साथ जाना तुम्हें कुछ फ़ायदेमंद लगा ?

फ़ाबियो : *(अधखुले दरवाज़े की ओर ध्यान।)* हाँ, क्यों नहीं पहले जितना।

ब्राउलियो : तुम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते तुम्हारे साथ बातचीत करना कितना मज़ेदार है। यह तो एक बार फ़िर पेंटिंग करने जैसा है।

फ़ाबियो : चुप ! तुमने कुछ सुना ?

ब्राउलियो : वहाँ अंदर ?

फ़ाबियो : हाँ। ऐसा लगता है चरखा है।

ब्राउलियो : ऐसा कैसे हो सकता है ?

फ़ाबियो : वो तो मैं नहीं जानता।

ब्राउलियो : *(दरवाज़े के पास जाता है।)* शायद ...

फ़ाबियो : रुको ! *(दरवाज़े के पास जाकर अंदर झाँकने के लिए उसे थोड़ा-सा खोलता है।)* तुम क्या कर रही हो ? *(शोर थम जाता है।)*

तेरेसा : वैक्यूम क्लीनर से सफ़ाई कर रही थी। अब बंद कर देती हूँ। *(वैक्यूम क्लीनर के साथ दरवाज़े पर दिखाई देती है।)* तो तुम अपने कमरे में जा रहे हो ... *(ब्राउलियो सोफ़े पर बैठ मैगज़ीन के पन्ने पलटने लगता है।)*

फ़ाबियो : *(तेरेसा को चूमकर।)* अब तो तुम्हें पता चल गया ना ? *(दरवाज़ा बंद कर देता है।)*

तेरेसा : अब मेरे पास भी बहुत ही कम समय बचा है। छुट्टियाँ ख़त्म होने वाली हैं और अभी मुझे ढेर सारी कापियाँ चेक करनी हैं। मैं भी ख़ुद को कमरे में बंद करने जा रही हूँ और तुम मुझे तंग मत करना ! *(दाईं ओर जाती है।)*

फ़ाबियो : आउरोरा ने तुम्हारे साथ खाना खा लिया ?

तेरेसा : *(रुककर)* हाँ।

फ़ाबियो : अब वह कैसी है ?

तेरेसा : *(हावभाव अस्पष्ट)* वैसी ही जैसी वह आजकल...

फ़ाबियो : *(घूमते हुए)* उसने तुम्हें कुछ बताया ?

तेरेसा : नहीं।

फ़ाबियो : उसने ज़िद नहीं की... मेरी ग़लती पर ?

ब्राउलियो : कैसी ज़िद ! तुम देखना उसने जो किया है उसके लिए उसे ज़रूर एक दिन पछतावा होगा।

तेरेसा : वह तो मैं ठीक-ठीक नहीं जानती। *(ब्राउलियो उसे हैरानगी से देखता है।)*

फ़ाबियो : *(रुककर)* नहीं ?

तेरेसा : *(वैक्यूम क्लीनर को छोड़कर मेज़ के पास आ जाती है।)* मैंने उसे कपड़ों और चीज़ों को कुछ अजीबोगरीब ढंग से रखते देखा।

फ़ाबियो : अजीबोगरीब ?

तेरेसा : जैसे वह चुपचाप अपना बैग पैक कर रही हो।

ब्राउलियो : वह कहीं जाना चाहती है ?

तेरेसा : मुझे इसी बात का तो डर है।

ब्राउलियो : कहाँ ?

तेरेसा : जहाँ हम दिखाई न दें।

ब्राउलियो : लेकिन क्यों ? आजकल के बच्चे भी बड़े ही पागल होते हैं।

फ़ाबियो : वह घर में है ?

तेरेसा : हाँ, अपने कमरे में।

ब्राउलियो : *(उठकर)* मैं अभी जाकर उससे बात करता हूँ।

तेरेसा : नहीं, ऐसा मत करना। इसका नतीजा उल्टा हो सकता है। *(ब्राउलियो रुक जाता है और चिढ़कर घूमने लगता है।)*

ब्राउलियो : वैसे तुम्हीं लोगों को यह करना होगा ... और गास्पार ? वह अभी भी वहीं है।

तेरेसा : *(हँसते हुए)* तुम उससे इस बारे में बात करोगे ?

ब्राउलियो : बिल्कुल !

तेरेसा : *(परेशान होकर)* मुझे लगता है आउरोरा गास्पार से बात करती है।

फ़ाबियो : *(हैरान होकर)* तुम्हें ऐसा क्यों लगता है ?

तेरेसा : दो-तीन बार उन दोनों को धीमी आवाज़ में बातें करते देख मैं हैरान हो गई। आउरोरा से तो मैंने कुछ पूछा नहीं लेकिन मैंने गास्पार से बात की थी।

फ़ाबियो : फिर उसने क्या कहा ?

तेरेसा : तुम्हें पता है ना कि जब उसने न पी रखी हो ... तो वह कितना बेतरतीब हो जाता है। औरतें शैतान जैसी तेज़ होती हैं ... और आउरोरिता तो शैतान से भी ज़्यादा तेज़ है। ... और ये उसका मामला नहीं है। यह उसके मतलब की बात नहीं है।

फ़ाबियो : कौन-सी बात ?

तेरेसा : मुझे नहीं पता फ़ाबियो ! या तो वह जानता नहीं है या फिर साफ़ नहीं करना चाहता।

फ़ाबियो : उसकी इतनी जुर्रत कि वो हमारे मामले में दखलंदाज़ी करें। एक तो हम उसे अपने साथ रखे और ऊपर से वो हमारे घरेलू मामले में टाँग अड़ाए।

ब्राउलियो : मैं देखता हूँ उसे। वह किचन में होगा ?

तेरेसा : कुछ सामान ख़रीदने के लिए मैंने उसे बाहर भेजा है।

ब्राउलियो : तुमने ऐसा कई बार किया है और मैं इसके सख़्त ख़िलाफ़ हूँ। तुम्हें उससे नौकरों जैसा सलूक नहीं करना चाहिए।

तेरेसा : नहीं, ऐसा नहीं है। वह ख़ुद ऐसे हाथ बँटाता रहता है मानों वह इस घर का हिस्सा हो और इसीलिए मुझे यह ठीक लगा।

फ़ाबियो : आउरोरिता ने तुम्हें कुछ नहीं कहा ... मेरे बारे में कुछ भी नहीं ?

तेरेसा : नहीं... *(गोपनीय तरीक़े से)* आज उसने पूरी दोपहर योजनाएँ बनाने में बिता दी। एक पन्ना फाड़ती फिर दूसरा उठा लेती ...जैसेकि कोई बेहद मुश्किल काम कर रही हो।

ब्राउलियो : स्कूल का ही कोई काम होगा।

तेरेसा : *(दुःखी होकर)* मुझे तो किसी और ही चीज़ की बू आ रही है। *(बेचैन-सा फ़ाबियो कुछ दूर हो जाता है।)* काश ! मेरा डर ग़लत निकले। *(जाने को होती है, रुककर)* तुम लोगों ने खाना खा लिया ?

ब्राउलियो : हाँ! उसी म्यूज़ियम में। क्योंकि हमें दोपहर तक वहाँ काम से रुकना था ...

तेरेसा : *(वैक्यूम क्लीनर लेने जाती है।)* अच्छा ?

ब्राउलियो : फ़ाबियो को कुछ म्यूज़ियम में मालूम करना था और वह काम हो गया।

तेरेसा : बहुत अच्छा। *(जाने को होती है।)*

ब्राउलियो : फ़ाबियो के साथ फिर से काम करना बहुत अच्छा लगा। मुझे इसके साथ म्यूज़ियम गए भी कम-से-कम तीन साल हो गए थे।

तेरेसा : कम-से-कम पाँच साल।

ब्राउलियो : इतने साल ? यह तुमने अच्छा नहीं किया फ़ाबियो ! मुझे मालूम है तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं। लेकिन मेरी आँखें इतनी तेज़ हैं कि छोटी-से-छोटी चीज़ को भी भाँप लेती हैं. .. उनसे कुछ नहीं छिप सकता ... देखा कैसी विडम्बना है : एक नाकामयाब पेंटर की तेज़ आँखें।

फ़ाबियो : इतना घमण्ड भी मत करो।

ब्राउलियो : क्यों, घमण्ड क्यों ना करूँ ? देखो तेरेसा, म्यूज़ियम में मैं जो बोल रहा था उसे ये अपनी डायरी में लिख रहा था। अरे अपने बाप की मदद को ऐसे मत नकारो, एहसानफ़रामोश।

फ़ाबियो : मैंने सरेआम अपनी किताबों में तुम्हारा आभार जताया है।

ब्राउलियो : बेटा, ये तो मैं जानता हूँ। लेकिन देखो, तेरेसा .....

तेरेसा : *(बात को काटते हुए)* माफ़ करना ब्राउलियो, मैंने तुम लोगों को बताया था कि मेरा कुछ काम अभी बाक़ी है। जब तक गास्पार आए, मैं किचन में बचा हुआ काम कर पूरा लेती हूँ।

फ़ाबियो : बेफ़िक्र रहो। *(तेरेसा दायीं ओर से वैक्यूम क्लीनर लेकर चली जाती है। फ़ाबियो अपनी आरामकुर्सी पर थकाँ हारा बैठ जाता है। पीछे हाथ बांधे ब्राउलियो गलियारे के सामने रुक जाता है।)*

ब्राउलियो : कभी वह बहुत तीखी हो जाती है, लेकिन है बहुत प्यारी।

फ़ाबियो : ये तो मैं जानता हूँ। *(लम्बी चुप्पी)*

ब्राउलियो : कितनी जल्दी बिना थके तेरेसा अपना काम करने जा रही है।*(चुप्पी। ब्राउलियो मेज के पास आ रही है और कुर्सी का सहारा लेता है।)* बिटिया से बात करोगे ?

फ़ाबियो : इसी की तो ज़रूरत है।

ब्राउलियो : अगर तुम चाहो, तो मैं अभी उसके कमरे में जाता हूँ और...

फ़ाबियो : नहीं, भगवान के लिए ऐसा मत करना ! यह हमारा आपसी मामला है।

ब्राउलियो : मैं नहीं चाहता कि वह घर छोड़कर जाए ! हमें छोड़कर !

फ़ाबियो : मैं भी नहीं चाहता। हमें इससे बचने का कोई-न-कोई रास्ता निकालना होगा ।

ब्राउलियो : *(गुस्से में)* मैं किसी की कोई मदद नहीं करता। मैं अपने कमरे में चला जाता हूँ। *(तन जाता है)*

फ़ाबियो : पापा ऐसा नहीं है। अभी उससे बात करने का सही वक़्त नहीं है ।

ब्राउलियो : किसको मालूम। आख़िरकार... *(दायीं ओर मुड़ जाता है।)*

फ़ाबियो : *(आशंकित आवाज़ में)* मुझे लगता है... कि तुम मुझसे बात करना चाहते हो।

ब्राउलियो : किस बारे में ?

फ़ाबियो : हम दोनों के बारे में।

ब्राउलियो : हम सारी बात कर चुके हैं। तुम्हारे पास कुछ बचा भी है मुझे बताने के लिए ?

फ़ाबियो : *(उसे घूरते हुए)* नहीं।

ब्राउलियो : *(बुदबुदाता हुआ बायीं ओर चला जाता है।)* हाँ... सारी बातें हो चुकी हैं ....

फ़ाबियो : *(अपने आपसे)* और सब चुप है।

ब्राउलियो : *(रुक जाता है।)* क्या कहा ?

फ़ाबियो : कुछ नहीं। *(ब्राउलियो चला जाता है। फ़ाबियो अपनी नोटबुक उठाता है। कुछ पन्ने पलटता है और दुःख के साथ मेज़ पर पटक देता है। खिन्न मन से फ़ाबियो वेलास्केस की पेंटिंग को एकटक देखता है। वाग्नेर के पहले अंश का समवेत गान बजने लगता है। रोशनी सामान्य। फ़ाबियो कुछ याद करता बुदबुदाता है।)* अच्छा समय बीत गया ?

(आउरोरीन बायी और से प्रवेश करती है। स्कूल के कपड़े, जुराबे, हैंडबैग। हँसता हुआ ब्राउलियो बिना चश्मा लगाए दायीं ओर गैलरी से आता है और किताबों के ख़ाने के सहारे खड़ा हो जाता है।)

आउरोरीन : *(खुश, हँसते हुए)* अभी मैंने तुम्हारे साथ ख़त्म नहीं किया है ।

फ़ाबियो : *(बिना उसे देखे)* नहीं ?

आउरोरीन : बच्चे पेंटिंग करते हुए कुछ नया नहीं खोजते। अगर मैं आँखें बंद करूँ... *(आँखें बंद करती है।)* और तुम्हारा चेहरा हरा देखना चाहूँ ... *(आँखें खोलती है।)* मैंने तुम्हें हरा देखा।

फ़ाबियो : *(बहुत खुश, खड़ा होता है।)* झूठ मत बोलो !

आउरोरीन : *(ज़ोरों से हँसती है।)* मेंढक के जैसा हरा ! सचमुच !

ब्राउलियो : *(हैरान)* सुनो लड़की ... तुम बिना सोचे-समझे बके जा रही हो।

फ़ाबियो : छोड़ो पापा, मैंने उसका झूठ पकड़ लिया।

आउरोरा : तुमने, तुम्हें लगता है तुमने पकड़ लिया।

ब्राउलियो : *(उनकी ओर जाता है।)* तुमने मेंढक की तरह हरा कहा क्योंकि तुम जानती हो वे हरे रंग के होते हैं और तुम चाहते हुए भी उसे किसी ओर रंग नहीं देख सकती ।

आउरोरीन : *(होंठों को काटते हुए)* अगर मैं चाहूँ तो उन्हें रंगीन देख सकती हूँ।

फ़ाबियो : *(उसका कान पकड़कर)* नौंटकीबाज़।

आउरोरीन : उई ! *(छुड़ाकर दूर हो जाती है।)*

ब्राउलियो : *(आवक्ष मूर्ति के पीछे से आवाज़ बदलकर बोलता है।)* बच्चे नौटंकीबाज़ नहीं होते। वे तो कलाकारों की तरह सर्जनात्मक होते है।

आउरोरीन : चुप गास्पार ! तुम कुछ नहीं जानते। *(शर्मिंदगी के साथ हँसते हुए अपने पिता को देखती है।)* पापा ही है जो सब कुछ जानते है। *(दौड़कर फ़ाबियो की बाँहों में चली जाती है।)* मैं हार मानती हूँ! *(दोनों हँसते है।)* पापा ही मेरे गास्पार हैं। *(फ़ाबियो को चूमती है।)* सुनो पापा, दरअसल रंग आँखों के बाहर होते हैं ?

फ़ाबियो : और अंदर। अंदर भी और बाहर भी। दोनों।

आउरोरीन : *(ब्राउलियो से)* देखा, कितने समझदार हैं ?

फ़ाबियो : इसमें समझदारी वाली क्या बात है ?

आउरोरीन : यह तो पानी की तरह साफ़ है। *(आवक्ष मूर्ति की ओर इशारा करती है।)* लेकिन इस पागल को कुछ समझ नहीं आता।

ब्राउलियो : अगर सचमुच का गास्पार यहाँ होता, तो वह [मुझसे और तुमसे ज़्यादा अच्छी तरह] समझता ... शायद वह मर गया। *(वह यादों में खो जाता है। आउरोरीन आवक्ष मूर्ति के पास आती है और सांत्वना देते हुए, आवाज़ बदलकर बोलती है।)*

आउरोरीन : मैं मरा नहीं ब्राउलियो ! बोलो तुम क्या जानना चाहते हो ?

ब्राउलियो : *(भौंचक्का हो जाता है और प्रतिक्रिया के साथ)* धोखेबाज़ !*(ज़ोरों से हँसती है। अपने दादा से बचने के लिए भागती है।)* बातूनी ! *(मेज़ के चक्कर लगाते हैं।)* अभी तुम्हें पकड़ता हूँ ! ... *(बाल-बाल बचती आउरोरीन बचने के लिए अचानक सामने वाले दरवाज़े को खोल देती है। दादा रुक जाता है)* कहाँ जा रही हो ?*(उसकी आवाज़ से हैरान आउरोरीन रुक जाती है)* वहाँ सिर्फ़ तुम्हारे पापा जाते हैं।

आउरोरीन : और मम्मी सफ़ाई के लिए।

ब्राउलियो : दरवाज़े को बंद कर दो आउरोरीन ! *(आज्ञा का पालन करती है। एप्रेन पहने हुए तेरेसा दायीं ओर से आती है।)*

तेरेसा : क्यों शोर मचा रखा है! अच्छी बात है कि तुम हँस रहे हो। लेकिन किचन तक तुम्हारा शोर सुनाई दे रहा है। *(हँसते हुए)* क्यों, लड़की ने ऐसा कुछ पूछा जिसका जवाब सिर्फ़ गास्पार दे सकता है ?

ब्राउलियो : नहीं! वह तो...

तेरेसा : *(अपनी बेटी से)* जैसा मैंने देखा तुम वहाँ अंदर जा रही थी।

फ़ाबियो : उसे मत डाँटो! वह अंदर नहीं गई।

आउरोरीन : जब मैं छोटी थी, तो एक बार वहाँ अकेली गई थी। वहीं दादी की मौत हुई थी। है ना ? *(सब उसे देखते हैं।)*

तेरेसा : तुम यह अच्छी तरह जानती हो।

आउरोरीन : सुनो पापा, तुम वहाँ उससे बातें करते हो ?

फ़ाबियो : जब वह है ही नहीं तो मैं उससे बातें कैसे करूँगा ?

आउरोरीन : जब तुम लोगों की कल्पना करते हो और लिखते हो।

फ़ाबियो : मैं उसकी कल्पना कैसे कर सकता हूँ जब वह मुझे ठीक से याद ही नहीं।

आउरोरीन : जब मैं वहाँ अंदर गई थी तो मैंने देखा था।

ब्राउलियो : क्या देखा था तुमने ?

आउरोरीन : तुम लोगों की ही तरह।

फ़ाबियो : *(मज़ाक में)* और वह कैसी थी ? हरी या रंगीन ?

आउरोरीन : बेवकूफ़ !

फ़ाबियो : उसने तुमसे बात की ?

आउरोरीन : वह मुझे देखकर हँसी। मैं बहुत डर गयी और वहाँ से भाग निकली। मम्मी, यह तुम्हारा कोई जादू तो नहीं था ?

तेरेसा : बचकाना बातें बंद करो।

फ़ाबियो : तुम्हें कोई वहम हुआ होगा। बच्चों के साथ यह कोई बड़ी बात नहीं।

आउरोरीन : तुम लोगों को मालूम है वह कैसी थी ?

ब्राउलियो : *(बेचैनी से)* कैसी थी ?

आउरोरीन : बिल्कुल ... हू-ब-हू उस चरख़े वाली सेन्योरा जैसी। *(पेंटिंग की ओर इशारा करती है। ब्राउलियो हँसते हुए नकारता है। शांत।)*

तेरेसा : यह स्वाभाविक है। तुम उस पेंटिंग को तब से देख रही हो जब तुम पैदा हुई थी...

फ़ाबियो : और तुमने उस पेंटिंग में उसे पाया।

ब्राउलियो : वह चरख़े वाली तुम्हारी दादी जैसी बिल्कुल नहीं है।

तेरेसा : वह तुम्हारी दादी जैसी नहीं थी।

आउरोरीन : *(सोचती है।)* या शायद वह सेन्योरा, जो अंदर ...*(आँखों से इशारा करती है।)*

फ़ाबियो : सब कुछ और उसके रंगों के साथ।

आउरोरीन : *(खुश होकर)* मैंने उसे बाहर देखा था।

ब्राउलियो : *(अतीत में खोया)* लेकिन वह वहाँ नहीं थी...

तेरेसा : आउरोरीन, वह दरवाज़ा खोलो।

आउरोरीन : मुझे मालूम है वह वहाँ नहीं है!

तेरेसा : कोई बात नहीं। तुम दरवाज़ा खोलो और देखो *(अकेली ही आउरोरीन दरवाज़े के पास जाती है।)*

आउरोरीन : मम्मा, मुझ पर कोई जादू मत करना...

तेरेसा : खोलो!

ब्राउलियो : *(परेशान)* क्यों, तेरेसा ?

फ़ाबियो : *(अपने पापा से)* शिक्षा शास्त्र (pedagogy)। *(आउरोरीन दरवाज़े का हैंडल पकड़ती है और सब उसे देखते हैं।)*

तेरेसा : किस बात का इंतज़ार है ? *(आउरोरीन के चेहरे पर एक मुस्कान जो नहीं मालूम हिम्मत की है या डर की। दरवाज़े को आधा खोलती है। अंदर जाती है। कुछ देर बाद वापस आती है, गंभीर।)*

आउरोरीन : *(धीमी आवाज़ में)* वह वहाँ अंदर है।

ब्राउलियो : नहीं! *(ब्राउलियो दौड़कर दरवाज़े की ओर जाता है इसी बीच आउरोरीन दरवाज़े से हट जाती है।)*

तेरेसा : *(शांत)* झूठी कहीं की !

आउरोरीन : *(हँसी को रोकने की कोशिश करती है। ब्राउलियो दरवाज़े को खोल अंदर देखता है आवक्ष मूर्ति के पीछे से आवाज़)* पागल मत बनो ब्राउलियो !

ब्राउलियो : *(ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर देता है।)* बदमाश ! धोखेबाज़ ! *(आउरोरीन ज़ोरों से हँसती है।)*

फ़ाबियो : दादा का मज़ाक उड़ाना अच्छी बात नहीं है। *(दुःखी भाव से अपनी आरामकुर्सी पर बैठ जाता है।)*

ब्राउलियो : *(दुःखी होकर)* छोड़ो इसे। ठीक है। मैं ही सबसे बड़ा गधा हूँ। *(अपनी यादों के बोझ से उभरने की कोशिश करता है।)* बदमाश! अब बचो मेरी नाराज़गी से। *(उसके पीछे जाता है। आउरोरीन चिल्लाते और हँसते हुए भागती है।)*

आउरोरीन : बचाओ ! मम्मा ! *(अपनी माँ के पीछे छिप जाती है।)* भागो ! *(लेकिन दादा रुक जाता है और प्यार से उसका सिर पकड़ लेता है। शांति। बच्ची अपनी माँ से अलग होकर डरती हुई अपने दादा के पास जाती है।)* माफ़ कर दीजिए दादा जी ! *(ब्राउलियो उसके बालों को सहलाता है। आउरोरीन वापस अपनी माँ के पास चली जाती है, उसका हाथ पकड़ती है और तेरेसा से अलग हो जाती है। वे दोनों दायीं ओर से चले जाते है। ब्राउलियो चुपचाप उनके पीछे जाता है।)*

ब्राउलियो : *(रुक जाता है।)* इस सबके बावजूद अच्छा समय बीत गया ...

(पहले सिरे तक जाता है। फ़ाबियो उसे देखने की कोशिश नहीं करता। ब्राउलियो उसे देखता है ओर दायीं ओर से चला जाता है। इसी बीच रोशनी सामान्य हो जाती है और पेंटिंग बदरंग। फ़ाबियो उसकी एक झलक देखता है और घुटनों पर हाथ टेक अपने हाथों से चेहरा छुपा लेता है। लंबा विराम। चुपचाप, दायीं ओर से आउरोरा आती है और अपने पिता को देख सामने के

दरवाज़े के पास चली जाती है। जब वह बोलना शुरू करती है साँझ-सा झुटपुटा हो जाता है। पेंटिंग के रंग चमकने लगते हैं। आउरोरा चेहरे पर हरे रंग का मेकअप किए आती है।)

आउरोरा : मैं, तुम्हें दादी के कमरे में ले जाने आई हूँ ?

फ़ाबियो : *(हैरानी से गर्दन उठाता है।)* क्या ?

आउरोरा : *(हँसते हुए)* शांति से बात करने के लिए।

फ़ाबियो : हम यहाँ भी बात कर सकते हैं।

आउरोरा : तुम्हें यह सही लगता है ? कभी-कभी मैं तुम्हें समझ नहीं पाती। अगर मम्मा आ गई तो ?

फ़ाबियो : वो काम कर रही है।

आउरोरा : मुझे मालूम है और दादाजी ?

फ़ाबियो : वह अपने कमरे में हैं।

आउरोरा : फिर भी, हम वहाँ जा सकते हैं।

फ़ाबियो : हमें कुछ छिपाने की ज़रूरत नहीं है, जो भी फ़ितूर तुम्हारे दिमाग़ में है उसे मैं साफ़ करूँगा [और उम्मीद है कि तुमने किसी से इस बारे में बात भी नहीं की होगी।]

आउरोरा : तुम अभी भी सच को नकार रहे हो ?

फ़ाबियो : बेशक *(उठता है। ख़ामोशी से उसके पास जाता है।)* आउरोरा ज़रा सोचो। यह एक भरा- पूरा परिवार है ... अगर तुम बुरे दौर से गुज़र रही हो, तो पूरा परिवार तुम्हारे साथ उस बुरे दौर से गुज़रेगा तब तक कि जब तक हम सब उस खुशनुमा सुबह को नहीं पा लेते। मेरी कोई ग़लती नहीं है। ना ही कोई उस गुनाह के लिए ज़िम्मेदार है जो उसने किया या उसे करने में मदद की।

आउरोरा : ऐसी बात है।

फ़ाबियो : मेरे लिए नहीं तो अपनी माँ के लिए ही सही, मान जाओ। उस दुःख के बारे में सोचो जो तुम अपने बेबुनियाद शक के बिना पर अपनी माँ को दे सकती हो।

आउरोरा : *(उसकी हँसी फूट पड़ती है।)* बेबुनियाद ?

फ़ाबियो : *(गंभीर)* रत्तीभर भी सही नहीं।

आउरोरा : *(हँसते हुए)* तुम्हारी बातें सुनकर मुझे कितनी खुशी हो रही है। तुमने सब कुछ आसान कर दिया है ।

फ़ाबियो : दया करके हँसो मत, यहाँ बैठो और संजीदा होकर जो तुम चाहो हम बात करेंगे। *(सिगरेट जलाता है)*

आउरोरा : जैसा तुम कहो। *(मेज़ पर बैठ जाती है। तभी उसकी हँसी फूट पड़ती है।)*

फ़ाबियो : *(संयत होकर)* आउरोरा, तुम कुछ ज़्यादा ही उतावली हो रही हो। तुम्हें बुख़ार तो नहीं हो गया है ? *(उसके पास आता है और उसका माथा छूने की कोशिश करता है।)*

आउरोरा : *(हाथ झटककर।)* शांत रहो। ज़्यादा उतावली लेकिन बुख़ार नहीं। मैं पारिवारिक मेलजोल की इस तस्वीर को भी मानने के लिए तैयार हूँ जो तुम मुझे दिखाना चाहते हो लेकिन तुमने यही कहा था ना मेरा शक बेबुनियाद है ?

फ़ाबियो : *(उसकी बग़ल में बैठ जाता है।)* हाँ, ऐसा ही कहा...।

आउरोरा : और तुम चाहते हो कि मैं इसे मान लूँ... वह भी बिना किसी सबूत के।

फ़ाबियो : मैंने कुछ दिन पहले तुम्हें कहा था कि मैं तुम्हारे अविश्वास को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

आउरोरा : तो फिर मुझे भोली-भाली और हुक़्मबरदार बनना पड़ेगा क्योंकि यह एक बाप का हुक़्म है।

फ़ाबियो : क्योंकि एक बाप तहेदिल से तुमसे गुज़ारिश कर रहा है।

आउरोरा : बहुत अच्छे ! एक परंपरागत और प्यार भरा परिवार। अगर घर जलता है तो चिंगारी किसी को भी दिखाई नहीं देती। हमें भी नहीं।

फ़ाबियो : यह घर नहीं जल रहा है।

आउरोरा : भरोसे के लिए उन्हें इस बात पर भी यकीन करना ही होगा।

फ़ाबियो : और हमारे प्यार के लिए।

आउरोरा : *(हँसी और चीख़ के बीच)* और प्यार के लिए ! पापा, उन्होंने मुझे कभी बेवकूफ़ नहीं बनाया क्योंकि वह मुझे प्यार करती है। मैं उन्हें बिना किसी सबूत के यकीन दिलाऊँगी।

फ़ाबियो : *(ज़ोर से)* बिना सबूत के और प्यार का वास्ता देकर ! बिना किसी सबूत के। *(विराम।)*

[आउरोरा : बिना किसी सबूत के...

फ़ाबियो : *(घबराया हुआ)* बिल्कुल... सबूत भी मेरे हक़ में है, तुमने जो सोचा है वह भरोसे के क़ाबिल नहीं।]

आउरोरा : अब इसका कोई फ़ायदा नहीं पापा... सबूत तो सामने ही है।

फ़ाबियो : उस दिन तो तुमने कुछ साबित नहीं किया।

आउरोरा : देखो मुझे !

फ़ाबियो : मैं तुम्हें ही देख रहा हूँ।

आउरोरा : *(अपना चेहरा अपने पापा के चेहरे के पास लाती है।)* तुमने क्या देखा ?

फ़ाबियो : अपनी नाक को मेरी आँखों में मत घुसाओ ! मैं तुम्हें ही देख रहा हूँ और कुछ नहीं।

आउरोरा : कुछ नहीं।

फ़ाबियो : इसमें देखने के लिए ज़्यादा कुछ नहीं।

आउरोरा : यही तो सबूत है।

फ़ाबियो : क्या ?... *(आउरोरा पहले की तरह अपना चेहरा फ़ाबियो के बिल्कुल पास लाती है।)*

आउरोरा : *(हँसते हुए चिल्लाती है।)* हरा ! मेंढक की तरह हरा ! *(उठती है और घूमती है।)* साफ़-शफ़्फाक़ हरा। गुलाबी चेहरे की तरह साफ़। बिल्कुल तुम्हारे चेहरे से मेल खाता। *(हँसती है।)* तुम्हारी बेटी एक हरी मेंढकी बन गई है। टर्र ! टर्र ! *(उसके सामने आती है।)* लेकिन तुम उसे नहीं देख सकते। *(विराम।)*

फ़ाबियो : मैंने देखा है... कि तुमने मेकअप किया हुआ है... बहुत ही अजीबोगरीब ढंग से। जैसे तुम जैसे लोग अजीबोगरीब ढंग से पेंटिंग करते हैं ... मुझे और कुछ नहीं कहना।

आउरोरा : तुम्हारी क़सम, मुझे तुम पर तरस आ रहा है। *(पास आती है।)* ढंग से देखो। और अगर मैं कहूँ कि जो इस समय हो रहा है वही असली सबूत है तो ? *(मेज़ पर झुक जाती है, फ़ाबियो के बिल्कुल पास।)* मेरा मेकअप रोज़मर्रा जैसा है ? *(फ़ाबियो घबराकर उसे देखता है।)* क्यों सिर चकरा गया ? एक हरे चेहरे में तुम्हें कुछ अजीब दिखाई नहीं देता या अभी भी यही कहोगे कि वह हरा नहीं है ? *(ख़ामोशी से।)* बुरे फँसे ! ओह पापा ? तुम्हें पता है कि तुम्हारी बेटी मेंढकी बनी हुई है या नहीं। क्योंकि तुम्हें मालूम ही नहीं था कि हरा कैसा होता है... मालूम करने के लिए एक टेस्ट करने की ज़रूरत है ! मम्मा को बताऊँ ?

फ़ाबियो : *(तेज़ी से उठता है लेकिन आवाज़ कमज़ोर।)* नहीं। *(पहले सिरे के अंत तक जाता है।)*

आउरोरा : और दादा को, ताकि वह मेरे चेहरे की रंगत तुम्हें तफ़सील से बता सकें, जैसे उन्होंने म्यूज़ियम में बताया ? *(फ़ाबियो ख़ामोश है।)* किसलिए, क्यों ? अब इसमें कोई शक नहीं कि तुम कलरब्लाइंड हो। *(ख़ामोश फ़ाबियो उग्र हो जाता है। जल्दी से दोनों दायीं ओर देखते हैं क्योंकि उन दोनों को कुछ आहट सुनाई देती है। फ़ाबियो दायीं ओर कुछ कदम बढ़ाता है, लेकिन आउरोरा उसे रोक लेती है।)* तुम कहीं नहीं जाओगे।

(एक भारी प्लास्टिक का थैला लिए गास्पार का प्रवेश। वह रुक जाता है।)

गास्पार : गुड इवनिंग! *(आँखें नीचे कर आगे बढ़ने को होता है।)*

आउरोरा : हमारे पास बैठो ! मुझे दो! *(थैला ले लेती है और एक कोने में रख देती है।)* पापा तुम जानना चाहते हो न कि इन दोनों में से कौन-सा बेहतर है ? जानकारी के लिए ही सही। *(फ़ाबियो के चेहरे का रंग बदल जाता है।)* गास्पार, मेरे पापा जानना चाहते हैं कि मेरा चेहरा आम दिनों जैसा है या कुछ बदल गया है। अब तुम्हीं बताओ।

गास्पार : *(फुसफुसाते हुए।)* दुनिया भर की बातें ...एक जैसी... बहुत ही ध्यान से... *(जाने को होता है।)*

आउरोरा : मुझे अपनी ऊबाऊ बातों से बहकाओ मत, जब मैंने तुमसे बात की थी तब तुमने ठीक से जवाब भी दिए थे और तुमने पी भी नहीं रखी थी ...

गास्पार : हाँ, मैंने पी थी... मैं बहुत पीता हूँ ... जो इस घर को नज़र आता है।

आउरोरा : *(आउरोरा बार के पास जाती है।)* ठीक है, पीयो। तुम्हें एक जाम चाहिए ?

गास्पार : अगर फ़ाबियो को परेशानी न हो ...

आउरोरा : क्यों नहीं।

गास्पार : *(फ़ाबियो की ओर देखने के बाद।)* तो फिर... हाँ, एक जाम !

आउरोरा : बैठ जाओ ! *(एक गिलास लेती है।)*

गास्पार : इजाज़त है। *(आउरोरा के पास बैठ जाता है।)* रेड वाइन। है ना ? यही तो है जो मुझ पर चढ़ जाती है।

आउरोरा : *(हँसते हुए)* सबसे अच्छी *(गिलास में रेड वाइन डालती है।)*

गास्पार : वह ! मोरापीयो[16] की। *(हँसता है। उदास फ़ाबियो उसे देखता है।)*

आउरोरा : लो ! *(उसे गिलास देती है।)* सबसे अच्छी रेड वाइन। *(गास्पार कुछ घूँट भरता है।)*

---

[16] एक प्रकार की वाईन

गास्पार : तुम लोग मुझसे कुछ पूछना चाहते हो। है ना !

फ़ाबियो : मैं नहीं।

गास्पार : बात मेरी तो नहीं है। *(पीता है।)* सारी बातें तुम्हारी ही हैं। यह भी सच है। *(गिलास ख़ाली कर देता है।)* वाह! बहुत बढ़िया। यह आज का पहला था।

आउरोरा : और चाहिए ?

गास्पार : एक ही काफ़ी है। अगर वह मुझ पर असर नहीं करती तो मैं पीता ही नहीं।

आउरोरा : तुम्हें मेरा चेहरा कैसा दिख रहा है गास्पार ?

फ़ाबियो : इसमें जवाब देने वाली क्या बात है ? मुझे तो बहुत साफ़ दिखता है। मेरी बेटी के चेहरे जैसा।

आउरोरा : एक आख़िरी उम्मीद, क्यों ? सच जानना चाहते हो क्योंकि मुझे देखकर गास्पार को कोई हैरानी नहीं हुई। लेकिन तुम्हें अभी तक नहीं पता। गास्पार, बताओ मेरा चेहरा किस रंग का है। सच ! सच कहना !

गास्पार : *(दोनों को ध्यान से देखता है।)* मैं झूठ नहीं बोलता। मैं चुप ही बेहतर हूँ।

आउरोरा : बताओ।

गास्पार : मैं चुप ही रहूँगा।

फ़ाबियो : एक बार तो कहो।

गास्पार : हरी सेब। *(चुप्पी।)*

आउरोरा : एकदम सही ! तुम पेंटर बन सकते थे या आलोचक...

फ़ाबियो : *(उठता है और मेज़ के पास जाता है।)* वह तुम हो जिसने इतना घटिया तरीक़ा इसे सुझाया ?

गास्पार : मैं ?

आउरोरा : आपे से बाहर होने की ज़रूरत नहीं।

फ़ाबियो : *(गास्पार से)* तो आजकल तुम और आउरोरा क्या बात करते हो ?

गास्पार : आम चीज़ों के बारे में ...।

फ़ाबियो : जैसे ?

आउरोरा : जैसे, बुर्जुवा लोगों पर ।

फ़ाबियो : बहुत अच्छे !...*(तिरस्कार से देखता हुआ दूर हो जाता है। आउरोरा शरारती ढंग से फ़ाबियो को देखती हुई बैठ जाती है।)*

आउरोरा : मैं तुम्हें झुठलाऊँगी नहीं। मैंने इससे रंगों पर भी बात करना चाहा था। लेकिन इसने मना कर दिया।

गास्पार : इस बात को यहीं छोड़ देते हैं।

आउरोरा : कोई मतलब ही नहीं। *(अपने पापा से)* हमेशा ही गास्पार से पूछा जाता था और अब जाकर इसने जवाब दिया है। *(आवक्ष मूर्ति की ओर इशारा करती है।)* इसकी तरह नहीं।

गास्पार : या मैं इसकी तरह चुप हो जाऊँ !

आउरोरा : अब तुम इसकी तरह चुप नहीं रहोगे। इस घर में सच बोलनेवालों की ज़रूरत है।

फ़ाबियो : तुम्हें क्या लगता है कि वो जो सोचता है उससे तुम्हारा शक दूर हो जाएगा। उसे तो यह भी नहीं मालूम कि कलरब्लाइंडनेस क्या चीज़ है !

गास्पार : *(ज़ोर देकर)* मैंने चौबीस सालों में बहुत कुछ पढ़ा है। मैं कलरब्लाइंडनेस के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ।

फ़ाबियो : *(मज़ाक उड़ाता है।)* अच्छा ?

गास्पार : *(मज़बूती से)* जो तुम्हारे साथ हुआ है वही कलरब्लाइंडनेस है।

फ़ाबियो : *(पीला पड़ जाता है, उसके शब्दों के बारे में सोचता है।)* क्या तुम इस बेहूदा बात पर यकीन कर सकते हो ?

गास्पार : *(हँसता है।)* अब तुम ये सब ढकोसला करना बंद कर दो...

फ़ाबियो : तुम्हें समझ क्यों नहीं आता कि ये नामुमकिन है। अगर मैं ऐसा होता तो एक कला आलोचक कैसे बनता !

गास्पार : यही तो गड़बड़ हो गई। *(विराम)*

फ़ाबियो : आउरोरा, अपना चेहरा धो लो ! ना ही तुम्हारी माँ और ना ही तुम्हारे दादा को इस कार्निवाल[17] के बारे में कुछ पता नहीं चलना चाहिए। *(घूमता है।)*

आउरोरा : तुम्हें कितना भी बुरा लगे लेकिन मैं मम्मी को इस बारे में ज़रूर बताऊँगी और दादा से तो गास्पार तुम्हारी परेशानियों पर बात कर चुका होगा।

गास्पार : अभी हमने इस पर बात नहीं की है। लेकिन मुझे लगता है कि वह जानता है।

फ़ाबियो : *(रुक जाता है।)* तुम लोग पगला गए हो। मैं कुछ नहीं पहचानता।

आउरोरा : इस बात को कोई नहीं झुठला सकता।

फ़ाबियो : हम इस बारे में बात करेंगे। लेकिन किसी भी हाल में तुम उसे कुछ नहीं बताओगी। *(तेरेसा दायीं ओर से आती है। आवाज़ सुनकर उन लोगों को देखती है। सामान्य। फ़ाबियो जड़ हो जाता है। तेरेसा का आउरोरा के अजीब मेकअप पर ध्यान नहीं जाता।)*

गास्पार : *(हड़बड़ी में उठता है।)* तेरेसा, सामान आ गया है। चलो, हम रसोई में चलते हैं! तुम मुझे बता दो कि इसे कहा रखूँ ? *(थैला उठाता है और तेरेसा के साथ जाने को होता है।)*

आउरोरा : *(बिना मुड़े)* नहीं।

फ़ाबियो : तेरेसा, गास्पार के साथ जाओ ! हम बात कर लेंगे।

---

[17] उत्सव

आउरोरा : हम अभी बात करेंगे। *(मुड़ती है। तेरेसा उसका चेहरा देखकर हैरान हो जाती है। पास जाती है और उसे ध्यान से देखती है।)*

तेरेसा : आउरोरा। *(हैरानी से सबको देखती है।)*

आउरोरा : यह कोई मज़ाक नहीं है।

फ़ाबियो : जाओ, अपना चेहरा धो लो !

आउरोरा : जब तक कि मम्मा मेरी बात नहीं सुन लेती, उससे पहले नहीं। यहाँ बैठो मम्मा !

तेरेसा : *(कठोरता से)* और तुम, तुम मुझे बताओ ! *(बैठ जाती है।)*

आउरोरा : मुझे यह नाटक करना पड़ा क्योंकि पापा हर सबूत को झुठला रहे थे। सचमुच मैंने तुम्हें यह बताना चाहा...

तेरेसा : *(पीली पड़ जाती है।)* कौन-सा सबूत ?

आउरोरा : मेरा विश्वास करो, मुझे बहुत दुःख है ... ! लेकिन यह ज़रूरी है कि तुम यह जान लो कि पापा की नज़र मेरे चेहरे पर नहीं गई ...

फ़ाबियो : *(नज़र नीची कर)* यह सच नहीं है।

आउरोरा : *(तेज़ आवाज़ में)* ये खुद को बचाने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि इन्हें मेरा चेहरा दिखाई नहीं देता। पापा रंगों में फ़र्क़ नहीं कर सकते ... ये कलरब्लाइंड हैं।

फ़ाबियो : *(बुझे स्वर में)* यह सच नहीं...

आउरोरा : गास्पार से पूछ लो !

तेरेसा : इस नाटक के पीछे तुम्हारा ही हाथ होगा ?

गास्पार : वही सवाल जो तुम्हारे पति ने किया... नहीं ! इस चेहरे के पीछे मेरा कोई हाथ नहीं।

आउरोरा : हरी सेब। जो सबने देखा। लेकिन पापा ने नहीं। *(गास्पार की समझ में नहीं आता कि कहाँ बैठे और वह चुपचाप सोफ़े पर जाकर बैठ जाता है।)*

तेरेसा : *(बहुत चिंतित होकर सबको देखती है।)* ऐसा ... नहीं हो सकता।

आउरोरा : पापा से पूछ लो ! हम भी देखें ये कैसे मना करते हैं।

तेरेसा : हज़ारों बार मैंने इनसे रंगों के बारे में बात की है... मैंने इन्हें कई बार उन रंगों के बारे में समझाते हुए देखा है जो हम देखते हैं ...

आउरोरा : ये बडे तेज़ हैं और मम्मा तुम मुझे इजाज़त दो कि मैं तुम्हें एक बेवकूफ़ाना बात बताऊँ।

तेरेसा : आउरोरा, तुम नहीं जानती कि तुम क्या कर रही हो। क्या तुम्हें यह मुमकिन लगता है कि ये तमाम कलाकारों, सहयोगियों और पाठकों को धोखा दे रहा है। *(ज़ोर से)* यह बहुत बड़ा पागलपन है। ऐसा तो हो ही नहीं सकता। *(फ़ाबियो के पास जाती है।)* फ़ाबियो ने जो कुछ हासिल किया है वही इसका जवाब है।

आउरोरा : ये नहीं देख सकते। *(लंबी चुप्पी)* देखो इन्हें ?

तेरेसा : नहीं ! यह झूठ है। *(फ़ाबियो के गले लग जाती है।)* ना ही इसने तुम्हारे चेहरे के बारे में कुछ कहा और ना ही इस भद्दे मज़ाक के जरिये, तुम इसे ठेस पहुँचा रही हो। उसके लिए कुछ कह रहा है। *(फ़ाबियो को चूमती है।)* उसे मत सुनो, वह अपने दुःख की वजह से पगला गई है।

आउरोरा : बेचारी मम्मा! सबूत सामने है। तुम इसे देखो या नहीं, अब तुम्हें पता चलेगा कि तुमने कैसे इंसान से शादी की है। *(फ़ाबियो तेरेसा से अलग होकर बायीं ओर जाता है।)*

तेरेसा : कहाँ जा रहे हो ?

आउरोरा : *(रोककर)* अभी मैंने ख़त्म नहीं किया।

फ़ाबियो : मुझे जाने दो !

आउरोरा : *(बिना हटे।)* अब मैं जो कहने जा रही हूँ उसका तुम पर सबसे ज़्यादा असर होगा। *(वह हट जाती है। इस विश्वास के साथ के उसके पापा नहीं जाएँगे। उसे देखने के लिए*

फ़ाबियो मुड़ता है आउरोरा बीच में खड़ी हो जाती है।) तुम ईमानदार इंसान थे या सिर्फ़ इसका दिखावा करते थे। तुम लोगों ने सिखाया है मुझे सच और बड़ों की इज्ज़त करना। इसलिए आजकल मैं हैरान रहती हूँ क्योंकि जो मुझे पता चला वह मेरे लिए ज़रूरी नहीं था... उससे भी ज़्यादा जो मैं चाहती थी।

तेरेसा : तुम... क्या कह ... रही हो ?

आउरोरा : मेरे पापा सालों से लोगों को धोखा देते आ रहे हैं। एक ऐसा धोखेबाज़ जो शायद अब तक पकड़ा नहीं गया, लेकिन क्यों, यह सबको जानने का हक़ है।

तेरेसा : *(बुरी तरह डरी हुई)* आउरोरा !

आउरोरा : मैं जर्नलिस्ट बनने जा रही हूँ और मैं जानती हूँ कि यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं यह सच सबको बताऊँ फिर चाहे यह सचाई कितनी ही तकलीफ़देह क्यों न हो, मुझे यह करना ही होगा। *(अपने बैग से एक पेपर निकालती है।)* यह जानते हुए कि मैं अपने ही पापा को तकलीफ़ पहुँचा रही हूँ मैंने प्रेस को इस ख़त में सब कुछ लिख दिया है। *(अपनी माँ को पेपर दे देती है। तेरेसा जल्दी-जल्दी उसे पढ़ती है। आउरोरा उँगली उठाकर बताती है।)* मेरे पास इसकी कई कापियाँ हैं।

तेरेसा : तुम इस ख़त को पोस्ट नहीं करोगी।

आउरोरा : *(घबरायी)* परसों। अगर तुमने ऐसा ही ख़त लिखकर नहीं भेजा... *(अपने पिता के सामने)* तो मैं यह ख़त भेज दूँगी। *(फ़ाबियो तेरेसा से ख़त झपट लेता है और पढ़ता है।)* मैं जानती हूँ कि मुझे तुमसे क्या चाहिए ! तुम्हारी बदनामी। *(गला भर आता है।)* फिर भी मैं चाहती हूँ कि तुम यह करो। क्योंकि मुझे नहीं लगता कि तुम इससे बेहतर कुछ और कर सकते हो।

तेरेसा : *(फ़ुसफ़ुसाती हुई)* तुम पागल हो गयी हो ! *(फ़ाबियो पेपर को तोड़-मरोड़कर फ़र्श पर फेंक देता है और थोड़ा मुड़कर बायीं ओर से तेज़ी से चला जाता है।)* फ़ाबियो मत जाओ ! *(पेपर को उठा जल्दी से उसके पीछे जाती है। काँपती हुई आउरोरा उन्हें जाते हुए देखती है और एक कराह के साथ कुर्सी पर बैठ जाती है। गास्पार उठकर उसके पास जाता है।)*

गास्पार : तो तुमने तय कर लिया ?

आउरोरा : हाँ।

गास्पार : मुझे लगता है कि अगर तुमने इस पर विचार किया है तो तुम ऐसा नहीं करोगी।

आउरोरा : यह मेरी ज़िम्मेदारी है।

गास्पार : और ...तुम्हारी नैतिक ज़िम्मेदारी ?

आउरोरा : और सामाजिक।

गास्पार : *(हँसते हुए।)* नैतिकता का बेकार का दिखावा ...

आउरोरा : बेकार यानी ?

गास्पार : बुर्जुआ लोगों का।

आउरोरा : तुम कहना चाहते हो कि बुर्जुआ होना गुनाह है ?

गास्पार : कभी-कभी।

आउरोरा : और यह उन कभी-कभी में से एक है ?

गास्पार : मैं नहीं जानता कि तुमने अब तक किया कि नहीं और जल्द ही तुम अपनी अख़बारी शुरूआत करने के लिए अपने पापा का पर्दाफ़ाश करोगी। एक घरेलू मामला, जो कुछ हुआ, उस सबके बावजूद, यह उतना जरूरी नहीं था।

आउरोरा : जब मैं इसके इतने पास पहुँच गई हूँ तो तुम मुझे सलाह दे रहे हो कि मैं इसे छिपा लूँ ?

गास्पार : *(थोड़ा हँसता है।)* तुम मुझे विद्रोह का पाठ पढ़ाना चाहती हो ?

आउरोरा : क्यों नहीं ? अब मैं देख सकती हूँ कि दूसरे बूड्ढों की तरह तुम भी थक गए हो। या फिर तुम नहीं चाहते कि इस घर की बुनियाद हिल जाए और तुम्हारे आसरे को कोई ख़तरा पहुँचे ?

गास्पार : *(खड़ा होकर उसे रुखाई से देखता है।)* मैं तुम्हारी इस बेवकूफ़ी का जवाब नहीं दूँगा। शायद एक दिन तुम समझ जाओ कि एक बागी अपने बाप की नाकाबिलियत का पर्दाफ़ाश करने के लिए इतनी जल्दबाज़ी नहीं करता। तुम्हारे पास करने के लिए और भी चीज़ें हैं।

आउरोरा : मैं ऐसा ना करूँ क्योंकि वह मेरे पापा हैं। मैंने ऐसा इसलिए किया कि ये एक धोखा है, और धोखेबाज़ों का नकाब उतारना सामाजिक तौर पर ज़रूरी है।

गास्पार : *(शांति के साथ)* सुनो आउरोरा, तुम्हारे पापा एक धोखेबाज़ हैं लेकिन फिर भी ... यह एक बहुत संजीदा मामला है। मैंने सोचा अगर उसे एक मौक़ा मिल जाता।

आउरोरा : वह तो मैं दे चुकी हूँ !

गास्पार : वह ख़त, जो तुमने उसे लिखने के लिए कहा ?

आउरोरा : बिल्कुल।

गास्पार : उस पर दोबारा विचार करो ।

आउरोरा : आख़िरी रास्ता जो उसके पास बचा है।

गास्पार : ज़बरदस्ती से ?

आउरोरा : *(उठकर घूमती है। उतावली होकर।)* ज़बरदस्ती ही सही।

गास्पार : *(मज़ाक में)* एक नैतिक बग़ावत ।

आउरोरा : तुमने ही तो ऐसा कहा है।

गास्पार : हाँ, लेकिन... तुम इतना इतमीनान कैसे रख सकती हो कि जो नैतिक बग़ावत छेड़ने का तुम साहस कर रही हो, वह उस मौत का बदला नहीं है जिसके लिए तुम उसे अपराधी समझती हो। *(आउरोरा उसे अपलक देखती है। मेज़ के पास आती है और उस पर झुक जाती है। गास्पार की ओर पीठ करके)* अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारी नैतिकता कुछ और होगी। ढोंग की। झूठ की।

आउरोरा : *(कमज़ोर पड़कर)* हमारे समाज में..., हमारी तहज़ीब में..., धोखेबाज़ लोग हैं...

गास्पार : मैं मना नहीं करता। लेकिन मैं तुम्हें उस तकलीफ़ से आगाह कर रहा हूँ जो तुम्हें इस आपसी दुश्मनी के चलते जीवनभर के लिए हो सकती है। अगर तुम्हारे दोस्त की मौत न हुई होती तो भी क्या तुम ऐसा करती ?

आउरोरा : लेकिन उसे सज़ा मिलनी चाहिए।

गास्पार : और मैं भी। लेकिन अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो सज़ा सुनाने से पहले एकबार और इस बारे में सोचता। *(विराम। मेज़ के पास जाता है और आउरोरा के पास बैठ जाता है।)* तुम उसे बहुत प्यार करती थी, है ना ? *(वह सिर हिलाकर स्वीकारती है।)* और वह ... तुमसे ज़्यादा अपनी पेंटिंग को या ख़ुद को। इसके बरक्स वह नहीं मरता। *(आउरोरा धीरे-धीरे अपनी आँखें उसकी ओर घुमाती है, हैरानी से। गास्पार की नज़रें शून्य में टँगी हैं, वह उसके कंधे पर हाथ रखता है।)*

आउरोरा : *(विश्वास दिलाने की कोशिश करती है।)* वह मुझे प्यार करता था।

गास्पार : मुझे शक़ है।

आउरोरा : *(अपना चेहरा छिपाकर)* मैं इस घर से चली जाऊँगी।

गास्पार : *(दुःखी होकर)* मैं भी। *(आउरोरा के कंधे से हाथ हटा लेता है। शांति। बायीं ओर से तेरेसा दिखाई देती है। उसके चेहरे का रंग बदला हुआ है और वहीं से देखती है। आउरोरा उसे देख लेती है। दायीं ओर के पहले छोर की ओर जाने लगती है। गास्पार उठता है।)*

तेरेसा : मुझे नहीं मालूम वह कहाँ गया... वह मेरी आँखों से ओझल हो गया। *(आगे बढ़कर कुर्सी का सहारा लेती है।)* शायद वह कभी वापस न लौटे। वह आउरोरा का सामना नहीं करना चाहेगा।

गास्पार : वह मेरा सामना भी नहीं करना चाहेगा। *(तेरेसा परेशान-सी देखती है।)* फिर भी मुझे विश्वास है वह लौटेगा। क्योंकि यहाँ ऐसा कोई है... जिसे वह फिर से देखना चाहेगा। *(दोनों माँ-बेटी हैरानी से उसे देखती हैं।)* अरे, मेरा दिमाग़ काम नहीं कर रहा। *(हँसता है।)*

लगता है मुझे एक और जाम की ज़रूरत है। *(बार तक जाता है। दूसरा गिलास भरता है। दायीं ओर से ब्राउलियो का प्रवेश।)*

ब्राउलियो : अपने बालों की सफ़ेदी तो देखी होती।

गास्पार : मुझे तेरेसा ने बाज़ार भेजा था।

ब्राउलियो : चलो, तुमने वैसे ही बहुत पी ली है । अब चलते हैं और इस बोतल को यहीं छोड़ दो। वहाँ हम कुछ और जाम ले लेंगे। शायद हमें फिर निसेतो मिल जाए। तेरेसा, वह बर्बाद हो चुका है। ऐसा लगतो है जैसे उसे सान वीता[18] नाच बीमारी हो गई हो। *(इनकार में हाथ हिलाता है।)*

गास्पार : चलो चलें।

ब्राउलियो : हाँ... रुको ! *(आउरोरा के पास जाकर)* अब तुम पहले से बेहतर हो ना बेटा ?

आउरोरा : (अपना चेहरा छिपाने के लिए पीठ फेर कर) हाँ। दादाजी, आप चिंता न करें।

ब्राउलियो : तुम भी चिंता मत करो। *(प्यार से गले लगाता है।)* किसी भी बात की फ़िक्र मत करो। ठीक है ? हमेशा आगे बढ़ते रहो।

गास्पार : *(उसे खींचता है।)* अब चलते हैं।

ब्राउलियो : फिर मिलते हैं तेरेसा ! मैं और गास्पार अपने पुराने दिनों में वापस जा रहे हैं। जो भी हो बड़े अच्छे थे वे दिन ! है ना गास्पार ?

गास्पार : भूखे-प्यासे, लेकिन बड़े अच्छे। *(बायीं ओर से चले जाते हैं। माँ-बेटी एक दूसरे को देखती हैं। आउरोरा दायीं ओर से जाने को होती है।)*

तेरेसा : मैं तुम्हारी खुशी का अंदाज़ा लगा सकती हूँ ...

---

[18] मिरगी, अपस्मार

आउरोरा : *(भड़ककर वापस आती है।)* तुम भी मुझे ग़लत समझ रही हो। उस सुअर ने ताज़िंदगी तुम्हें धोखा दिया, हम सबको धोखा दिया और उसके बावजूद वह उन लोगों की कमियाँ निकालने की गुस्ताख़ी करता है जो उससे हज़ारगुना बेहतर है!

तेरेसा : नहीं आउरोरा।

आउरोरा : *(तल्ख़ी से)* वह एक ठग है जिसने आगे बढ़ने के लिए पूरे समाज को ठगा है... *(तेरेसा अपने पति की आरामकुर्सी पर बैठ जाती है। तेरेसा का ध्यान कहीं और है। काँपते हाथों से मेज़ पर पड़े उन पन्नों को छूती है। उत्तेजित आउरोरा तेरेसा के पास आती है।)* वह जेल जाएगा।

तेरेसा : *(स्नेह के साथ)* उसे बर्बाद मत करो !

आउरोरा : उसने अपने आपको ख़ुद ही बर्बाद किया है और हमें भी। उसका झूठ एक बम की तरह फटेगा और हम सबको तबाह कर देगा। *(सिहर जाती है।)* मम्मा, हम इस घर से चले जाते हैं। मेरे पास कुछ लेख हैं और तुम स्कूल में पढ़ाती हो। हम इस कलंक से अपना पीछा छुड़ा लेते है।... चलोगी ?

तेरेसा : *(हिम्मत करके)* तुम अपने पापा और ख़ुद तुम, इनमें से किसी एक को चुनने पर मजबूर मत करो !

आउरोरा : *(तेरेसा के पास घुटनों के बल, उसका हाथ अपने हाथ में लेकर।)* तुम्हें चुनाव करना होगा मम्मा ! मेरे और पापा के बीच नहीं, सच और झूठ के बीच ! उस छलावे की ज़िदगी से तुम्हें बाहर आना ही होगा।

तेरेसा : ख़ामोश।

आउरोरा : तुम अब यह जान गई हो कि तुम्हारी शादी एक झूठी बुनियाद पर टिकी हुई थी। मेरे साथ चलो या तुम अबी भी उसके साथ रहना चाहोगी जबकि मैं तुम लोगों को छोड़कर चली जाऊँगी ?

तेरेसा : मैं चाहती हूँ कि... तुम मत जाओ।

आउरोरा : *(स्नेह से)* तुम उसके साथ रहना चाहती हो। *(उठती है।)* एक अच्छी बीवी की तरह। *(कुछ क़दम उससे दूर चलती है।)* अगर पति कमीना हो तो क्या फ़र्क़ पड़ता है। आख़िर वह एक पति है ...

तेरेसा : आउरोरा, तुम समझ नहीं रही हो।

आउरोरा : हाँ, मैं समझ गई हूँ। तुम जितनी पक्के इरादेवाली दिखती थी उतनी हो नहीं। मुझे तुम्हें भी भूलना सिखना होगा।

तेरेसा : *(उठती है।)* तुम्हें ऐसा लगता है ? अब तुम मेरी सुनो ! अगर तुम्हारे पापा एक मतलबी और ढोंगी इंसान होते तो मैं इस घर को छोड़ने में हिचकिचाती नहीं *(गंभीरता से)* लेकिन वह वैसे नहीं है जैसा तुम कह रही हो।

आउरोरा : क्या नहीं हैं ?

तेरेसा : तुम उसे समझने के लिए काफ़ी कुछ जानती हो। एक नायाब इंसान।

आउरोरा : बेमिसाल ?

तेरेसा : एक नायाब इंसान जिसने कभी किसी से नौकरी के लिए हाथ नहीं फैलाया, अपने फ़ायदे के लिए किसी के तलवे नहीं चाटे और न ही लुटेरों की इस दुनिया में किसी की एक कानी-कौड़ी का भी फ़ायदा उठाया। एक ऐसा नायाब इंसान – जिसने हर ज़रूरतमंद की मदद की। गास्पार-जैसे आदमी को सहारा दिया और सही चीज़ का साथ दिया, चाहे उससे उसका नुक़सान ही क्यों न हुआ हो। नायाब इंसान वह है जो सबको तहेदिल से प्यार करना जानता है और बिना किसी भेदभाव के अपना सबकुछ उन पर लुटा देता है।

आउरोरा : *(उदासीन)* मुझे लगता है तुम्हारी देह से भी।

तेरेसा : *(जैसे किसी ने उसके चेहरे पर तमाचा जड़ दिया हो)* मैं ऐसी बदतमीज़ी हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करूँगी।

आउरोरा : बेवकूफ़ औरत। अपने पैरों पर खड़ी एक प्रोफ़ेसर जो अपने पति की बेहतर तस्वीर बनाने में लगी है क्योंकि वह उसके बिना नहीं रह सकती। फ़ैमिनिज़्म– जो एक दिखावे से ज़्यादा कुछ नहीं...

तेरेसा : तुम मेरी हँसी उड़ा रही हो... तुम जानती हो कि ना तो तुम्हारे पापा और ना ही मैं इन लफ़्ज़ों को बर्दाश्त कर सकते हैं। फिर भी मैं तुम्हें इन बातों के लिए माफ़ करती हूँ... क्योंकि यह प्यार है, ना कि सेक्स जिसकी वजह से तुम हम लोगों के इतने ख़िलाफ़ हो गई हो।

आउरोरा : मैं तुम्हें ऐसी तुलना करने की इजाज़त नहीं दूँगी। सामूएल एक नशेबाज़ था, लेकिन वह एक बड़ा पेंटर और सच्चा कलाकार था और मुझे प्यार करता था... जैसे मैं उसे करती हूँ। *(खीज से)* जबकि, मेरा बाप, पक्का धोखेबाज़ है और एक धोखेबाज़ किसी से सच्चा प्यार नहीं कर सकता और मुझे लगता है, अगर तुममें थोड़ी भी खुद्दारी है, तो तुम एक ऐसे धोखेबाज़ से कभी प्यार नहीं कर सकती।

तेरेसा : अगर उसने झूठ कहा है तो भी वह एक धोखेबाज़ नहीं। *(पीली पड़ी हुई, बेचैन होकर)* यह... बड़े दुःख की बात है... जो तुम समझना नहीं चाहती।

आउरोरा : अगर इसी में तुम्हारी खुशी है तुम अपनी तकलीफ़ के साथ मज़े से रहो। *(गला भारी हो जाता है।)* मैं जानती हूँ कि मुझे क्या करना है ! *(दायीं ओर से गैलरी में भाग जाती है। तेरेसा मेज़ तक पहुँचती है, हाथ आगे कर उससे रुक जाने का आग्रह करती है और मेज़ का सहारा ले लेती है। रोशनी धीरे-धीरे कम होने लगती है। पेंटिंग के रंग चमकने लगते हैं। उसी समय वाग्नेर के समवेत गान के पहले तीन अंश बजने लगते हैं। पेंटिंग की चमक कम हो जाती है। अंधेरा। संगीत के साथ धीरे-धीरे रोशनी फैलने लगती है। मुख्य बत्ती और लैम्प जल जाते हैं। अगला दिन : शाम। मेज़ पर ना ही कोई किताब है और ना ही कोई गिलास, ना ही कोई बैग। तेरेसा आवक्ष मूर्ति के पास खड़ी है। उसकी सुंदरता कम हो गयी है जैसे वह बूढ़ी हो गयी है। सामने दरवाज़े पर दस्तक देकर उसे खोलना चाहती है और फ़ाबियो अंदर से बंद दरवाज़ा खुलता है।, अंदर बत्ती जल रही है।)*

तेरेसा : [माफ़ करना मैंने तुम्हें परेशान किया] सबने कुछ न कुछ खा लिया है। तुम्हारे लिए कुछ लाऊँ ?

फ़ाबियो : *(फ़ाबियो की आवाज़)* मुझे भूख नहीं है।

तेरेसा : जैसी तुम्हारी मर्जी। *(धीरे-से दरवाज़ा बंद कर देती है। हताश-सी बैठ जाती है और दरवाज़े को देखती रहती है। बायीं ओर से गास्पार का प्रवेश।)*

गास्पार : वह कहाँ है ?

तेरेसा : वहाँ अंदर।

गास्पार : कब वापस लौटा ?

तेरेसा : कल रात, काफ़ी देर बाद।

गास्पार : *(उसके पास जाता है। शब्द खोजता है।)* कल.... उसकी...। *(माथे पर हाथ रखता है।)* उसकी... उसकी... आख़िरी तारीख़ ख़त्म हो जाएगी।

तेरेसा : तुम एक जाम क्यों नहीं ले लेते ?

गास्पार : बहुत शुक्रिया। *(बार में जाता है और रेड वाईन का एक गिलास लेता है। इसी दौरान वह बोलती है।)*

तेरेसा : आज सुबह मेरी आँखें देर से खुलीं। मुझे लगा कि वह उठा हुआ है और मुझसे बात नहीं करना चाहता ... वह उठा और अपने पन्ने लेकर कमरे में चला गया। उसने वहीं खाना खाया और अब रात को खाने का उसका मन नहीं है। मेरी ... समझ नहीं आ रहा मैं क्या करूँ...। मुझे लगता है उसने ख़ुद को अपने काम में झोंक दिया है। वह यह भी नहीं जानता... *(गास्पार वाईन पी रहा है।)* लेकिन ऐसे नहीं चल सकता।

गास्पार : अल्टीमेटम ! वह...शब्द जो मुझे सूझ नहीं रहा था। क्या दिमाग़ पाया है मैंने !

तेरेसा : तुम आउरोरा के अल्टीमेटम की बात कर रहे हो ?

गास्पार : हाँ। कल है ?

तेरेसा : कल *(आँखें फाड़कर, वह दरवाज़े की ओर इशारा करती है।)* वह ख़त लिखने की कोशिश ...करेगा ?

गास्पार : मुझे नहीं लगता कि वह लिखेगा।

तेरेसा : मुझे भी नहीं ।

गास्पार : तुम्हारी बेटी घर में है ?

तेरेसा : हाँ, अपने कमरे में। बेहतर होगा कि उन दोनों का आमना-सामना ना हो।

गास्पार : और ब्राउलियो ?

तेरेसा : वह झल्लाया हुआ यहाँ से वहाँ घूम रहा था और शिकायत कर रहा था कि यहाँ ऐसा कुछ हो रहा है जो हम उसे बताना नहीं चाहते.....

गास्पार : *(उसके बग़ल में बैठ जाता है।)* और तुम बहुत अकेला महसूस कर रही हो *(एक घूँट पीता है।)* इस तूफ़ान से जूझ रही हो। *(नज़रें फेर लेती है।)* तेरेसा, मैं सत्तर साल का हो गया हूँ और तुम मेरी बातों का ग़लत मतलब नहीं निकाल सकती। काश ! मुझे भी तुम्हारी जैसी एक औरत मिली होती... लेकिन चौबीस साल जेल में रहने के बाद ज़्यादातर रास्ते बंद हो जाते है....

तेरेसा : *(दुःखभरी हँसी के साथ।)* कोई बात नहीं ! तारीफ़ हमेशा बुरे समय में हौसला बढ़ाया करती है।

गास्पार : तुम कितनी अच्छी बीवी हो!

तेरेसा : मैं ?

गास्पार : एकदम वफ़ादार। और मैं तुम्हें वे बातें नहीं बताऊँगा जो मैं तुम्हारे बारे में जानता हूँ... क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम उसे सुनना नहीं चाहती। *(एक दूसरे को देखते हैं।)*

तेरेसा : तुम कहते रहो। मैंने पाया है कि मैं ग़लत हूँ ?

गास्पार : इस मामले में मैं तुम लोगों की कोई मदद नहीं कर सकता और ना ही तुम लोगों को और परेशान करूँगा।

तेरेसा : तुम्हीं सही हो।

गास्पार : और इस ख़तरे से भागूँगा भी नहीं। क्योंकि यही बेहतर होगा और ब्राउलियो... उसे बताना तो बेकार है.... न ही यह मेरा मामला है।

तेरेसा : मुझे लगता है कि तुम .....उसे कुछ ख़ास तरजीह नहीं देते।

गास्पार : कुछ ख़ास नहीं। *(उठता है, घूमने लगता है।)*

तेरेसा : फिर भी तुमने उस बुरे वक़्त में उसकी मदद की।

गास्पार : *(अपने कंधे उचकाता है।)* तब वह एक दूसरा ही आदमी था और वह फ़ैसला मेरा नहीं था। कामरेड ही यह फ़ैसला करते थे कि किसे किसकी मदद करनी है ? *(जाम ख़त्म कर उसे वापस रख देता है।)*

तेरेसा : तुम्हारा क्या होगा?

गास्पार : *(नज़दीक आकर)* तुम मेरी तकलीफ़ों की फ़िक्र मत करो। अपनी फ़िक्र करो क्योंकि वह ज़्यादा बड़ी है। *(उसके कंधे पर हाथ रखता है।)* आगे बढ़ो! *(पीछे हटता है। तेरेसा की पीठ के पीछे टँगी पेंटिंग को देखता है। फिर तेरेसा को देखता है। सामनेवाला दरवाज़ा खुलता है। फ़ाबियो का प्रवेश।)*

फ़ाबियो : माफ़ करना, मुझे लगा कि कोई नहीं है...।

तेरेसा : *(उठती है।)* आओ फ़ाबियो, तुम सबसे अलग-थलग ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकते। जब तक मैं तुम्हारे लिए कुछ बनाऊँ, तब तक तुम कुछ देर गास्पार से बात क्यों नहीं करते!

फ़ाबियो : शुक्रिया ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। *(फिर से सामने वाले कमरे में जाने को होता है।)*

तेरेसा : रुको ! गास्पार तुम्हें कुछ बताना चाहता है।

फ़ाबियो : अच्छा ?

तेरेसा : वह हमें छोड़कर जा रहा है।

फ़ाबियो : *(शक से उसे देखता है।)* तुम जा रहे हो ?

गास्पार : आज रात।

तेरेसा : कल सुबह जाना ठीक नहीं रहेगा ? तुम रात को कहाँ सोओगे ?

गास्पार : मैं कहीं भी सो जाऊँगा। मैंने अपना थैला बाहर रख दिया है। ये लो इस फ़्लैट और ऊपर वाले कमरे की चाबियाँ। *(चाबियाँ तेरेसा को देता है।)* कुछ दिनों में... जब ब्राउलियो बहुत ऊब जाए...., तो तुम दोनों उसे कह देना कि मैं किसी काम से गया हूँ और अलविदा कहने का भी मेरे पास समय नहीं था। *(लम्बी चुप्पी।)* तुम तीनों का बहुत-बहुत शुक्रिया !

फ़ाबियो : वापस तो आओगे ?

गास्पार : मुझे नहीं लगता। *(फ़ाबियो बेचैन हो जाता है। जेब में सिगरेट ढूँढ़ता है। एक सिगरेट निकालता है।)*

फ़ाबियो : आउरोरा कहाँ है ?

तेरेसा : अपने कमरे में।

फ़ाबियो : वह एक जल्लाद की तरह ...उस घड़ी का इंतज़ार कर रही है। *(सिगरेट जलाता है और घूमने लगता है।)*

तेरेसा : *(चौंकते हुए)* क्या कहा ?

फ़ाबियो : *(रुकता है और पहली बार तेरेसा की आँखें में आँखें डालकर देखता है।)* मैं किसी भी हाल में यह ख़त नहीं लिख सकता। वह... झूठी साबित होगी।

तेरेसा : *(नज़रें नीचे कर।)* मुझे नहीं लगता कि तुम लिख पाओगे। *(कुछ देर सोचता है।)*

फ़ाबियो : गास्पार, तुम चले जाओ, इससे पहले हम कुछ देर बातें कर सकते हैं ?

गास्पार : अगर तुम चाहो...

फ़ाबियो : अकेले में, अगर तुम बुरा न मानो, तेरेसा।

तेरेसा : बिल्कुल नहीं। *(जाने को होती है।)*

गास्पार : इसके सामने और बिटिया के सामने बातें करना ठीक नहीं रहेगा ? । जब तक ब्राउलियो आए।

फ़ाबियो : बिल्कुल नहीं।

गास्पार : कम-से-कम तेरेसा को तो यहाँ रहने दो।

फ़ाबियो : *(आँखें बंद करके)* गास्पार, प्लीज़... अकेले में।

तेरेसा : जैसा तुम कहो। *(दायीं ओर से चली जाती है। फ़ाबियो गैलरी के आख़िर तक उसकी ग़ैरमौजूदगी को महसूस कर ख़ुद को आश्वस्त करता है।)*

फ़ाबियो : *(गास्पार पर हँसते हुए।)* तुम्हारे लिए एक गिलास बना दूँ ?

गास्पार : *(हँसता है।)* आज पूरी दुनिया मुझे दावत दे रही है! यह एक रिश्वत है ?

फ़ाबियो : नहीं, और न ही मुझे यह लफ़्ज़ पसंद है। मैं तुम्हारे साथ पीऊँगा। क्योंकि मुझे ज़रूरत है।

गास्पार : *(उसके पास आता है, हँसता है।)* मेरा दिमाग़ बहुत तेज़ है इसलिए मैं तुम्हें भाँप गया।

फ़ाबियो : मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। एक और जाम ?

गास्पार : *(हँसते हुए)* जैसा तुम चाहो भाई ! लेकिन एक से ज़्यादा नहीं। *(पक्के इरादे से)* बस थोड़ा-सा। *(इसी बीच, फ़ाबियो दोनों गिलास आवक्ष मूर्ति पर गिरा देता है।)* तुम्हें क्या लगता है दोस्त! ये बुर्जुआ लोग मुझे ज़रूरत से ज़्यादा पिला देते है।

फ़ाबियो : भगवान के लिए, मज़ाक बंद करो। तुम शर्मिंदा नहीं हो ?

गास्पार : मैं शर्मिंदा हूँ। *(पहले छोर पर रखे सोफ़े के कोने पर बैठ जाता है। फ़ाबियो दो भरे हुए गिलास वापस आता है : एक रेड वाईन का और दूसरा ह्विस्की का।)*

फ़ाबियो : वहाँ नहीं ।

गास्पार : *(खड़ा होने को होता है।)* नहीं ?

फ़ाबियो : अच्छा, हाँ। *(पास जाकर गास्पार को गिलास देता है। बीच वाली मेज़ का सहारा लेकर खड़ा हो जाता है।)* मुझे लगता है तुमने मुझे नीचा दिखाया।

गास्पार : *(एक घूँट पीकर)* मैं तुम्हें बताऊँगा...

फ़ाबियो : *(थोड़ा पीता है।)* गास्पार क्या है तुम्हारा दो टूक फ़ैसला ? मुझे वह ख़त छपवाना चाहिए ?

गास्पार : मैं कह चुका हूँ कि तुम वह नहीं करोगे।

फ़ाबियो : क्या फ़र्क़ पड़ता है ? तुम्हारा क्या ख़याल है ?

गास्पार : तुम कलरब्लाइंड हो और तुमने लोगों को धोखा दिया है। मानते हो ना ?

फ़ाबियो : *(बड़े प्यार से)* हाँ।

गास्पार : अगर तुम इसके बाद भी काम जारी रखते हो तो यह एक और धोखा होगा। अगर आउरोरा ने तुम्हें ख़त की धमकी नहीं दी होती तो क्या तुम लोगों के सामने अपना गुनाह क़बूल करते ? क्या बात है ! तुममें हिम्मत ही नहीं है। *(पीता है।)* ओह, ये अमीर... मेरी बदकिस्मती। *(उसे देखता है।)* मैं समझ सकता हूँ। तुम जिस मुकाम पर हो वहाँ तक पहुँचने के लिए तुमने बहुत मेहनत की है और अब तुम्हें बदनामी का डर सता रहा है। तुम ख़ुद में एक झूठ हो। अगर तुम उसे फलांगकर आगे भी बढ़ते हो, तो क्या होगा ? कुछ नहीं।

फ़ाबियो : *(अपना गिलास मेज़ पर रखकर, हाथों को मोड़ते हुए।)* सब कुछ झूठ नहीं था। मैंने बेहतरीन काम भी किये हैं.... काबिलेतारीफ़ किताबें लिखी हैं।

गास्पार : वो मैं नहीं जानता। [मुझमें कला की समझ नहीं है।] हाँ, मैं मानता हूँ तुम इसके काबिल हो, लेकिन तुम सबको धोखा दे रहे हो। लेकिन तुम ऐसे कोई अकेले नहीं

हो और ना ही कम हो.... ठीक, हाँ तुम अलग हो, लेकिन दूसरे मायने में जो मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा। धोखबाज़ी की तरह तुम भी आबरू वाले हो। क्योंकि धोखाधड़ी तो पूरी दुनिया करती है। [या बढ़ा-चढ़कर कहूँ, तो सभी करते हैं।] जो तुम जैसा बनना चाहते हैं, लोगों को धोखा दो या उनका फायदा उठाओ, यहीं इस जंगली दुनिया का नियम है। उस इंसान की तरह जो किसी विषय के बारे में बहुत जानता है लेकिन फिर भी यह दिखावा करता है कि वह अपनी जानकारी से कहीं ज़्यादा जानता है। *(पीता है।)* [हाँ.... हो सकता है कि तुम्हारी किताबें उन लेखकों की किताबों से अच्छी हो जिन्हें रंगों की बहुत अच्छी पहचान हैं।]

फ़ाबियो : तो फिर ?....

गास्पार : तो फिर यह पूरी दुनिया साफ़-साफ़ पोकर[19] के खेल जैसी है लेकिन यह आम बात है और तुम इस गंदगी का हिस्सा हो। बेरोज़गारी से बचने के लिए हर कोई ख़ुद को बचाने की कोशिश करता है।

फ़ाबियो : फिर वही बेरोज़गारी का रोना ?

गास्पार : आमतौर पर, कोई भी ज़िंदगी में मिलने वाले धोखे की गारंटी नहीं देता जबकि क़ानून भी यही कहता है कि तुम्हें [काम करने और] खाने का हक़ है ... यहाँ तक कि कल के नवाब भी बेरोज़गारी से डरते हैं : वे लोग भी ऐसे पैसा ख़र्च करते हैं जैसे उनके पैसे ख़त्म होने वाले हैं और तुम इसी डर से ही मर रहे हो कि तुम्हारा झूठ पकड़ा गया... एक मामूली-सी बात पर।

फ़ाबियो : तुम कह रहे हो कि ऐसा नहीं था।

गास्पार : अब हम इस बारे में बात करेंगे। एक मोटी-सी बात, तुम्हें ज़्यादा चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। वे लोग जान जाएँगे कि तुम कलरब्लाइंड हो और क्या ? थू थू होगी, तुम्हारा मज़ाक उड़ाएँगे ... [थोड़ी-सी बेइज्ज़ती होगी] लेकिन वे लोग तुम्हें दुतकारेंगे

[19] ताश के पत्तों का एक खेल।

नहीं। कभी भी नहीं। कुछ समय बाद सब भूल जाएँगे और तुम्हें मेडल देने के लिए बहस हो रही होगी।

फ़ाबियो : क्या बक रहे हो ?

गास्पार : तुमने कभी ध्यान नहीं दिया ? यही इस घिनौनी दुनिया की ख़ासियत है। एक कमीना दूसरे कमीने को सहारा देता है। जब तक तुम अपना सामान बाँधकर नहीं जाते वे तुम्हारा मज़ाक उड़ाते रहेंगे। लेकिन थोड़ा-सा चेहरा बनाकर तुम आगे बढ़ते रहो और जलसों में इंसानी ज़मीर पर भाषण झाड़ते रहो और फिर वही लोग तुम्हें एक मेडल भी देंगे।

फ़ाबियो : *(बेसब्री से)* गास्पार, मैंने तुमसे पूछा है ...

गास्पार : कोई तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएगा। क्योंकि तुम्हारी लड़की ने ही तुम्हें दुनिया के सामने नंगा कर दिया। एक साल बाद कहेंगे : "छिः छिः, कौन जानता है कि यह एक मामूली-सा घरेलू मामला था ?" और तुम इस गंदी दुनिया में आराम से रहो। *(दुःखी फ़ाबियो अपनी आरामकुर्सी के पास जाता है और बैठ जाता है।)* यह गंदी दुनिया बड़ी सलीकेदार है जिसने कई तरीक़े ईज़ाद कर लिए है, लेकिन यह कलरब्लाइंडनेस की पनाहगाह है... तुम मुझे समझ रहे हो..., हर कोई अपने तरीक़े से ...और हम सब किसी न किसी मुसीबत की ओर बढ़ रहे हैं।

फ़ाबियो : मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा। एक तरफ़ तो तुम समाज पर इल्ज़ाम मढ़ रहे हो और दूसरी तरफ़ तुम एक बुर्जुआ बनकर उपदेशक की तरह मुझे सीख दे रहे हो और मुझ पर इल्ज़ाम भी मढ़ रहे हो। मुझे इस दिखावे की जहनीयत पर हँसी आ रही है !

गास्पार : *(हँसता है।)* और मैं...

फ़ाबियो : आख़िरकार तुम मुझे कहना क्या चाहते हो ?

गास्पार : देखो, यह समाज हर एक की चालाकियों के लिए ज़िम्मेदार है, इसलिए यह सारा दोष तुम पर नहीं मढ़ सकता। मिसाल के लिए, तुम अपनी ही मिसाल लो। *(उठता*

है।) मुझे एक आख़िरी सिगरेट दोगे ? *(फ़ाबियो बेमन से उसे सिगरेट देता है।)* ऐसा मत सोचो कि हमेशा मध्यवर्गीय लोगों में ही यह निजी ज़मीर होता है। *(सिगरेट जलाकर घूमता है। मुड़ता है और उसे गंभीरता से देखता है।)* हम लोगों की भी निजी नीतियाँ होती हैं और मैं अभी भी उसमें यकीन करता हूँ। हमारे आसपास बहुत से धोखेबाज़ और तेज़ इंसान रहते हैं लेकिन हमारी नैतिकता उनको दबा देती है। अच्छे लोगों ने कभी अपने दोस्तों को धोखा नहीं दिया होगा। अगर कलरब्लाइंड थे तो शराबी भी थे, वे पहले दिन से ही यह जानते हैं और इन सबसे बढ़कर हम दूसरों के लिए काम करते हैं ,ख़ुद के लिए नहीं। तुम ख़ुद के लिए लड़ते रहे हो ना कि दूसरों के लिए।

फ़ाबियो : यह झूठ है।

गास्पार : यह क़रीब-क़रीब सच है। तुम परेशान हो और यही तुम्हारी माफ़ी है... असल में सच यह है कि ज़िंदगीभर की तुम्हारी लगन और जलन ने तुम्हें एक क़ाबिलेतारीफ़ इंसान बना दिया।

फ़ाबियो : *(गर्व के साथ खड़ा होता है।)* तुम मुझे पागल बना रहे हो। *(आगे की ओर जाता है।)*

गास्पार : *(हँसते हुए)* स्कॉटिश शॉवर[20] के लिए ; ओह, क्यों नहीं, फ़ाबियो। एक क़ाबिलेतारीफ़ बेशर्म धोखेबाज़, क्योंकि वह पेंटिंग नहीं कर सकता था लेकिन करना चाहता था; ख़ुद को और उन लोगों को समझना चाहता था जिन्हें वह देखता था, जिन्हें वह जानता था, जो बहुत, बहुत दूर निकल गया है... जो एक गुलाबी और हरे चेहरे में फ़र्क़ नहीं कर सकता। *(उसके पास आता है।)* तुमने नामुमकिन करना चाहा और अपनी कड़ी लगन से उसे पा भी लिया। बड़े दुःख की बात है कि तुमने एक ऐसे काम में अपनी इतनी ताक़त लगायी जो तुम्हारी तरह ही बेमानी है। यही इस गंदी दुनिया की कमी है। तुम एक अच्छे लीडर हो सकते थे।

फ़ाबियो : *(झल्लाते हुए)* तुम लीडर क्यों नहीं बने ?

---

[20] स्काटलैंड में एक तरह का स्नान, जिसमें कई तरह के फ़व्वारों का प्रयोग किया जाता है।

गास्पार : क्योंकि मैं एक शराबी हूँ। *(दीर्घ विराम। कुर्सी पर कमर टिकाए फ़ाबियो 'लास इलांदेरास' को देखता है।)*

फ़ाबियो : गास्पार, मैं एक ऐसा मास्टरपीस देख रहा हूँ जिसके रंग मैं नहीं देख सकता। तो भी, मैं इस मास्टरपीस को नंगी आँखों से ज़्यादा समझ सकता हूँ। मैं सबके सामने अपनी कमियों को क़बूल नहीं कर सकता।

गास्पार : तुम फँस गए हो !

फ़ाबियो : ऐसा नहीं है। ये... मैं नहीं जानता। बस मैं जानता हूँ कि मैं नहीं कर सकता।

गास्पार : मैं यह समझ सकता हूँ। जैसे तुमने अपनी पेंटिंग करने के नशे को नहीं रोका इसके लिए मैं तुम्हें माफ़ नहीं कर सकता, वैसे ही जैसे मैं अपने पीने की आदत को नहीं छोड़ सका, जिसके लिए मैं ख़ुद को भी कभी माफ़ नहीं कर सकता।

फ़ाबियो : *(मुड़ता है और उसे देखता है।)* कैसा नशा ?

गास्पार : ख़ुद को ताक़तवर [और डरपोक] समझने का। एक इंसान, जो ख़ुद से ही चिपका रहता हो... "ओह, मैं कितना अहम हूँ। कैसे-कैसे तरह लोग मेरी जी-हुजूरी करते हैं! मेंढक और गुलाब में फ़र्क़ न कर पाने के बावजूद मैं दूसरों से ज़्यादा अहमियत रखता हूँ। कुल मिलाकर मैं ईमानदार हूँ। मुझे चौकस रहना होगा। अगर मेरे पास हमारी अच्छाइयों का थोड़ा-सा भी हिस्सा हो, क्योंकि मुझे लगता है कि वह थोड़ा है तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मैं लोगों को मुसीबतों से बचाने वाला बनूँगा।" एक बेहतरीन वाईन, क्योंकि इसे अच्छी नीयत से लिया जाता है, है ना ? और जल्द ही, दुत्कारे हुए लोग मरने लगते है और बचे हुए अपाहिज...।

फ़ाबियो : अपाहिज ?

गास्पार : ये... क्या कहते हैं ? *(अपने गिलास को देखता है।)* ओह हाँ ! एक कहावत है ! *(हँसते हुए)* कभी-कभी, इसे सूँघने से ही ख़ुद-ब-ख़ुद लफ़्ज़ निकलने लगते है।

फ़ाबियो : क्या तुम्हें भी लगता है कि मैं इस मौत के लिए ज़िम्मेदार हूँ ?

गास्पार : *(उदासीन होकर)* क़ानूनी तौर पर नहीं। उसने ख़ुद को मारा है क्योंकि वह एक ख़ुदकुशी थी। लेकिन इसकी मुझे बिल्कुल परवाह नहीं। अनजाने तौर पर हम हमेशा किसी-न-किसी को तकलीफ़ पहुँचाते रहते हैं। दिक़्क़त यह है कि तुम अपनी तटस्थता पर भरोसा नहीं कर सकते।

फ़ाबियो : मैंने वही लिखा, जो मैं सोचता था।

गास्पार : *(थोड़ी देर रुककर, हल्की-सी मुस्कान के साथ।)* क्यों मज़ाक कर रहे हो ?

फ़ाबियो : *(गुस्से में)* मैं मज़ाक कर रहा हूँ ? *(बड़ी चुप्पी।)*

गास्पार : [तुमने वही लिखा, जो तुमने महसूस किया। ना कि वो जो तुमने सोचा] तुमने क़सम खायी होगी कि तुम उस पागलपन के साथ सख़्ती नहीं बरतोगे क्योंकि तुम उससे नफ़रत करते थे।

फ़ाबियो : वह मूर्ख एक खतरनाक़ नशेबाज़ था। लेकिन मेरी आलोचनाओं की वज़ह से नहीं...

गास्पार : *(उसे टोकता है।)* ख़ुद को बेवकूफ़ मत बनाओ। एक नशेबाज़ और तुम्हारी बेटी को तुमसे छीननेवाले मूरख के साथ तुम तटस्थ कैसे हो सकते थे? *(फ़ाबियो उसे गुस्से से देखता है।)* दूसरों की तरह तुम भी अपनी ज़िद और जलन या अपनी हमदर्दी के साथ बढ़ रहे थे। इसलिए आलोचना करना बेहद मुश्किल काम है।

फ़ाबियो : *(रूखाई से)* बेहतर होगा कि हम इस बात को यहीं ख़त्म कर दें।

गास्पार : *(कंधे उचकाता है।)* जैसी तुम्हारी मर्जी। *(अपना गिलास ख़त्म कर फ़ाबियो के पास मेज़ पर रख देता है। दायीं ओर गैलरी से अस्पष्ट आवाज़ें आती हैं।)*...तेरेसा की नकारभरी और आउरोरा की भारी आवाज़।

तेरेसा : *(तेरेसा की आवाज़)* अभी अंदर मत जाओ !

आउरोरा : *(आउरोरा की आवाज़)* मुझे उधर से जाना है। क्यों नहीं ? *(प्रवेश करती है। पीछे-पीछे उसकी माँ, हाथ में एक छोटा सूटकेस।)*

तेरेसा : *(रोते हुए)* फ़ाबियो वह हमें छोड़कर जा रही है।

आउरोरा : कल मेरी सहेली बड़ा सूटकेस लेने आएगी।

फ़ाबियो : *(पीला पड़ जाता है।)* तुमने अच्छी तरह सोच लिया ?

तेरेसा : वह हमेशा के लिए जा रही है।

फ़ाबियो : *(देखने में सामान्य, लेकिन परेशान)* [मैं उसे नहीं रोक सकता।] जो वह मुझसे चाहती है मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता।

आउरोरा : मैं जा रही हूँ, लेकिन मैं ख़त नहीं भेजूँगी। *(फ़ाबियो हैरान है। गास्पार जो थोड़ा दूर हो गया था, वापस आकर उसे देखता है।)*

तेरेसा : *(फुसफुसाती है।)* शुक्रिया आउरोरा।

आउरोरा : ये मैंने तुम्हारे लिए किया है, उसके लिए नहीं। [अगर मुझे भेजना भी पड़ा, तो मैं चुप रहूँगी...] मैं अपने ही मम्मा-पापा के साथ इतनी बेरहम कैसे हो सकती हूँ। लेकिन मैं तुम्हारे इस घिनौने झूठ का हिस्सा नहीं बनना चाहती। मैं जा रही हूँ।

तेरेसा : तुम्हें पैसे की ज़रूरत है ?

आउरोरा : तुम्हें क्या लगता है मैं उनमें से हूँ जो अपने पापा से तो नफ़रत करते हैं और उसके पैसे से प्यार करते हैं। नहीं। मैं अपना इंतज़ाम कर लूँगी। *(भरे हुए गले से।)* बाय! *(फिर से चलने लगती है।)*

तेरेसा : हम ..., मैं किसी दिन तुम्हें मिलने आ सकती हूँ ? *(आउरोरा कोई जवाब नहीं देती। ख़ुद फ़ैसला करती हुई, रुककर सोचती है।)*

आउरोरा : बाय।

फ़ाबियो : *(भावनाओं को छिपाते हुए)* मैं तुम्हारे लिए एक खुशहाल और बेदाग़ ज़िंदगी की कामना करता हूँ। *(आउरोरा मुड़ती है और एक नज़र कमरे, पेंटिंग और आरामकुर्सी पर डालती है ... बायीं ओर से चली जाती है।)*

तेरेसा : मैं तुम्हारे साथ दरवाज़े तक चलती हूँ। *(दोनों बायीं ओर से चली जाती है। फ़ाबियो अपनी आँखें बंद कर लेता है। वह थका-सा एक कुर्सी पर बैठ जाता है और अपना चेहरा दोनों हाथों से ढँक लेता है। गास्पार उसे ही देख रहा है। फ़ाबियो धीरे-से अपनी आँखें खोलता है, इसी बीच कमरे और पेंटिंग के रंग वैसे ही बदरंग हो जाते हैं जैसे फ़ाबियो को यह दुनिया दिखाई देती है।)*

[फ़ाबियो : मैं जानता हूँ कुछ भी स्थिर नहीं है। अगर तुम्हें लगता है कि मैं ऐसा सोचता हूँ तो तुम ग़लत हो।

गास्पार : मेरा तुम्हारे बारे में इतना भी बुरा ख़याल नहीं था।]

फ़ाबियो : मैं उस लड़की के लिए जीता रहा और आज वह हमें छोड़कर चली गई, मेरी ग़लती की वजह से। तेरेसा मुझे इस बात के लिए कभी माफ़ नहीं करेगी। *(सिर झुकाता है। बाद में, घबराता हुआ)* मुझे ... कोई दिक़्क़त नहीं, अगर तुम रहना चाहो तो।

गास्पार : नहीं। तुम्हें आगे क्या करना है अब तुम्हीं इसका फ़ैसला करो। *(सामने की ओर जाता है, पेंटिंग के पास रुकता है। आवक्षमूर्ति के पास जाकर)* कल से तुम्हें इस दूसरे गास्पार से ही पूछना पड़ेगा।

फ़ाबियो : *(जलन से)* तुम अभी भी इस पर यक़ीन है ?

गास्पार : तुम्हें इस पर शक है ?

फ़ाबियो : मुझे पागल मत बनाओ। तुम अभी भी किसी चीज़ पर विश्वास नहीं करते।

गास्पार : *(हँसता है।)* मैं तुम्हें वो बताऊँगा जिस पर मैं यक़ीन करता हूँ ताकि तुम हँसो। *(धीमी आवाज़ में)* मैं आवाम पर यकीन करता हूँ और इसीलिए मैं जा रहा हूँ, जैसे आउरोरा चली गई। मैं तुम्हें समझ सकता हूँ लेकिन मैं तुम्हारे जुर्म में शामिल नहीं होऊँगा। तुम लोगों का भला हो। *(निश्चय के साथ।)* एक शराबी जा रहा है। *(उसके आगे से होता हुआ बायीं ओर से चला जाता है। फ़ाबियो उठता है और सदर दरवाज़े तक जाता है। उसकी घबराहट बढ़ती जा रही है वह आँखों को भींच, दोनों हथेलियों से आँखों को रगड़ता है। बायीं ओर से गैलरी से ब्राउलियो का प्रवेश।)*

ब्राउलियो : *(हैरान)* क्या कोई जान सकता है तुम्हारे साथ क्या बुरा हुआ है ?

फ़ाबियो : *(जलन से)* तुम्हें हैरानी हो रही है कि मैं अपनी आँखें मसल रहा हूँ।

ब्राउलियो : अभी तक किसी ने मुझे इस घर में किसी बात पर हैरान नहीं किया। लेकिन ध्यान रखना, क्योंकि तुम्हें चोट लग सकती है। गास्पार सोने को गया ?

फ़ाबियो : हाँ।

ब्राउलियो : आउरोरा अपने कमरे में नहीं है।

फ़ाबियो : वह अपनी सहेली के घर गई है।

ब्राउलियो : अच्छा हुआ... वहाँ उसे कुछ दिनों के लिए सुकून तो मिलेगा। क्योंकि यहाँ तो तुम लोग उसे ढाढ़स बँधा नहीं सकते... तुम लोग उसे सही राह दिखाना तो जानते नहीं।

फ़ाबियो : तुम मुझे सही राह दिखाना जानते थे ?

ब्राउलियो : तुम अपना क़सूर कभी नहीं मानोगे। लगता है तुम काफ़ी आगे निकल चुके हो। और यह मेरा मामला है।

फ़ाबियो : *(कटुता से)* हाँ, यह तुम्हारा मामला।

ब्राउलियो : सुनो, मैं गया था ... तुम्हारी नींद की दवा कहाँ रखी है ?

फ़ाबियो : तुम्हें उसकी क्या ज़रूरत ?

ब्राउलियो : मुझे क्यों चाहिए ? मुझे नींद नहीं आ रही है और इसलिए मुझे एक गोली की ज़रूरत है। मैंने बाथरूम की अलमारी में भी देख लिया लेकिन वह नहीं मिली।

फ़ाबियो : वो ख़त्म हो गई है और मैंने दूसरा पत्ता ख़रीदा था। मैं उसे कहीं रखकर भूल गया हूँ। *(थैले से दवा का एक पत्ता निकालता है। लो ! पत्ते को खोलता है और उसे एक गोली दे देता है।)*

ब्राउलियो : शुक्रिया। आशा करता हूँ , तुम्हें आराम मिले। *(जाने को होता है।)*

फ़ाबियो : रुको !

ब्राउलियो : क्यों ?

फ़ाबियो : हमें बात करनी होगी। *(ब्राउलियो, गोली रख लेता है। उदास तेरेसा बायीं ओर से आती है।)*

तेरेसा : मैंने कुंडी लगा दी है। ब्राउलियो तुम्हें सोना नहीं है क्या ?

फ़ाबियो : थोड़ी देर मैं और ब्राउलियो बातें करेंगे।

तेरेसा : *(चौंक जाती है।)* अगर मैं तुम दोनों को परेशान न करूँ तो मैं थोड़ी देर रुक जाऊँ।

फ़ाबियो : *(हँसते हुए)* तुम थकी हुई हो। तुम सो क्यों नहीं जाती ?

तेरेसा : *(शक की नज़र से देखती है।)* अभी मुझे कई काम करने हैं। *(चालाकी से उन दोनों को देखती हुई दायीं ओर से चली जाती है। फ़ाबियो कमरे की बत्ती बंद करने जाता है। लैंप को जलता छोड़ देता है।)*

फ़ाबियो : पापा, यहाँ बैठो! *(फ़ाबियो ब्राउलियो को सोफ़े के एक कोने पर बैठने के लिए इशारा करता है , जहाँ उसने कई बार ब्राउलियो की कल्पना की है।)*

ब्राउलियो : यहाँ ?

फ़ाबियो : हाँ। *(ब्राउलियो बैठ जाता है एक-दूसरे को देखते* हैं।) यही वह जगह है जहाँ कई बार मैंने तुम्हारी कल्पना की है और तुमसे बात की है। एक तरह का ऐसा राज़, जिसकी मुझे ज़रूरत पड़ती थी। *(अपनी आरामकुर्सी पर बैठ जाता है।)*

ब्राउलियो : अगर तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़ती थी तो तुमने मुझे क्यों नहीं बुलाया ?

फ़ाबियो : अपनी कमी पर बात करने की शर्म के चलते, क्योंकि मैं तुम्हें तकलीफ़ नहीं पहुँचाना चाहता था कि मैं क्या हूँ ! एक ऐसी ग़लती जिसे अब मैं ठीक करने वाला हूँ, उन दोनों के लिए, चाहे कितना ही मुश्किल हो और तुम मुझे पूरी ईमानदारी के साथ जवाब देना ।

ब्राउलियो : *(बेचैनी से)* तुम किस बारे में मुझसे बात कर रहे हो ?

फ़ाबियो : पापा, ढोंग करना बंद करो। तुम ये बहुत अच्छी तरह जानते हो। एक बार तुम मुझे एक डॉक्टर के पास लेकर गये थे जिसने मेरी आँखों की जाँच की थी। मुझे अच्छी तरह याद नहीं है, लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम मुझे लेकर गए थे। उस डॉक्टर ने तुमसे क्या कहा था ?

ब्राउलियो : *(घबराया हुआ)* तुम्हें याद कैसे होगा जब ऐसा कभी हुआ ही नहीं ? और मैं तुम्हें डॉक्टर के पास लेकर क्यों जाता ?

फ़ाबियो : *(उतावला)* पापा, मुझसे झूठ मत बोलो। मैं जानता हूँ ।

ब्राउलियो : कैसे ? मैं तुम्हें विश्वास दिला रहा हूँ...

फ़ाबियो : बहुत अच्छा ! तो फिर तुमने मुझे बिना बताए किसी डॉक्टर से बात की होगी और उसने तुम्हें कहा.....

ब्राउलियो : *(परेशान होकर)* कुछ नहीं कहा। जब तुम बीमार होते थे तब मैं तुम्हें डॉक्टर के पास लेकर जाता था। लेकिन कभी किसी डॉक्टर से तुम्हारी पीठ पीछे कोई बात नहीं की और कम-से-कम तुम्हारी आँखों के बारे में तो बिल्कुल नहीं....भला मैं ऐसा क्यों करता ?

फ़ाबियो : पापा, हम दोनों के बीच से झूठ का पर्दा उठ गया है।

ब्राउलियो : फिर से शुरू ! सुनो फ़ाबियो, तुम जाकर आराम कर लो। आउरोरा के साथ हुई झड़प का तुम्हारे दिमाग़ पर गहरा असर पड़ा है।

फ़ाबियो : *(खड़ा हो जाता है।)* तुम मुझसे झूठ बोल रहे हो !

ब्राउलियो : लेकिन तुम्हें हुआ क्या है ?

फ़ाबियो : *(आग बबूला होकर उसकी और कुछ क़दम चलता है।)* और रंगीन पेंटिंग्स के सामने तुम्हारी तकरीरें ? और म्यूज़ियम में तुम्हारा मेरे साथ जाना ?

ब्राउलियो : [तुम इसके लिए मुझे बदनाम नहीं करोगे।] मैं तुम्हारी मदद कर रहा था !

फ़ाबियो : आख़िरकार तुमने मान ही लिया। तुमने उस समय मुझसे साफ़-साफ़ बात करने के बजाय मेरी कलरब्लाइंडनेस छिपा रहे थे ?

ब्राउलियो : तुम क्या बक रहे हो ?

फ़ाबियो : कि मैं एक कलरब्लाइंड हूँ और तुम हमेशा से इस बात को जानते थे। [तुम इस सच को झुठला नहीं सकते।]

ब्राउलियो : कलरब्लाइंड ? *(कुछ देर सोचता है। ज़ोर-ज़ोर से हँसता है।)* बेटा, तुम्हारा दिमाग़ तो ठीक है ! एक कला आलोचक कलरब्लाइंड कैसे हो सकता है ? *(हँसता हुआ उठता है।)* चलो, जाकर सो जाओ। *(जाने को होता है।)*

फ़ाबियो : मैं कलरब्लाइंड हूँ और तुम यह जानते हो।

ब्राउलियो : *(गंभीर और परेशान)* यह तुम क्या बक रहे हो ! तुम पागल हो गए हो !

फ़ाबियो : *(आपे से बाहर)* तुम्हें मालूम है कि

ब्राउलियो : मुझसे तेज़ आवाज़ में बात मत करो !

फ़ाबियो : *(चिल्लाते हुए)* तुम्हें मालूम है...

ब्राउलियो : *(गैलरी की तरफ़ तेज़ आवाज़ में)* तेरेसा !

फ़ाबियो : *(ब्राउलियो को एक हाथ से पकड़कर)* मत बुलाओ उसे।

ब्राउलियो : क्यों नहीं ? तुम्हें अभी बिस्तर पर जाना होगा। तेरेसा !

(वह आवाज़ सुन लेती है और जल्दी-जल्दी आती है।)

फ़ाबियो : तुम सब जानते थे ! धोखेबाज़ ! तुम्हें मालूम था !

तेरेसा : क्या हो गया तुम दोनों को ? चिल्लाओ मत !

ब्राउलियो : *(गहरी साँस लेकर फ़ाबियो से अलग हो जाता है।)* इससे कहो कि अपनी नींद की गोली ले ले और जाकर बिस्तर पर सो जाए। यह ऊट-पटाँग बक रहा है।

फ़ाबियो : तुम चुप हो जाओ !

ब्राउलियो : ध्यान रखना मैं दोबारा नहीं कहूँगा। *(तेरेसा से)* आजकल इस घर में हो क्या रहा है कि सबके दिमाग़ ने काम करना बंद कर दिया है ? यह एक पेंटर के लिए आउरोरा के साथ हुई झड़प का नतीजा तो नहीं ?

(फ़ाबियो उन दोनों को कड़ी नज़र से देख रहा है।)

तेरेसा : तुम्हारे पापा सही कह रहे हैं, फ़ाबियो ... शायद तुम्हें आराम करने की ज़रूरत है और सोने से तुम ठीक हो जाओगे ...हम सभी को आराम करने की ज़रूरत है। *(फ़ाबियो तेरेसा को नहीं देखता।)* चलें ?

फ़ाबियो : *(ख़ुद को सँभालते हुए)* यह सच है कि मैं आपा खो बैठा था और ऊट-पटाँग बक रहा था। [मैं घबरा गया था ...] सब ख़त्म हो गया।

तेरेसा : तुम किसी भी तरह सो जाओ ...

फ़ाबियो : सब ख़त्म हो गया। मैं काम करूँगा। मुझे ... जल्दी ही काम ... ख़त्म करना है।

ब्राउलियो : बेटा, यह तुम्हारे लिए सही नहीं है। बिल्कुल नहीं... अच्छा ... अच्छा होगा सुबह तक तुम आराम करो। *(दायीं ओर से चला जाता है। तेरेसा फ़ाबियो पर से अपनी नज़र हटा लेती है। फ़ाबियो उसे देखकर एक करुण हँसी हँसता है।)*

फ़ाबियो : मेरी प्यारी तेरेसा, तुम जाकर सो जाओ। मुझे देर हो जाएगी।

तेरेसा : सुबह मिलते हैं, फ़ाबियो।

फ़ाबियो : गुडनाईट ! *(तेरेसा को देखता है, वह दायीं ओर से चली जाती है। फ़ाबियो की नज़र शून्य में खो जाती है। उसके बाद, फ़ाबियो उस अंधेरी जगह को देखता है जहाँ ब्राउलियो बैठा हुआ था। आँखें बंद कर लेता है। वह एक दवा का पत्ता निकालता है और कुछ सोचने लगता है। थोड़ा घूमता है और मेज़ से गिलास उठाता है। सामने की ओर जाता है। कुछ देर रुकता है। बदरंग पड़ी 'महिला बुनकरों' को देखता है। धीमे-धीमे संगीत और वाग्नेर का समवेत गान*

शुरू होता है। फ़ाबियो बार में रखे पानी की बोतल उठाता है। व्यंग्यात्मक ढंग से बुदबुदाता है।)
पालास ने आराक्ने को हरा दिया।

(अपनी माँ के कमरे के दरवाज़े की ओर जाता है। उसके ताले पर हाथ रखता है। ड्राईंग रूम और दायीं ओर की गैलरी को बड़े दुःख के साथ देखता है। उसकी आवेशभरी नज़रें चरखेवाली बुनकर पर रुक जाती हैं। उसी समय हौले से धक्का देने पर बिना किसी शोर के दरवाज़ा खुल जाता है। कमरे के अंदर एक अजीब और सुरमई धुँधलापन। फ़ाबियो अपना सिर नीचा कर कमरे में चला जाता है और दरवाज़ा बंद कर लेता है। गान बहुत तेज़ हो जाता है। बहुत परेशान तेरेसा दायीं ओर से प्रवेश कर मुख्य बत्ती जलाती है। जिससे पेंटिंग और कमरा अपने वास्तविक रंगों में लौट आते हैं। हाँफती हुई तेरेसा सी.डी. प्लेयर की ओर भागती है, उसे देखती है। वह सब ओर नज़र घुमाती है और दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लेती है। संगीत और आवाज़ें धीमी हो जाती हैं। तेरेसा की नज़र सामने वाले दरवाज़े पर जाती है। तेरेसा के काँपते हाथ : एक गर्दन पर, दूसरा कमर पर है। ख़ुद को सँभालती हुई तेरेसा दरवाज़े के पास जाती है। दरवाज़ा खोलने की कोशिश करती है; लेकिन वह नहीं खुलता। वह ज़ोर से हैंडल को घुमाती है, लेकिन दरवाज़ा नहीं खुलता। हताश होकर वह पीछे हटती है और दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लेती है।

समवेत गान बंद। तेरेसा चेहरे से हाथ हटाती है, जोर-जोर से साँसें लेती है और फिर से दरवाज़े के पास जाती है। अपनी ज़िंदगी की सबसे मुश्किल जंग जीतने की कोशिश करती है। रुक-रुक कर वह तीन बार दरवाज़े को खटखटाती है। उसकी आवाज़ गूँज रही है।)

तेरेसा : फ़ाबियो, दरवाज़ा खोलो। *(कुछ देर रुककर फिर से पुकारती है।)* मुझे पता नहीं कितनी देर हुई है या नहीं हुई। अगर तुम मुझे सुन रहे हो तो मेरी बात सुनो ...यह दूसरी बार है जब तुमने यह दरवाज़ा अंदर से बंद किया है। पहली बार, मैं तुम्हें बाहर लाने में कामयाब हो गयी थी। तुम्हें याद है ? बहुत साल पहले, तुम्हें काम नहीं मिल रहा था। तुम्हारे लेख कहीं छप नहीं रहे थे, कलाकार कॉफी शाप में बैठकर तुम्हारी शुरुआती आलोचनाओं का मज़ाक उड़ाते थे। एक बूढ़े पेंटर ने प्रेस के सामने कहा था कि तुम्हें रंगों की समझ नहीं है और मैंने भी तुम्हें सहज भाव से कहा था जब तुम एक आर्टिकल

छपवाने में कामयाब हो गए थे : 'कभी-कभी तुम किसी पेंटिंग की सही व्याख्या नहीं कर पाते थे। मुझे यह झूठ लगता है कि तुम एक आलोचक हो।' तब तुमने पहली बार ... ख़ुद को यहाँ बंद कर लिया था और तब मुझे जल्दी ही इस बात का अहसास हो गया था और अब की तरह मैं आई और बेफ़िक्र होकर तुम्हें वो कहा जो मैं कह सकती थी : "फ़ाबियो, यह बहुत ज़रूरी है तुम दरवाज़ा खोलो। मुझे एक ब्लाउज़ चुनना है और मुझे नहीं मालूम कौन-सा मेरी स्कर्ट के रंग के हिसाब से ठीक रहेगा।" *(ख़ासी चुप्पी)* और उस झूठ ने तुम्हें बाहर निकाल दिया था और मैं समझ गई कि मुझे तुमसे झूठ बोलते रहना होगा। तुम यह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि मुझे यह मालूम है कि तुम मुझे धोखा दे रहे थे : ... और मैंने यह दिखावा करने का फ़ैसला कर लिया ताकि तुम वह फिर से करने की कोशिश न करो जो तुमने किया था। क्योंकि मुझे यह अहसास हुआ कि तुम्हारे अंदर छिपी तकलीफ़, डर तुम्हें और कमज़ोर बना रहे थे..., जिसका अंत है ख़ुदकुशी ... वैसा ही जैसा कि सामुएल कोस्मे ने किया। *(अपनी भावनाओं पर क़ाबू करते हुए, दरवाज़े को दुःखी होकर देखती है। फिर से तनकर)* अगर तुम मुझे सुन सकते हो तो सुनो ! अपनी ज़िंदगी के झूठ से अब और मत ! जिसकी तुम कोशिश कर रहे हो वह ख़त्म हो गया है। अगर फिर भी तुम ऐसा करने जा रहे हो क्योंकि तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारी इस तकलीफ़ को जानती हूँ और अब तुम इस शर्मिंदगी के साथ मेरा सामना नहीं कर पाओगे। तो ध्यान देकर सुनो : मैं पहले से ही सब कुछ जानती थी। *(दीर्घ विराम।)* [मैं हमेशा से ही जानती थी।] तुमने उस पर ध्यान नहीं दिया लेकिन तुम अकेले नहीं थे। मैं दिन-ब-दिन तुम्हारी उस क़ैद का हिस्सा थी जहाँ तुमने ख़ुद को क़ैद कर रखा था। जो दूसरे लोग देख सकते थे, उसे न देख पाने की बेबसी ... अब मैं तुम्हें झूठ के बूते बाहर नहीं निकालूँगी, अब मैं तुम्हें सच के साथ बाहर लाऊँगी। अगर अब तुम बाहर नहीं आए तो तुम कभी इस क़ैद से [और ना कभी इस कमरे से] बाहर निकल पाओगे। अगर अब हमने एक-दूसरे पर भरोसा करते हुए बात नहीं की तो हमारी शादी एक नाकामयाब शादी होगी। अगर अब तुमने मेरा सामना नहीं किया, तो तुम एक धोखेबाज़ साबित हो जाओगे। और तुम्हारे साथ गुज़ारी गई मेरी ज़िंदगी एक बहुत बड़ी भूल होगी । बाहर निकलो आओ फ़ाबियो ! मैं इतने सालों तक

खुद से जूझती रही ताकि तुम्हें उस कमरे में जाने से रोक सकूँ। आओ, और मेरे साथ अपनी उस तकलीफ़ का सामना करो जो हमेशा से हम दोनों का रहा है। *(खिन्न होकर, बिना ये जाने कि वह किसी ज़िंदा इंसान से बात कर रही है।)* अगर तुमने मुझसे सचमुच प्यार किया है, तो बाहर निकल आओ। मुझे इस तकलीफ़ से निकालो कि मेरे ये अल्फ़ाज बेकार नहीं जा रहे हैं। *(कुछ देर बाद टूटी हुई आवाज़ में चिल्लाती है।)* अरे ओ मुर्दा इंसान, फिर से जी जाओ! खोलो ये दरवाज़ा! *(थोड़ा और पीछे जाती है। हाथों को मोड़ती है ... धीरे-से दरवाज़ा खुलता है और बेजान फ़ाबियो अपने हाथ पीछे कर दरवाज़ा बंद करते हुए ड्राईंग रूम में दाख़िल होता है। एक-दूसरे को देखते हैं।)*

फ़ाबियो : तुम्हें मुझे आवाज़ देने की ज़रूरत नहीं।

तेरेसा : मैं तुम्हें हमेशा आवाज़ दूँगी जब भी तुम खुद को वहाँ बंद कर लोगे।

फ़ाबियो : क्यों, किसलिए ! मैं दोबारा नहीं जी सकता *(पहले छोर तक जाता है। तेरेसा मेज़ तक उसके साथ जाती है और वहीं कहीं बैठ जाती है।)*

तेरेसा : अब मुझसे झूठ मत बोलो।

फ़ाबियो : मैं अपनी झूठी मर्दानगी की ख़ातिर तुमसे इतने सालों तक झूठ बोलता रहा। ताकि तुम ये ना जान सको कि मैं कितना कमीना हूँ और तुम मुझसे कितनी अच्छी हो! मैं तुम्हारे लायक़ नहीं हूँ।

तेरेसा : मैंने भी तुमसे झूठ कहा था...

फ़ाबियो : [प्यार की ख़ातिर। मैंने] कभी तुम्हें उतना प्यार नहीं किया जितना तुम मुझे करती हो। ना ही कभी मैं तुम्हारे सामने अपनी इतनी बड़ी कमी को क़बूल करने की हिम्मत जुटा पाया।

तेरेसा : जो तुम अब कर रहे हो।

फ़ाबियो : *(नकारते हुए)* हालातों के दबाव में... वरना मैं ऐसा कभी नहीं करता। मैं किसी के लायक़ नहीं। तुम्हें आउरोरा के साथ चले जाना चाहिए था। वह सही है।

तेरेसा : अगर मुझे ऐसा लगता होता कि तुम किसी लायक़ नहीं हो तो मैं पहले ही तुम्हें छोड़कर चली गई होती।

फ़ाबियो : तुम ऐसा कर सकती थी। मैं एक मामूली धोखेबाज़ हूँ।

तेरेसा : एक मामूली धोखेबाज़ ख़ुद को मारने की कोशिश नहीं करता। जब तक कोई उसे बेनकाब न करे।

फ़ाबियो : *(उसकी ओर जाता है।)* मैं यह बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा कि तुम मुझ पर दया करो और मेरे साथ रहो।

तेरेसा : अभी भी तुम मर्दानगी के गरूर में हो ? मैं तुम पर तरस खा रही थी, यह

समझना होगा। मैं तुम्हारा राज़ जानती थी फिर भी तुम्हारे साथ रह रही थी। फ़ाबियो : *(काँपती आवाज़ में)* तरस खाने के लिए ?

तेरेसा : *(माथे पर हाथ रख लेती है। हिचकिचाते हुए)* [मुझे बैठना होगा मैं भी कमज़ोर हूँ।] *(सोफ़े पर उसी जगह बैठ जाती है जहाँ ब्राउलियो बैठा करता था। फ़ाबियो कुछ पास आता है।)*

फ़ाबियो : *(धीमी आवाज़ में)* तेरेसा, मैं उस पेंटर की मौत का ज़िम्मेदार हूँ।

तेरेसा : *(दुःखी मन से)* कभी भी किसी को यह पता नहीं चलना चाहिए। *(दीर्घ विराम।)*

फ़ाबियो : *(शर्म के साथ)* तुमने मुझे इसलिए बाहर निकाला है कि मैं अब भी झूठ बोलता रहूँ ? क्या मैं अभी धोखा देता रहूँ ?

तेरेसा : *(प्यार से)* मैं चाहती हूँ तुम जियो और फिर से अपना वही मुकाम हासिल करो।

फ़ाबियो : और कोई रास्ता नहीं है, तेरेसा। *(उसके पास बैठ जाता है।)* मैं शर्म से गड़ा जा रहा हूँ। यह शर्मिंदगी नहीं है जो मुझे गुनाह क़बूल करने से रोक रही है। क्योंकि... मैं कुछ और नहीं हूँ , अगर मैं कुछ हूँ तो रंगों को चाहने वाला हूँ... [बनती हुई रंगों की छटाओं को न समझने वाला एक अटल खोजी... और मैं ख़ुद को वैसा ही देखता हूँ जैसाकि उन्हें देखता हूँ। मैं उनका वर्णन करने की चाहत से रोक नहीं पाता...] एक ऐसी अनजान दुनिया का

पिछलग्गू जिसके बिना मैं नहीं रह सकता। अभी भी मैं उस बेहतरीन रंगीन पेंटिंग की रंगतों में फ़र्क करने की कोशिश कर रहा हूँ जो तुम वहाँ देख रही हो *(पेंटिंग की ओर)* और मैं उस बचकाने वहम की ओर फिर से बढ़ रहा हूँ कि एक दिन वे इलाज ढूँढ़ लेंगे जिससे मेरी आँखें ठीक हो जाएँगीं... मैं जिस दुनिया के पीछे भाग रहा हँ उसे मैं पकड़ नहीं पाऊँगा। मुझे झूठ बोलना होगा... या छिपाना होगा।

तेरेसा : ढूँढ़ते रहो।*(दीर्घ विराम)*

फ़ाबियो : और झूठी किताबें लिखने की ?

तेरेसा : ऐसी सच्ची चीज़ें भी तो होगी जिन पर लिखा जा सकता है ?

फ़ाबियो : अब मैं क्या लिखूँगा ? हम आगे क्या कर सकते हैं ? [मैं तुमसे पूछता हूँ तुम जो मुझे ज़िंदा रखना चाहती हो।]

तेरेसा : वो मैं नहीं जानती। लेकिन हम दोनों मिलकर उसे ढूँढ़ेंगे।

फ़ाबियो : और अगर वह हमें नहीं मिला ?

तेरेसा : हम जरूर ढूँढ़ेंगे। *(विराम)*

फ़ाबियो : ना ही मैं किसी ज़िंदा कलाकार की कीमत आकूँगा ना ही रंगों की बात करूँगा। बहुत हो गया।

तेरेसा : *(चिल्लाते हुए)* अभी नहीं !

फ़ाबियो : *(बिना विश्वास के)* नहीं ?

तेरेसा : नहीं !...नहीं... *(विराम।)*

फ़ाबियो : *(खीज और शक के साथ)* अगर अब यह ख़त्म नहीं हुआ, तो कल ... *(चुप)*

तेरेसा : क्या ?

फ़ाबियो : मैं नहीं जानता कैसे कहूँ ... कल ..., अगर उन सच्चे ईमानदार और साहसी लोगों को इकट्ठा किया जाए जिनकी मिसाल मेरी कमज़ोरी में मेरी मदद करें ... शायद तब मैं

अपने छिपे राज़ सबके सामने लाने की हिम्मत जुटा पाऊँ ....., शायद मैं अपना गुनाह क़बूल करने की हिम्मत बटोर सकूँ। *(कमज़ोर हँसी हँसता है।)* मैं जानता हूँ, यह एक और छलावा है। *(आवक्ष मूर्ति की ओर)* गास्पार मुझ पर हँस रहा है। बुनकर मुझ पर हँस रही हैं। पालास ही आउरोरा है जिसने घमंड़ी मकड़ी को हरा दिया। अब वह मकड़ी फिर कभी कीड़े-मकोड़ों को अपने पंजों में नहीं जकड़ पाएगी और अब टेपेस्ट्री के रंगीन धागे नहीं बुन पाएगी ... और ऐसा फिर कभी नहीं होगा, तेरेसा ! वह बुनकर मेरे सामने अब दम तोड़ देगी। *(विराम)*

तेरेसा : इस पेंटिंग के बीचोंबीच एक नौकरानी खड़ी है जो हमारी ओर देख रही है ... वही है जो सिर्फ़ हमें देख रही है। क्या वेलास्केस ने उसे वक़्त और बुनकरों को मात देने के लिए वहाँ बनाया है ?

फ़ाबियो : मौत को ?

तेरेसा : मुझे लगता है ... यह लड़की आउरोरा जैसी है। *(फ़ाबियो काँपते हाथों से तेरेसा का हाथ ढूँढ़ता है लेकिन उसे बिना छुए ही अपना हाथ पीछे कर लेता है। दोनों की नज़र शून्य में खो जाती है। बहुत धीरे-धीरे फ़ाबियो या शायद दोनों के उदास विचारों की तरह लास इलांदेरास का गान सुनाई पड़ता है। रोशनी धीरे-धीरे कम हो जाती है। अंत में, अंधेरे में सिर्फ़ वेलास्केस की पेंटिंग के रंग चमकते रह जाते हैं।*

तीसरा अध्याय

'कूट संवाद' के

अनुवाद में आनेवाली समस्याएँ

कूट संवाद के अनुवाद में आनेवाली समस्याएँ

किसी भाषा के पाठ को न पढ़ पाने की असमर्थता जहाँ पाठक की प्रज्ञा को क्षति पहुँचाती है वहीं अनुवाद इस समस्या का समाधान करता अर्थात् क्षतिपूर्ति करता है। परन्तु अनुवाद जहाँ इस समस्या का हल प्रस्तुत करता है वहीं दूसरी ओर अनुवाद स्वयं में समस्या का दूसरा नाम है। अनुवाद कैसा हो ? कौन-सा सिद्धांत अपनाया जाए ? भावानुवाद हो या शब्दानुवाद ? पद्य का अनुवाद पद्य में हो या गद्य में ? मुहावरों का अनुवाद कैसे हो ? नवागत शब्दों का अनुवाद कैसे हो ? अर्थात् नए शब्दों की समस्या का क्या समाधान हो ? व्याकरणिक समस्याओं को कैसे हल किया जाए ? इत्यादि प्रश्न अनुवादक को आदि से अंत तक घेरे रहते है।

थियोडर सॉवरी के अनुसार –"There is no correct translation of any passage more than few sentances".[21] अनुवाद को 'दोयम दर्जे' का लेखन कहने वाले समीक्षकों की एक अनुवादक से यह अपेक्षा रहती है कि किसी महान कृति का अनुवाद भी महान हो ऐसे में किसी कृति और संस्कृति में समाहित लोक तत्त्व जितना उसे महत्त्वपूर्ण, विशिष्ट, पृथक और संश्लिष्ट बनाते हैं, उतना ही उसे अनुवादेय भी। नाटककार और उपन्यासकार प्राउस्ट और कॉनरेड के अनुसार अनुवादक के दायित्व और कार्य वही होता है जो एक लेखक के होता हैं। बल्कि यह कहना चाहिए एक अनुवादक पर लेखक से ज़्यादा दायित्व होता है। क्योंकि लेखक की अपेक्षा अनुवादक को दो संस्कृतियों और दो समाजों को ध्यान में रखकर अनुवाद करना होता है। इसलिए किसी कृति का अनुवाद करना अनुवादक के लिए हमेशा असंभव को संभव बनाने जैसा है। तब कठिनाई और बढ़ जाती है जब कृति भिन्न समाज और विषम संस्कृति की हो क्योंकि अपरिचित समाज और विषम संस्कृति का अपने समाज और संस्कृति के अनुकूल रूपांतरण करना और मान्य बनाना अत्यंत कठिन कार्य है। इससे पहले अनुवादक को अपने समय की समस्याओं और पाठकों की रुचि को ध्यान रखते हुए कृति का चुनाव करना पड़ता है। दूसरी ओर मूल कृति की भाषा का

[21] Savory,Thedore,The art of translation,page no.132, Jonathan cape squire ,London,1968.

संरचना संबंधी ज्ञान, व्याकरणिक एवं शब्दकोशीय जानकारी, शब्द, पदबंध, मुहावरों, लोकोक्तियों का यथोचित ज्ञान होना एक अनुवादक के लिए अति आवश्यक है। इस भगीरथ प्रयत्न के द्वारा असंभव कार्य को एक सीमा तक संभव बनाया जा सकता है।

3.1 नाटक के अनुवाद में आने वाली समस्याएँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में स्पानी भाषा के नाटक 'दीआलोगो सेक्रेतो' का मूल से हिंदी भाषा में अनुवाद करते समय ऐसे मिथकीय, सांस्कृतिक और भाषिक रूप थे जिनका अनुवाद करने में स्वाभाविक तौर पर कठिनाई आई। ऐसी स्थिति आने पर दोनों भाषाओं में सांस्कृतिक और भाषिक विभेद के कारण कई स्थानों पर संदर्भ और संकेतों के आधार पर अनुवाद किया गया। इस शोध में आई समस्याओं की सूची निम्न प्रकार है–

3.1.1 सामाजिक-सांस्कृतिक और मिथकीय समस्याएँ

मूल नाटक स्पेनी समाज से संबंध रखता है अर्थात् इसमें वहाँ की संस्कृति और समाज की झलक निरंतर दिखाई देती है। स्पेनी समाज की मान्यताएँ, रूढ़ियाँ और विश्वास यों तो भारतीय समाज से अलग हैं परन्तु मूल नाटक में इसका वर्णन नहीं किया गया है। ना ही किसी रीति-रिवाज़ और पर्व-त्योहार का इस नाटक में ज़िक्र है। फिर भी खान-पान और पहनावे से संबंधित ऐसे कई शब्द हैं जिनका प्रयोग नाटककार ने किया है। जैसे– रेड वाईन(Red wine), तीला(Tila), बाज़ोफीया (Bazofia), मोरापीयो (Morapio), कानेलोनेस (Canelones.) इत्यादि। ये कुछ शब्द है जिन्होंने अनुवाद के दौरान हिंदी में अनुवाद किया गया है। जैसे– बाज़ोफीया के कई अर्थ है सुअरों का पतला खाना, बचा हुआ खाना, गंदा खाना। इन सब पर्यायों में कोई भी संदर्भ के अनुसार सटीक नहीं बैठता। भारतीय संस्कृति में गंदे खाने के लिए एक और पद का प्रयोग किया जाता है– गोबर खाना। इस पदबंध को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध अध्येता ने बाज़ोफीया के स्थान पर गोबर का प्रयोग किया है।

मूल पाठ– No quiero comer bazofia. (पृ.54)

अनूदित पाठ– मैं गोबर नहीं खाना चाहती।

इस प्रकार विभिन्न खान-पान संबंधी शब्दों का हिंदी अनुवाद किया गया है और जहाँ संभव न हो वहाँ अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग कर पाद-टिप्पणी में उसे शब्द को स्पष्ट किया है। जैसे–

तीला (Tila) – *नींबू से बनाया जाने वाला एक प्रकार काढ़ा।*

कानेलानेस (Canelones) (पृ.54)– अंग्रेज़ी में इसका अनुवाद राविओली है। हिंदी में इसके लिए प्रयुक्त शब्द न मिलने पर *राविओली* का रोमन लिपि से हिंदी में लिप्यंतरण कर पाद- टिप्पणी में इसे स्पष्ट नहीं किया गया है।

पानसील्यो (Panecillo) (पृ. 50)– एक प्रकार का *ब्रैड रॉल*। इसलिए इस शब्द का हिंदी में लिप्यंतरण करने के स्थान पर 'ब्रैड रॉल' लिखकर कोष्ठक में पानेसील्यो लिख दिया है।

मोरापीयो (Morapio) (पृ. 102)– *एक प्रकार की वाईन।* संदर्भ के अनुसार इसका अर्थ सरलता से ज्ञात हो जाएगा इसलिए पाद-टिप्पणी में इसे सिर्फ़ 'एक प्रकार की वाईन' ही लिख दिया गया है।

पहनावा किसी संस्कृति का अहम हिस्सा होता है जिससे उस संस्कृति की झलक और मानसिकता का पता चलता है। विदेशों में पहना जानेवाला पहनावा आज भारत में भी पहना जाने लगा है। फिर भी हर भारतीय को इस तरह के पहनावे की जानकारी हो, यह आवश्यक नहीं। स्कर्ट, कोट पैंट, टॉप, सैंडिल, पर्स, गाउन, नाइटी ऐसे शब्द हैं, जिनकी जानकारी एक सामान्य युवा और बुजुर्ग पाठक को होती है लेकिन इस पहनावे के भी कई प्रकार होते हैं जिनकी जानकारी उनको होगी जो इसे पहनता हो या जिनके आस-पास ऐसे पहनावे पहननेवाले लोग रहते हो। इसलिए पहनावे संबंधी उन शब्दों का स्पानी से

हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है जिनका प्रचलन भारतीय समाज में भी है। कुछ ऐसे भी हैं जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं जिन्हें हर भारतीय जानता है। अंग्रेज़ी भाषा के उन शब्दों का हिंदी में लिप्यंतरण कर दिया गया है। जैसे–

तोरनो ग्रीस (Torno gris, पृ. 40)– इसे अंग्रेज़ी में *थ्री पीस सूट* कहते है। हिंदी में इसका समतुल्य नहीं और भारतीयों को इसकी जानकारी है इसलिए इसे पाद-टिप्पणी में देने के स्थान पर प्रस्तुत पाठ में इसका अंग्रेज़ी से हिन्दी में लिप्यंतरण कर दिया है।

चालेको(Chaleco, पृ.46)– इसे जैकेट और वेस्टकोट नाम से भी जाना जाता है। हिन्दी में इसके समतुल्य सदरी, कुरती, मिरज़ई, फतुही, कमरी और बास्कट जैसे शब्द प्रयुक्त हैं। बास्कट के अलावा कोई अन्य समतुल्य शब्द सामान्य भारतीयों की समझ से बाहर है। इसलिए चालेको का अनुवाद अंग्रेज़ी का प्रचलित शब्द *बास्कट* सटीक प्रतीत होता है जिसका हिन्दी में लिप्यंतरण कर दिया गया है।

सूर्रोन दे बोरदादा लोना (Surron de Bordada Lona)– सूर्रोन बैग को कहते है और बोरदादा लोना के लिए हिन्दी में दो शब्द हैं ज़री का काम किया हुआ और कैन्वास। चूँकि मूल पाठ के आधार पर यह स्पष्ट नहीं है कि यहा कौन-सा समतुल्य बेहतर होगा इसलिए इस पदबंध का अनुवाद *ज़री का काम किया कैन्वास का बैग* कर दिया है।

मिथक किसी संस्कृति का हिस्सा होती हैं, जनता में प्रचलित मान्यताओं और धर्म से भी इसका विशेष संबंध होता है। जैसे– महाभारत, रामायण। इनका अनुवाद करना जितना कठिन है उतना ही आवश्यक है इनकी जानकारी होना। क्योंकि इनकी जानकारी के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो जाता है। नाटककार वाज़ेखो ने मूल नाटक में ग्रीक मिथक पर आधारित एक पेंटिंग का ज़िक्र किया है, जो इस नाटक के केंद्र में है। जिनका अनुवाद ज्यों-का-त्यों किया गया है और पाद-टिप्पणी में जिसे व्याख्यायित किया गया है। जैसे–

लास इलांदेरास (Las Hilanderas, पृ. 37)– प्रसिद्ध स्पानी दीएगो वेलास्केस द्वारा सन् 1675 में बनाई गई मशहूर पेंटिंग जो ग्रीक मिथक पर आधारित है। इसे परिशिष्ट में विस्तार से स्पष्ट किया गया है।

एल बूके फ़ानतास्मा (El Buque Fantasma, पृ. 39)– वाग्नेर द्वारा रचित बुनकरों का एक प्रसिद्ध गाना।

पालास आतेनेआ (Palas Atenea, पृ. 41) – ग्रीक संस्कृति में कला की देवी, जो लास इलांदेरास में चित्रित है।

आराक्ने (Aracne)– एक बुनकर जिसने पालास आतेनेआ को प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया था।

लास पारकास, लास मोइरास (Las Parcas, Las Moiras पृ. 48)– ग्रीक और रोमन संस्कृति में भाग्य की देवियाँ जिन्हें दोनों नामों से जाना जाता है। इन देवियों के बारे में नाटककार ने बताया है। इनके नाम के साथ ही इसे भाग्य की देवियाँ लिख जोड़ दिया गया है।

मूल पाठ में आने वाले प्रसिद्ध व्यक्तियों जैसे– ओरतेगा, कालदेरॉन, वाग्नेर, वेलास्केस आदि का संक्षिप्त विवरण पाद-टिप्पणी में दे दिया गया है।

संबंधों का अनुवाद हमेशा से ही कठिनाई का विषय रहा है क्योंकि एक समाज में होने वाले संबंधों का दूसरे समाज में समतुल्य या यथासंभव अनुवाद करना हमेशा सरल नहीं होता। चूँकि मूल पाठ में आए संबंध सरल हैं, इसलिए इनका समतुल्य लक्ष्य भाषा में मिल गया है। जैसे– Abuelo-दादा, Abuela-दादी, Padre-पापा, पिताजी, Madre-मम्मा।

3.1..2 भाषागत समस्याएँ

स्पानी और हिन्दी दोनों भाषाओं में भाषागत और व्याकरणिक विभिन्नता है। हिन्दी में जहाँ कम क्रिया भेद हैं वहीं स्पानी में काल के अनुसार अनेक क्रिया भेद होते हैं। इसके अतिरिक्त स्पानी भाषा में सूबखूनतीवो और आर्टिकल जैसे– उन, उना, ले, लास होते हैं, जो हिन्दी में नहीं होते। इस प्रकार इनका अनुवाद कठिन हो जाता है। स्पानी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करना जहाँ सरल होता है वहीं स्पानी से हिन्दी में अनुवाद करना अत्यधिक कठिन हो जाता है। क्योंकि स्पानी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करते समय शब्दों में कम फेरबदल करना पड़ता है। जैसे– Verbo–Verb, Transportación–Transportation, Ocación–Ocation, Articulo–Article, Objectivo–Objective, Tono–tone आदि।

स्पानी से हिन्दी में अनुवाद करते समय कुछ शब्दों का समतुल्य मिलने पर उन्हें हिन्दी में अनूदित किया गया है। जैसे– Camisa–कमीज़, Mesa–मेज़, Calcetines–जुराबें, La puert–दरवाज़ा, Tono–रंगत, Panteras–तेंदुआ, Busto–आवक्ष मूर्ति, Clara–सफ़ेदी, Mesita–छोटी मेज़, Rana–मेंढक, Cincero–राखदानी आदि।

प्रसंगों को ध्यान में रखते हुए कुछ स्पानी शब्दों के लिए प्रचलित अंग्रेज़ी शब्दों का हिन्दी में लिप्यंतरण कर दिया गया है। जैसे– Lampara de pie–स्टैडिंग लैम्प, Mueblo bar–काकॅटेल कैबिनेट, Pintura–पेंटिग, Bolso,Cartera–बैग, Cocina–किचन, Divan–सोफा, Famenista–फेमिनिस्ट, Tapiz–टेपस्ट्री, Profesor–प्रोफ़ेसर, La ducha escocesa–स्कॉटिश शावर, Vino–वाईन, Daltonico–कलरब्लाइंड, Tono-शेड, Falda–स्कर्ट, Tocadiscos–सी.डी. प्लेयर, Pantalon–पैंट।

इसी प्रकार, स्पानी समाज और सस्कृति की झलक अनूदित कृति में दिखायी दे इसलिए कुछ शब्दों और संज्ञाओं को हिन्दी में अनूदित करने के स्थान पर उनका हिन्दी में लिप्यंतरण कर दिया गया है। जैसे– Las Hilanderas–लास इलांदेरास, el buque

fantsama–एल बूके फ़ानतास्मा, El expolio–एल एक्सपोलीयो, Fabula de palas y arcane–फाबूला दे पालास इ आराक्ने, Señor–सेन्योर।

अनुवाद एक ऐसा कर्म है जिसे जितना माँजा जाए वह उतना ही बेहतर होता जाता है। किसी शब्द, वाक्यांश या वाक्य का अनुवाद करते समय अनुवादक के लिए जितनी निपुणता स्रोत और लक्ष्य भाषा में आवश्यक है, उतनी ही दोनों भाषाओं की कोशगत जानकारी। एक शब्द के अनेक पर्याय होते हैं। परन्तु प्रकरण एवं संदर्भ की सही जानकारी के बिना ग़लत शब्द का चुनाव करने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसलिए अनुवादक को सजग होकर कार्य करना पड़ता है प्रस्तुत शोध अध्येता ने प्रसंग का ध्यान रखते हुए मूल भाषा के शब्दों ओर वाक्यांशों के लिए लक्ष्य भाषा में सबसे सटीक शब्द और वाक्यांशों का चुनाव किया हैं जैसे– Payoso – अर्थात् ढोंगी, नाटकबाज़, मसख़रा, जोकर। संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त शब्दों में से *मसख़रे* शब्द का चुनाव किया गया है। क्योंकि मूल पाठ में जहाँ यह शब्द प्रयुक्त है वहाँ ब्राउलियो फ़ाबियो से मज़ाक कर रहा है इसलिए अन्य हिन्दी पर्यायों के स्थान पर मसखरा शब्द ही सटीक प्रतीत होता है।

स्पानी भाषा में cochino शब्द सुअर के लिए प्रयुक्त होता है। लेकिन संदर्भ को ध्यान में रखते हुए इसे *गंदे इंसान* अनूदित किया है।

नाटककार द्वारा कोष्ठक में दिए गए रंगमंच संकेतों का अनुवाद भी पूरी सावधानी के साथ किया गया है और उपयुक्त शब्दों और पदों को ही चुना गया है। जैसे :–

silencio– शांति, मौन, सन्नाटा, ख़ामोशी।

Largo silencio– ख़ासी चुप्पी, दीर्घ विराम, लम्बी चुप्पी, लम्बी ख़ामोशी, लम्बा विराम।

Con rencor– विद्वेष के साथ, जलन के साथ, ईर्ष्या के साथ।

उपर्युक्त पर्यायों में से silencio के लिए *मौन* शब्द, Largo silencio के लिए कुछ स्थानों पर *ख़ासी चुप्पी* ओर कुछ स्थानों पर *दीर्घ विराम* और Con rencor के लिए *जलन* शब्द का प्रयोग किया है।

इस प्रकार मूल पाठ के कुछ अंशों के लिए भी हिन्दी में संदर्भगत सटीक पर्याय ढूँढने का प्रयास किया है। यहाँ पर लक्ष्य भाषा की माँग के अनुसार कुछ छूट प्रस्तुत शोध अध्येता ने ली है। जैसे–Tranquilizste, madraza(पृ. 49) के लिए 'शांत हो जा सठियाई माँ' के स्थान पर *अरी सठियाई माँ, शांति रख* किया गया है।

Ya era hora de que te viese el pelo ! (पृ. 109)का हिन्दी अनुवाद 'अपने बालों को तो देखा होता' के स्थान पर *अपने बालों की सफ़ेदी तो देखी होती* किया गया है। इस प्रयोग से वाक्य में मुहावरे का प्रयोग भी हो गया है जो संदर्भ के अनुसार अधिक न्यायसंगत प्रतीत होता है।

Alejemonos de esta ignominia (पृ. 110)– का हिन्दी अनुवाद 'अपने आपको इस कलंक से दूर कर लेते है' के स्थान पर *हम इस कलंक से अपना पीछा छुड़ा लेते हैं,* किया गया है। इस प्रकार मुहावरे के प्रयोग से वाक्य की सुंदरता में वृद्धि हुई है और लक्ष्य पाठ में मूल पाठ के अनुवाद को कोई हानि भी नहीं पहुँची है।

कुछ वाक्याशों के अनुवाद में प्रकरण अनुसार परिवर्तन किया गया हैं जैसे– Fuerte como panteras – तेंदुए की तरह फुर्तीली, Una peseta – कानी-कौड़ी, no es cierto –यह झूठ है, los ricachones – कल के नवाब़, Opinión sincera –दो टूक फ़ैसला, Familia unida – भरा-पूरा परिवार इत्यादि।

मूल पाठ में कई स्थानों पर गालियों का प्रयोग किया गया है इसलिए यह निरंतर प्रयास रहता है कि लक्ष्य भाषा में उसके समतुल्य गाली का प्रयोग किया जाए। जैसे :–

Hijo de puta – इसका अंग्रेज़ी अनुवाद Bastard और son of bitch होगा लेकिन हिन्दी में इसके समतुल्य कई गाली हैं– हरामी, हरामज़ादा, अवैध संतान, सुअर का बच्चा, कुत्ते का पिल्ला। बताये गए पर्यायों में से *हरामज़ादा* शब्द का चुनाव किया गया है क्योंकि संदर्भ के अनुसार इस शब्द का चुनाव उपयुक्त प्रतीत होता है। अन्य गालियों का भी अनुवाद इसी तर्ज पर किया गया है। जैसे– malvada– बदमाश, perfecto imbecil– गधा, condenada bribona– कुतिया, कमीनी, Lagarta– लोमड़ी, Tramposo– कमीना।

मुहावरों का प्रयोग भाषा में स्वाभाविकता, प्रभविष्णुता और चमत्कार उत्पन्न कर पाठक को चमत्कृत करते है वहीं अनुवादक के लिए जी का जंजाल बन जाते हैं। मुहावरों का अनुवाद करते समय सर्वप्रथम प्रयास यह रहा है कि उसके समान लक्ष्य भाषा में मुहावरा मिल जाए अन्यथा स्रोत भाषा के मुहावरों का लक्ष्य भाषा में शब्दानुवाद किया गया है। जैसे–

भावानुवाद– No iba a ser una rana(पृ. 57)– मुझे उल्लू मत बनाओ।

No me ha dado ni frio ni calor(पृ. 73)– मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

Presiento que es otra cosa(पृ. 92)– मुझे भी किसी और चीज़ की बू आ रही हैं।

Claro como el agua(पृ. 95)– यह तो पानी की तरह साफ़ है।

Tu hija te ponga en cueros ante los demas(पृ.118)– तुम्हारी बेटी ने तुम्हें दुनिया के सामने नंगा कर दिया।

De la panza sale la danza(पृ. 76)– पेट भरने के बाद इंसान नाचने लगता है।

शब्दानुवाद– No me metas las narices en los ojos(पृ. 100)– अपनी नाक को मेरी आँखों में घुसाओ मत।

प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना होती है जो दूसरी भाषा से भिन्न होती है। इसलिए कई बार स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय ऐसे कई वाक्य और शब्द होते हैं जिनके लिए एक या कई शब्दों का प्रयोग ही उचित प्रतीत होता है। इसी तरह, मूल कृति का अनुवाद करते समय इस प्रकार के बदलाव निरंतर किए गए है। जैसे–

Muy freudiana estas tu –धोखेबाज़ !

De los tontos –उल्लूओं की !

Grocero –गधे कहीं के !

Hiena –लकड़बग्घी कहीं की !

स्रोत भाषा स्पानी से लक्ष्य भाषा हिन्दी अनुवाद करते समय कुछ कठिनाई शब्दों को लेकर भी कठिनाई का सामना करना पड़ा। कई स्थानों पर तो ये शब्द संदर्भ से इतने जुड़े हुए थे कि उनका संदर्भ के अनुसार अनुवाद करना अर्थ का अनर्थ कर सकता था। ऐसे में अथक परिश्रम और खोज के बाद इस प्रकार के शब्दों का अनुवाद संभव हो पाया है। जैसे– Psché। शब्द स्पानी भाषा का नहीं है क्योंकि स्पानी स्वरबहुल भाषा है जहाँ हर व्यंजन के साथ स्वर का प्रयोग किया जाता है। कई भाषाओं में खोज के बाद इतालवी भाषा में इस शब्द का अर्थ मिला मछली (Fish) जो संदर्भ के अनुसार ठीक नहीं बैठता। ऐसे समय में इस शब्द का अनुवाद संदर्भ को देखते हुए *हे मेरे भगवान* किया गया है।

Carnivalada स्पानी शब्द Carnival से ही बना है। परन्तु इसका कोशगत अर्थ न मिलना प्रस्तुत शोध अध्येता के लिए कठिनाई का कारण बन गया। ऐसे में इसका अनुवाद कार्निवाल ही किया गया।

Zorro यह शब्द एक ऐसे व्यक्ति का सूचक है जो बहुत बहादुर हो, ग़रीबों का मसीहा हो और दुश्मनों का नाश करने वाला हो लेकिन संदर्भ के अनुसार गास्पार और

ब्राउलियो के संदर्भ में इस शब्द का उपर्युक्त अनुवाद करना सही नहीं होगा। ऐसे में संदर्भ के अनुसार Zorro शब्द का अनुवाद सयाने किया गया है जो संदर्भानुसार सटीक है।

मूल पाठ एक नाटक है। नाटक में यह आवश्यक है नहीं कि पात्र अपनी बात को पूरा कहे। कई बार जब दो पात्र आपस में बातें करते रहते है तब एक पात्र की बात को दूसरा पात्र काट देता है ऐसे स्थान पर नाटककार ने '...' चिह्न का प्रयोग करता है। ऐसे ही कई स्थानों पर बात के दौरान ठहराव के लिए ',' का प्रयोग किया जाता है। ऐसी स्थिति में अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह दर्शक की अपेक्षाओं और रंगमंच की सीमाओं और विशेषताओं को ध्यान में रखकर ऐसे वाक्यों का अनुवाद और चिह्नों का प्रयोग करें। अनुवादक से अपेक्षित इन सीमाओं का ध्यान रखते हुए कुछ वाक्यों का हू-ब-हू अनुवाद करने का प्रयास किया गया है। जैसे–

Fabio. ¿De qué me hablas?...!Si no sabemos nada!...Ella no nos ha dicho ni una palabra...*(Exclama.)*¿Samuel Cosme?... Te escucho... *(Larga pausa.)* Pero ¿estaba ella con él?... No, no. Anoche vino a las ocho y media y no ha salido hasta esta mañana...Si,por supuesto... (Larga pausa.) Puedes Figurate cuánto te lo agradecemos. (पृ. 59)

फ़ाबियो : किस बारे में बात करनी है ?... नहीं हमें नहीं पता।... उसने हमसे एक शब्द भी नहीं कहा... (चिल्लाते हुए) सामुएल कोस्मे ?... हाँ, मैं सुन रहा हूँ *(लम्बी चुप्पी)* लेकिन वो उसके साथ थी ?...नहीं, नहीं। कल रात वह साढ़े आठ बजे आई थी और अभी तक बाहर नहीं निकली है... हाँ क्यों नहीं...*(लम्बी चुप्पी)* आप समझ सकते हैं कि इसके लिए हम आपके कितने शुक्रगुज़ार है।

Teresa. ¿ De... qué... hablas? (पृ. 106)

तेरेसा : तुम... क्या कह ... रही हो ?

Gaspar. !Si yo ya no bebo! Esta tarde, porque nos hemos encontrado con...,con...(पृ. 69)

गास्पार : लेकिन मैं नहीं पीऊँगा क्योंकि आज शाम, हम...हम...निसेतो से मि...ले...

3.1.3 शीर्षक का अनुवाद

प्रत्येक कृति को उसके शीर्षक से जाना जाता है। शीर्षक को पढ़कर भी कई बार पाठक कृति को पढ़ने के लिए लालायित होता है। इसलिए शीर्षक का अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह पाठक का ध्यान अपनी ओर खींच सकें। किसी कृति का अनुवाद उसके शीर्षक के बिना अधूरा है। शीर्षक का अनुवाद लक्ष्य भाषा में हुए अनुवाद को पूर्ण करने का काम करता हे। इसलिए शीर्षक का सही अनुवाद अत्यंत आवश्यक है। स्पानी नाटक 'दीआलोगो सेक्रेतो' के शीर्षक का अनुवाद देखने में जितना सरल प्रतीत होता है। वास्तव में यह उतना ही कठिन है। भावानुवाद की अपेक्षा शीर्षक का शब्दानुवाद यहा सटीक होगा। इस शीर्षक के कुछ शब्दानुवाद इस प्रकार हो सकते हैं– रहस्यपूर्ण संवाद, कूट संवाद, छिपी हुई बात, अनजानी बात, निजी वार्तालाप।

इन सभी पर्यायों में से गुप्त संवाद और कूट संवाद ही है जो मूल पाठ के अनुरूप एक सीमा तक सही लगते है। परन्तु समस्या गुप्त शब्द को लेकर है। गुप्त शब्द कुछ अश्लील और भद्दा प्रतीत होता है। लेकिन कूट शब्द में ऐसे किसी भाव की प्रतीति नहीं होती। नाटक की विषयवस्तु और पेंटिंग्स के बारे में दिए गए विवरण के आधार पर कूट शब्द ही अधिक सटीक लगता है क्योंकि पेंटिंग्स की भाषा कूट होती है। इसलिए प्रस्तावित अनुवाद की शीर्षक *कूट संवाद* ही अधिक उपयुक्त जानकर इसे प्रस्तुत शोध अध्येता द्वारा प्रस्तावित किया गया है।

उपसंहार

प्रस्तुत लघु शोध में स्पेनी नाटक *दीआलोगो सेक्रेतो* का हिन्दी अनुवाद किया गया है। जिसमें स्पेनी गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि में आधुनिक मध्यवर्ग का चित्रण किया गया है। तब हर ओर सत्ता का ही बोलबाला था। ऐसे समय में नाटक के नायक फ़ाबियो के माध्यम से स्पेनी शासन में फैली बुराइयों का पर्दाफ़ाश किया गया है। फ़ाबियो प्रतीक है तानाशाही का और आउरोरा प्रतीक है अन्याय का पुरज़ोर विरोध करने वाले युवावर्ग का, जो अपनी प्रेमी सामूएल कोस्मो की मौत का बदला लेने के लिए अपने पिता का वर्णांधता का पर्दाफाश करती है।

इस लघु शोध में तीन अध्याय है, जिनका ब्यौरा नीचे दिया गया है। इसके अतिरिक्त शोध से संबंधित भूमिका, उपसंहार और कुछ विशिष्ट पदों और शब्दों को परिशिष्ट के माध्यम से भी स्पष्ट किया गया है। यथासंभव परिशिष्ट में कुछ शब्दों को व्याख्यायित भी किया गया है।

पहले अध्याय में नाटक के लेखक आंतोनियो बूएरो वाज़खो का साहित्यिक योगदान और जीवन परिचय दिया गया है, जिसमें वाज़ेखो के प्रसिद्ध नाटकों का ब्यौरा दिया गया है। उनके नाटकों की मुख्य विषयवस्तु और नाटकों में प्रयुक्त प्रतीकों का उल्लेख किया गया है। साथ ही, नाटक *दीआलोगो सेक्रेतो* की कथावस्तु और समस्या पर विचार किया गया है। इसमें नाटक में उठाई गई मुख्य समस्याओ के साथ अन्य समस्याओं का भी उल्लेख किया गया है। वाज़ेखो ने नाटकों में जिन प्रतीकों का प्रयोग किया है, उन पर भी विचार किया गया है।

दूसरे अध्याय में मूल नाटक *दीआलोगो सेक्रेतो* का हिन्दी अनुवाद 'कूट संवाद' शीर्षक से प्रस्तुत शोध अध्येता द्वारा प्रस्तावित है।

तीसरे अध्याय में मूल नाटक का हिन्दी अनुवाद करने में आने वाली समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। अनुवाद करने समय अनुवाद के 'समतुल्यता सिद्धांत' का विशेष ध्यान रखा गया है। जिसमें स्रोत भाषा के समतुल्य मुहावरों, शैली, प्रतीक, रूपक आदि को लक्ष्य भाषा में रखा गया है। अनूदित नाटक में कुछ स्पानी भाषा के शब्दों का ज्यों-का-त्यों रखा गया है। वहीं कुछ का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया गया है और कुछ का हिन्दी में। मूल नामों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। मुहावरों का मूलतः भावानुवाद और अंशतः शब्दानुवाद किया गया है। कुछ मूल भाषा के शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों में सटीक पाठगत को चुनने का निरंतर प्रयास इस शोध के दौरान रहा है। मिथकीय, सामाजिक और सांस्कृतिक शब्दों, प्रसिद्ध व्यक्तियों और पेंटिंग्स आदि को जहाँ तक संभव हो, पाद-टिप्पणी द्वारा कुछ शब्दों में व्याख्यायित किया गया है। चूँकि यह मूल कृति एक नाटक है, इसीलिए रंगमंच की सीमाओं और अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए संवादों और रंग-संकेतों के आधार पर अनूदित कृति की भाषा को यथासंभव प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है।

इस शोध के दौरान शोध अध्येता का निरंतर यह प्रयास रहा है कि स्पानी मूल से लक्ष्य भाषा हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत करते हुए नाटक विधा के आधार पर संवाद, रचनात्मक स्वर और स्वरूप की जहाँ तक संभव हो, रक्षा की जाए। इसीलिए कुछ संवादों और संदर्भों और विशेषकर वाक्यांशों का प्रसंगों और पात्रों और रंगमंच की अपेक्षाओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए कई-कई बार अनूदित कर अंतिम रूप दिया गया है।

परिशिष्ट

(मूल पाठ से)

खोसे ओरतेगा इ गासेत (1885-1955 तक)(पृ.48)–प्रसिद्ध स्पेनी निबंधकर और दार्शनिक। जो बासवीं सदी के मध्य में लिख रहे थे। इनकी कुछ प्रसिद्ध पुस्तकें है–*एल एस्पेक्तादोर* (El El Espectador, 1916-1934) आठ भागों में, *एसपीरीतू दे ला लेत्रा* (Espíritu de la letra,1927), कांट (Kant,1929–31), *के एस फीलोसोफीया ?* (¿Qué es filosofía?,1957) इत्यादि। ओरतेगा ने वेलास्केस की पेंटिंग लास इलांदेरास पर भी विचार किया है।

एल बूके फ़ानतास्मा (El Buque Fantasma पृ. 39)–रिचर्ड वाग्नेर द्वारा लिखित प्रसिद्ध गीत जिसे *ओलांदेस ऐर्रान्ते की कहानी* के नाम से भी जाना जाता है। इस गीत में वाग्नेर ने शाप और इच्छा-मृत्यु का वर्णन किया है।

वाग्नेर (पृ. 39)– इनका पूरा नाम रिचर्ड वाग्नेर (Richard Wagner) है। ये अपने समय के प्रसिद्ध गीतकार, नाटककार और बुद्धिजीवी रहे हैं।

लास इलांदेरास (पृ. 37)– स्पानी राजा फीलिप के राजदरबारी पेंटर दीएगो वेलास्केस द्वारा सन् 1675 में बनाई गई मशहूर पेंटिंग। यह पेंटिंग दोन पेद्रो दे आरके के लिए बनाई गई थी। इसके सृजन काल को लेकर लोगों में मतभेद हैं। इस पेंटिंग में वेलास्केस ने ओवीड की प्रसिद्व ग्रीक मिथक जिसमें कला की देवी पालास आतेनेआ द्धारा बुनकर आराक्ने को मकड़ी बनाने की कहानी को चित्रित किया है।

वेलास्केस (1599-1660) (पृ. 37)– स्पानी राजा फीलिप के राजदरबारी पेंटर दीएगो रोद्रीगेस दे सिल्वा इ वेलास्केस (Diego Rodriguez de Silva y Velázquez) का जन्म सेवील्ये (Seville) में हुआ। फ्रांसीस्को पाचेको (Francisco Pacheco, 1564-1644) जिनका राजपरिवार के लोगों से खासा संबंध था, के माध्यम से ही इनकी स्पानी राजपरिवार के लोगों से जान पहचान हुई और इन्होंने राजदाबार के अनेक व्यक्तियों की पेंटिंग भी

बनायी। इनकी कुछ प्रसिद्ध पेंटिग्स के नाम इस प्रकार हैं– 'ओल्ड वोमन फ्राइंग एगस' (Old Woman Frying Eggs, 1618), 'थ्री मेन एट टेबल'(Three Men at Table, 1618), 'क्राइस्ट इन द हाउस ऑफ मारथा' (Christ in the House of Martha and Mary, 1618) आदि।

सान वीतो नाच (पृ. 109)–यह एक प्रकार का तंत्रिका रोग है जिसमें हाथ और पैरों की अनैच्छिक गतिविधि होती है। चिकित्सा के क्षेत्र में इसे 'सिंडेनहयाम'स कोरिया' नाम से जाना जाता है। इसे 'सेंट वीट्स नाच' भी कहा जाता है क्योंकि फ्रांसीसी संत विट्स इस रोग से ग्रसित लोगों के संरक्षक थे।

काल्देरोन (पृ. 48)– स्पानी साहित्य के शेक्सपीयर कहे जाने वाले पेद्रो काल्देरोन दे ला बार्का (Pedro Calderón de la barca, 17 जनवरी, 1600 ई.) का जन्म स्पेन के माद्रीद शहर में हुआ। 'एल आल्काल्दे दे सालामेआ' (El Alcalde de Zalamea), 'आमोर, ओनोर इ पोदेर' (Amor,honor y poder), 'एल सीतीओ दे ब्रेदो' (El Citio de Bredo) जैसे नाटकों की रचना कर कालदेरान ने स्पानी समाज का आईना पेश किया है।

लास मोइरास, लास पारकास(पृ. 48)– ग्रीक संस्कृति में भाग्य तीन की देवियाँ। जिसे रोमन संस्कृति में लास पारकास कहा जाता है। ये तीनों देवियाँ– Cloto(clotho), Láquesis(Lachesis) , Átropas (Atropus) ग्रीक देवी-देवता Zeus और Temis की बेटियाँ हैं। जो क्रमशः जीवन रूपी धागे को बुनती है, निर्दिष्ट करती है और उधेड़ती है।

एल एक्सपोलीओ देल ग्रेको(पृ. 80)– 16वीं सदी के मशहूर इतालवी पेंटर दोमीनीकोस थेओतोकोपुलोस (Domenikos Theotokopoulos, 1541-1614) जिसे एल ग्रेको के नाम से भी जाना जाता है। एल एक्सपोलीयो देल ग्रेको (El Expolio del Greco) की एक बेहतरीन कला कृति है। जिसकी रचना सन् 1577–1579 के बीच में की गई। यह कलाकृति स्पेन के तोलेदो शहर सांता मारीया कैथड्रल में सुरक्षित है। 'दि अनूनसिएशन' (The Annunciation, 1569), 'ला पिएदाद' (La Piedad,1572), 'अडोरेशन ऑफ दि नेम ऑफ़ क्रिस्ट'(Adoration of the Name of Christ, 1578), 'दि त्रिनिटि' (The Trinity, 1579), 'सान सेब्सशियन' (San Sebastian, 1580) आदि ग्रेको की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियाँ है।

आधार-ग्रन्थ

Vallejo, A. Buero: Diálogo Secreto, Seleccciones Austrial, Espasa Calpe.S.A. Madrid,1985

संदर्भ-ग्रन्थ

Spanish Books

Jardiel, Enrique Gallud: Studies on Spanish theatre, B.K Publishaing Corporation.Delhi, 1993

Ed. Gies, David T. : The Cambridge History of Spanish Literature. Cambridge University Press, Cambridge United Kingdom, 2004

Ramón, Francisco Ruiz: Historia del Teatro Español Siglo XX . Madrid; Cátedra, 1975

Vallejo, A. Buero: La Doble Historia del Doctor Valmy- Mito. Seleccciones Austrial, Espasa Calpe.S.A. Madrid, 1984

Vallejo, A. Buero: Historia De Una Escalera- Las Meminas, Intro.- Ricardo Domenech, Espasa Calpe, S.A. Madrid, 1987

Mundi, Francisco: El Teatro de Guerra Civil. Pedret Promociones y Publicaciónes Universitarias, S.A. Marqués de Campo Sagrsdo, Barcelona, 1987

Oliva, Cesar: Hisroria de la Literatura Española Actual III.El Teatro desde 1936. Editorial Alhambra,S.A, 28001 Madrid, Claudio Coello, 76, Spain

Domenech, Ricardo: El Teatro de Buero Vallejo. Biblioteca Románica Hispánica, Editorial Gredos, Madrid, 1979

Gourge, E. Bagué and Geysse A.: Los Autores Españoles –G. Harrap & Company Ltd. London

English Books

Foster, David William:Spanish Literature: A Collection of Essays, a Garland Series, New York, 2000

Ed. Verma, S.K.; Sahai, R.N.(2003,2007), 'Oxford English-Hindi Dictionary', Oxford University Press.

Gentzler, Edwin (1993), Contemporary Translation Theories, Published by Routledge

Nida, Eugene A.; Taber, Charles R. (1982), The Theory and Practice of Translation, Published by The United Bible of Societies.

Tytler, Alexandar Fraser (1813), Essays on the Principles of Translation (Third Edition), Printed by Neil & Co.

Savory, Theodore (1968), The Art of Translation, Jonathan Cape, Thirty Bedford Square London.

Ed. Bassnett, Susan; Trivedi Harish (1999), Post Colonial Translation (theory and Practice), Published by Routledge.

Ed. Garesh, Ravinder; Goswami, Krishna Kumar (2007), Translation and Interpreting, Orient Longman

Hindi Books

सहगल, डॉ नगीन चंद, काव्यानुवाद : सिद्धांत एवं समस्याएँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,1992।

शुक्ल, डॉ. उमा (1994), भारतीय नारी: अस्मिता की पहचान, लोकप्रकाशन, इलाहाबाद,

अनुवाद, भारतीय अनुवाद परिषद जनवरी- मार्च 2011,, अंक : 146

गोस्वामी, डा. कृष्ण कुमार (2008), अनुवाद विज्ञान की भूमिका, राजकमल प्रकाशन।

(सं.) डॉ. नगेन्द्र (1993), अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

पाण्डेय, डॉ. पृथ्वीनाथ (2008), यूनीक प्रामाणिक सामान्य हिन्दी, यूनीक पब्लिकेशन दिल्ली।

Dictionary

Bulcke, Fr. Camil (2008), 'An Engilsh-Hindi Dictionary', Cathelic Press, Ranchi.

Bahari, Dr. Hardev (2009), 'Learners Hindi- English Dictionary', Rajpal.

Compiled by. Pathak, Prof. R.C. (2005), 'Standard Illustrated Dictionary Hindi-English', Bhargav Book Depot.

Turtle English-Hindi Dictionary

Pocket Oxford Dictionary, Oxford University Press.

Oxford Spanish-English Dictionary, Oxford University Press.

Collins Spanish- English, Spanish-English Dictionary

Diccionario, Hindi-Español, Español- Hindi – Dr. Enrique Gallud Jardiel, Think Publishers, New Delhi 1990

Ed. Verma, S.K.; Sahai, R.N.(2003,2007), 'Oxford English-Hindi Dictionary', Oxford University Press.

हिन्दी-स्पेनी कोश, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, (शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली

Website

http://www.answers.com/topic/monte

http://www.thefreedictionary.com/pita

www.wordreference.com

http://www.spainselecta.com/el_greco.html

http://blogs.ua.es/pinturaespanoladelsiglodeoro/2011/01/15/el-greco/

http://www.bing.com/search?q=1st-art-gallery+group&form=HPNTDF&pc=HPNTDF&src=IE-SearchBox